हिंदुस्तान

उर्दू शायरी के हवाले से

उमैर मंज़र

अनुवादकः मज़हरुद्दीन ख़ान

प्रकाशक

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन

डी-319, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

©
खुसरो फ़ाउण्डेशन

नाम किताब	:	हिंदुस्तान उर्दू शायरी के हवाले से
संकलन	:	उमैर मंज़र
अनुवादक	:	मज़हरुद्दीन .खान
पृष्ठ	:	180
प्रकाशन	:	2023
मूल्य	:	200 रूपये
प्रिंटर	:	अल्फ़ा ऑफ़सेट प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली
प्रकाशक		**खुसरो फ़ाउण्डेशन** डी-319, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

Hindustan Urdu Shayri Ke Hawale Se
by : **Omair Manzar**
Translated by : **Mazharuddin Khan**

मिलने का पता

FBD
باہتمام: ناصر خان
فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT(Pvt.)Ltd.
Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2
Ph : 011-23289786, 011-23289159, 011-23278954, 011-23279998
NASIR KHAN : +91-9250963868 Mob : +919560870828
E-mail : faridbookcorner@gmail.com Whatsapp : +91-9717968328

मोहतरमा कामना प्रसाद

(जश्न-ए-बहार ट्रस्ट की संस्थापक एवं प्रशासक)

एवं

कुंवर रंजीत चौहान

(जश्न-ए-अदब के संस्थापक)

के नाम समर्पित

विषय-क्रम

क्र. सं.	नज़्म	शायर	पृष्ठ नंबर
1	आमुख	प्रो. अख़्तरुल वासे	1
2	प्राक्कथन	उमैर मंज़र	3
3	तराना-ए-हिंदी	डॉ. मुहम्मद इक़बाल	23
4	ख़ाक-ए-हिंद	ब्रिज नारायण चकबस्त	25
5	वतन का राग	अफ़सर मेरठी	29
6	ऐ मादर-ए-हिंद	फ़िराक़ गोरखपुरी	31
7	ऐ वतन	गोपाल मित्तल	38
8	नज़्र-ए-वतन	सिकंदर अली वज्द	40
9	ये है मेरा हिंदुस्तान	ज़ुबैर रिज़्वी	42
10	आर्यों की पहली आमद हिंदुस्तान में	वहीदुद्दीन सलीम पानीपती	45
11	हिमाला	अल्लामा इक़बाल	47
12	कोह-ए-मसूरी	साग़र निज़ामी	50
13	गंगा के चिराग़	आनंद नारायण मुल्ला	52
14	जमुना	साग़र निज़ामी	55
15	संगम	अफ़री मेरठी	58
16	ऐ दरिया-ए-चिनाब	जगन्नाथ आज़ाद	61
17	दो मंज़र	मीर हसन	62
18	बहार की एक दोपहर	जोश मलीहाबादी	64
19	चरवाहे की बंसी	अख़्तर शीरानी	66
20	धान के खेत	फ़य्याजुद्दीन अहमद फ़य्याज़	67
21	सुब्ह की बहार	उफ़ुक़ लखनवी	69
22	रात	मोलवी मुहम्मद इस्माईल मेरठी	71
23	तुलूअ-ए-आफ़ताब	मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब	73
24	शाम	निदा फ़ाज़ली	74

25	मौसम-ए-बहार	मिर्ज़ा मुहम्मद रफ़ी सौदा	75
26	मौसमों का गीत	अली सरदार जाफ़री	77
27	बरसात की बहारें	नज़ीर अकबराबादी	87
28	बरखा रुत	अल्ताफ़ हुसैन हाली	104
29	जाड़े की बहारें	नज़ीर अकबराबादी	107
30	शब-ए-सरमा	मोलवी मुहम्मद हुसैन आज़ाद	109
31	गर्मी की शिद्दत	मीर अनीस	111
32	गर्मी (बैसाख और जेठ)	सैयद अब्दुल मजीद शम्स	112
33	फागुन	सैयद अब्दुल मजीद शम्स	115
34	बयान-ए-होली	मीर तक़ी मीर	119
35	होली की बहारें	नज़ीर अकबराबादी	121
36	बसंत और होली की बहारें	उफ़ुक़ लखनवी	123
37	बसंत	अमानत लखनवी	125
38	राखी	नज़ीर अकबराबादी	126
39	दिवाली का सामान	नज़ीर अकबराबादी	128
40	ईद मीलादुन्नबी	हफ़ीज़ जालंधरी	130
41	ईद का चाँद देखकर	अख़्तर शीरानी	134
42	ईद-उल-फ़ित्र	नज़ीर अकबराबादी	136
43	फूल वालों की सैर	गोपीनाथ अमन देहलवी	138
44	अजंता	सिकंदर अली वज्द	140
45	ऐलोरा	सिकंदर अली वज्द	145
46	जामा मस्जिद देहली	जगन्नाथ आज़ाद	147
47	ताजमहल	सीमाब अकबराबादी	149
48	हज़रत मुहम्मद सल्ल.	दर्शन सिंह दुग्गल	151
49	राम	अल्लामा इक़बाल	153
50	गौतम बुद्ध	साग़र निज़ामी	154
51	भाकड़ा नंगल	जगन्नाथ आज़ाद	156
52	महावीर स्वामी	उन्वान चिश्ती	158

53	निज़ामुद्दीन औलिया रह.	डॉ. मुहम्मद इक़बाल	160
54	गुरू नानक	नज़ीर अकबराबादी	161
55	तस्वीर-ए-रहमत	तिलोक चंद महरूम	163
56	आवाज़-ए-हक़	दर्शन सिंह दुग्गल	165
ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन: एक नई पहल			167

आमुख

हिंदुस्तान एक धर्मनिरपेक्ष और सांस्कृतिक बहुलता वाला देश है। इसकी सदियों पुरानी परंपरा है और हम सभी इसे बचपन से देखते चले आए हैं। हमें इस बात पर गर्व रहा है कि हम एक ऐसे देश में रहते और बसते हैं जहां के लोग एक मुद्दत से एक दूसरे के साथ मिलकर रहते-सहते आए हैं और इसे अपने लिए गर्व समझते हैं। सामाजिक तौर पर इसका इज़्हार विभिन्न तरीक़ों से होता रहा है और यही हिंदुस्तानी समाज का एक अभिन्न अंग भी है।

हिंदुस्तानी समाज बंधुत्व और व्यापक सोच के उज्ज्वल इतिहास का सूचक है। जिस सम्मान और भक्ति के साथ विभिन्न धर्मों की परंपराओं और उनके महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को याद किया जाता है और उनके लिए जिस मोहब्बत का इज़्हार होता है वह भी उल्लेखनीय है। मोहब्बत और सद्भाव की यही सोच जब उर्दू शायरी में ढलती है तो उसे देशभक्ति की एक देशभक्ति की एक व्यापक अवधारणा का आकार देता है। उर्दू शायरी में देशप्रेम और देशवासियों से भाईचारा और सद्भाव की एक गहरी भावना देखने को मिलती है। उर्दू ग़ज़ल भी इस भावना से रहित नहीं है। हालाँकि, यह अनुभव नज़्मों (कविताओं) को अधिक रास आया और इसीलिए उन कवियों की एक बड़ी सूची है जिन्होंने भारत की बहुलवादी संस्कृति और उसकी विभिन्न अभिव्यक्तियों को शायरी का हिस्सा बनाया। उर्दू शायरी की इसे विशेषता ही कही जाएगी कि इसमें मोहब्बत व एकता और भाईचारे व सहनशीलता की अनगिनत भावनाएँ समाहित हैं।

उर्दू शायरी के इतिहास पर नज़र रखने वालों को पता है कि कुछ कवि सिर्फ़ इसी संदर्भ से जाने गए और उनकी यही पहचान है कि वे मानवता के प्रति अपने जुनून और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को क़ायम रखने के अपने खुले अंदाज़-ए-बयान के लिए जाने जाते हैं। इस संदर्भ में यदि दक्कन से कुली कुतुब शाह का नाम लिया जाता है

तो उत्तर भारत से बेमिसाल शायर नज़ीर अकबराबादी को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। इसके बाद तो एक पूरी श्रृंखला है। इक़बाल और हाली इसमें एक अहम पड़ाव के रूप में जाने और पहचाने जाते हैं जबकि आनंद नारायण मुल्ला और फ़िराक़ गोरखपुरी का उल्लेख किए बिना इसे पूरा नहीं किया जा सकता है। इसलिए कल भी इस भावना की सराहना की गई और आज भी इसे नकारा नहीं जा सकता। यह किसी भी बहुलवादी समाज के लिए यह बहुत ज़रूरी है और इसीलिए हिंदुस्तान ने पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल क़ायम की है। न केवल अपने दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि अपने साहित्य और शायरी से उन्होंने बताया कि बहुलवादी समाज की वास्तविक संस्कृति क्या है।

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन इस मायने में उल्लेखनीय है कि उसने इस भावना और रवैये को इतिहास की तहों से बाहर निकाल कर एक बार फिर सामने लाने का सराहनीय काम किया है और आज शायद इसकी अत्यधिक ज़रूरत भी है।

इस किताब के लेखक जनाब उमैर मंज़र ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के उर्दू विभाग से डॉक्ट्रेट की डिग्री हासिल की है। शायरी का अध्ययन उनकी रुचि का विशेष क्षेत्र है। राजेंद्र मनचंदा बानी जैसे प्रमुख आधुनिक ग़ज़ल के शायर पर उनके मोनोग्राफ को खूब सराहना मिली है। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। उनके साहित्यिक और शोध के जुनून के कारण उनके लेखन को विश्वसनीयता मिल चुकी है। वर्तमान में वे मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, लखनऊ कैम्पस के उर्दू विभाग से जुड़े हुए हैं। इसमें कोई अचरज की बात नहीं कि लखनऊ के साहित्यिक परिदृश्य में उनका नाम प्रमुखता से शामिल है। अभी पिछले साल ही लखनऊ के मशहूर फिक्शन राइटर खान महबूब तरज़ी पर उनके शोध कार्य को काफ़ी सराहा गया। जिस भावना से यह पुस्तक खुसरो फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रस्तुत की गई है, उम्मीद है इसे पसंद किया जाएगा।

प्रो. अख़्तरुल वासे
चेयरमैन
ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन, नई दिल्ली

प्राक्कथन

हिंदुस्तान भाषा, धर्म, रंग, जाति, मौसम और स्वभाव की दृष्टि से बहुरंगी और बहुमुखी देश है। मेरे ख़्याल में यह बात केवल और केवल हिंदुस्तान के बारे में ही सच मालूम होती है क्योंकि यहां अनेकता में एकता और अनेकता में एकता का रंग दिखाई देता है। यहां की बोलियों और भाषाओं में उर्दू का प्रमुख स्थान प्राप्त है। इसका कारण इस भाषा की वह पूँजी है जिसमें यहाँ की मिट्टी और महक को उसी रंगारंगी के साथ प्रस्तुत किया गया है जो यहाँ का मिज़ाज और रंग है।

उर्दू साहित्य का जनमानस और उसकी विविधता काबिले तारीफ़ रही है। इस भाषा के साहित्य में जो गहराई है वह अत्यंत आकर्षक है। यह स्पष्ट होना चाहिए कि उर्दू भाषा का कोई बुनियादी इलाक़ा नहीं है और यह किसी विशेष धर्म, रंग और नस्ल तक ही सीमित नहीं है लेकिन यह कहना अधिक उचित होगा कि यह भाषा इतिहास के विभिन्न कालखंडों में भारत के विभिन्न रंगों और नस्लों का प्रतिनिधित्व करती रही है, जिसके उदाहरण इस भाषा के साहित्य से प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विशेष रूप से उर्दू ज़बान में की गई शायरी महान और सर्वव्यापी है। उर्दू भाषा में सोच-विचार की जो महान पूँजी है उसका एक कारण यह भी है कि यह भाषा एक प्रकार के सोच रखने वालों की कभी नहीं रही। शायद इसी वजह से सामान्य परिस्थितियों में उर्दू शायरी की महानता और उसके बहुरंगी होने का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। हिंदुस्तानी संस्कृति के विभिन्न रंगों का एक ख़ूबसूरत इज़्हार हम उर्दू शायरी में करते हैं। इस देश के सांस्कृतिक परिदृश्य का ऐसा क्षेत्र है जिसे हम उर्दू शायरी और उसके साहित्य से परे रख सकते हैं। यह कहना शायद सही हो सकता है कि उर्दू शायरी ने सभ्यता और संस्कृति का एक अलग रूप बनाया है, जो बहुत ही आकर्षक और ख़ूबसूरत है। उर्दू शायरी और साहित्य की सांस्कृतिक विविधता का मूलमंत्र ही इंसान दोस्ती और राष्ट्रीय एकता है। इस रंगा-रंगी को चाहे जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाए वह आकर्षक और ख़ूबसूरत ही नज़र आएगा और उस पर उर्दू ज़बान से मोहब्बत करने वाले जितना भी गर्व करें कम है।

उर्दू एक आधुनिक इंडो-आर्यन भाषा है। संस्कृत और हिंदी भी इंडो-आर्यन भाषा समूह से संबंधित हैं। ये सभी भाषाएँ इसी देश में जन्मीं और इतिहास के विभिन्न कालखंडों में विकसित हुईं। प्राचीन इंडो-आर्यन काल में ही संस्कृत भाषा का विकास और उसकी तरक़्क़ी हुई जिसका श्रेय आर्यों को जाता है। उसके बाद प्राकृत और अपभ्रंशो का विकास हुआ, और अंत में पश्चिमी हिंदी की बोलियों का बोल-बाला शुरू हुआ। यहीं से आधुनिक इंडो-आर्यन काल शुरू होता है। 1193 को उर्दू का शुरुआती बिंदु कहा जाता है और अगले दो सौ साल (1200-1400) को उर्दू का प्रारंभिक काल कहा जाता है। आधुनिक इंडो-आर्यन भाषा मुख्य रूप से इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार से संबंधित है। ज्ञात रहे कि भाषाओं का यह वह परिवार है जिसका संबंध हिंद-ईरानी से होता हुआ हिंद-यूरोपीय तक पहुँचता है। यह भारतीय परंपरा की एक उज्ज्वल निरंतरता है जिसने विभिन्न युगों में भारतीयता को मज़बूत किया और एक ऐसे भारत का नक़्शा प्रस्तुत किया जिसमें सभी के लिए गुंजाइश और लगाव का सामान हो। द्रविड़, आर्य और वैदिक काल के शानदार इतिहास का समय भी इसका हिस्सा है जिसने एकता और राष्ट्रवाद की परंपरा को मज़बूत किया। राष्ट्रीय सभ्यता और संस्कृति की जो अवधारणा इन दिनों हमारे सामने है, स्पष्ट है कि वह आर्यों के समय में नहीं थी, लेकिन इसी युग ने हमें सामाजिक जीवन और संस्कृति की चेतना दी। यह सामूहिक भावना का वस्तुनिष्ठ रूप है जो समाज के दृश्य को निर्धारित करता है। इसके विभिन्न रूप हमें इतिहास के पन्नों में दिखाई देते हैं। प्रो. सय्यद एहतेशाम हुसैन ने अपनी पुस्तक 'एतबार-ए-नज़र' में द्रविड़ सभ्यता के अध्ययन को भाषाई दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण बताया है और लिखते हैं कि 'भारत की लगभग एक तिहाई आबादी द्रविड़ भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर रही है।' उन्होंने गैर-आर्य भाषाओं को देश की साँझी-संस्कृति की महान विरासत घोषित किया है। एहतेशाम हुसैन का यह विचार इस बात को और भी स्पष्ट करता है कि यहाँ की साँझी-संस्कृति की परंपरा कितनी पुरानी है। इस संदर्भ में प्रो. सय्यद मुजावर हुसैन का यह उद्धरण अत्यंत प्रासंगिक हैः

> "भारत में राष्ट्रीय एकता की चेतना दो प्रकार से प्रकट हुई है, एक की प्रकृति राजनीतिक रही है और दूसरी की बौद्धिक। बौद्धिक स्तर पर राष्ट्रीय चेतना ने एकता को जन्म दिया और जब राजनीतिक एकता बिखरने लगी तो बौद्धिक चेतना ने ही उसे एक

धागे में बाँधने का प्रयास किया। आर्यों के आगमन से द्रविड़ सभ्यता बिखर गई, लेकिन बौद्धिक आधार ने इसे वैदिक सभ्यता के रूप में एक आकार दे दिया। राजनीतिक और राष्ट्रीय एकता और भावनात्मक सद्भाव भारत की पहचान है।''

प्रो. मुजावर हुसैन ने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है कि जब भी ''बहुरूपता के बजाय एकरूपता का प्रयास किया गया, तो राजनीतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई।'' इसलिए यहाँ एकरूपता वाली राष्ट्रीयता की कोई भी अवधारणा कभी कामयाब नहीं हो सकी। यही वह चीज़ हो जो अखंड भारत का आधार है। इससे सामान्य स्थिति को समझा जा सकता है। साथ ही उर्दू शायरी की मूल प्रकृति का भी अंदाज़ा लगाया जा सकता है क्योंकि यही कड़ियाँ उर्दू के विकास और स्थायित्व का कारण रही हैं।

उर्दू भाषा को पहले हिन्दवी और रेख़्ता के नाम से जाना जाता था। मसऊद साद सलमान उसी दौर के एक अहम शायर हैं जो अपनी फ़ारसी शायरी के लिए मशहूर हैं मगर मुहम्मद औफ़ी की किताब से पता चलता है कि उनकी हिन्दवी शायरी भी थी लेकिन वह अब तक उपलब्ध नहीं हो सकी है। उस समय फ़ारसी भाषा का चलन आम था और शायर इसी में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते थे। मसऊद सलमान अपनी हिंदवी शायरी को उस तरह सरक्षित नहीं रख सके जैसा कि उन्हें रखना चाहिए था। इसीलिए उनकी हिंदवी शायरी मौजूद नहीं है।

अमीर ख़ुसरो की शायरी भारत की महानता और एकता की अभिव्यक्ति से भरी पड़ी है। उनकी वह शायरी जो सभी लोगों में मशहूर है उसके बारे में लागों की अलग-अलग राय हो सकती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी शायरी एक ऐसे भारत को पेश कर रही है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी पहचान के साथ जो उसका दिल चाहे वह करने को स्वतंत्र है। अपने धर्म के प्रति प्रेम और दूसरों की धार्मिक मान्यताओं और मूल्यों के प्रति सम्मान उनका मुख्य बिंदु है। उनकी शायरी में भारत की ऐसी ही व्यापक और बहुरंगी तस्वीर मिलती है। उनके जैसी व्यापक सोच और धार्मिक सहिष्णुता बहुत कम देखने को मिलती है। ख़ुसरो की व्याख्या के दौरान कुछ आलोचकों का मानना है कि वह प्रसिद्ध फ़ारसी कवि के उदाहरण थे।

दर कफ़े-जामे-शरीअत दर कफ़े-संदाने-इश्क़
हर हवस-नाके नदांद जाम-ओ-संदाँ बाख़्तन

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान ने अमीर ख़ुसरो को देशभक्ति के राजकुमार कहलाने के योग्य माना है। उनका मानना है किः

> “उनका (अमीर ख़ुसरो) जीवन सभी देशभक्तों के लिए एक संदेश है कि अपने देशवासियों का दिल जीतने के लिए धार्मिक विश्वास, आध्यात्मिकता और व्यक्तिगत विचार एक समान होना आवश्यक नहीं हैं, बल्कि सच्ची भावना के साथ सहिष्णुता, उदारता, दिलदारी, सद्भाव, मेल-मिलाप, आपसी समझ एवं एकता की ज़रूरत है।”
>
> (हिंदुस्तान अमीर ख़ुसरो की नज़र में, सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान (संकलित) पृष्ठ 2, शिबली एकेडमी, आजमगढ़ 1966)

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान ने अपनी किताब ‘हिंदुस्तान अमीर ख़ुसरो की नज़र में’ के प्राक्कथन का समापन जिन पंक्तियों पर किया है उससे अमीर ख़ुसरो और इस सांस्कृतिक आख्यान को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उर्दू भाषा सदियों पुरानी परंपरा को कायम रखे हुए है। सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान लिखते हैंः

> “उनके जीवन का संदेश यह है कि धर्म-प्रेम और देश-प्रेम परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं, बल्कि शहादत धर्म-प्रेम और देश-प्रेम भी हो सकता है।”

अमीर ख़ुसरो की शायरी के कई संदर्भ हैं जिनमें शैक्षिक और बौद्धिक के अलावा उनका वह सार्वजनिक चेहरा भी है जिसे आज तक याद किया जाता है। शायद यही कारण है कि अमीर ख़ुसरो को भारत की साझी सभ्यता और संस्कृति के सबसे प्रमुख प्रतीक के रूप में जाना जाता है, और उन्हें इस हवाले से भी याद किया जाता है। उनकी शायरी में रची बसी भारत की मिट्टी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उर्दू भाषा के स्वभाव में किस तरह के तत्व हैं और प्राचीन काल से ही यह न केवल संचार का साधन रहा है बल्कि इसे एक सांझी-संस्कृति के रूप में भी देखा और समझा गया है।

उर्दू भाषा हिंदुस्तान के स्वभाव में शामिल है। यह धरती सूफ़ियों, ऋषियों, मुनियों और संतों का निवास स्थान रही है जिन्होंने इस भूमि को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, बल्कि यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा कि दुनिया के नक्शे पर इस देश की एक अलग पहचान स्थापित करने में इन लोगों ने

अहम भूमिका निभाई। बाबा फ़रीदगंज शक्कर, सोहन सुख दीवाना, बहाउद्दीन बाजन आदि हमारी साझी विरासत हैं। मानवता के संबंध में उनका दर्जा उच्च था और वे जीवन भर उसी के लिए काम करते रहे। उनकी शायरी वास्तव में उस प्रारंभिक छाप की हैसियत रखती है जिससे इस शैली के तत्वों का निर्माण हुआ और यह आगे बढ़ता रहा। शेख बू अली क़लंदर का कथन हैः

सजन सकारे जाएँगे और नैन मरेंगे रोए
बधना ऐसी कीजो, भोर कधी न होए

पंद्रहवीं शताब्दी की अवधि को उर्दू भाषा की प्रारंभिक अवधि कहा जाता है। इसने न केवल सामान्य सांस्कृतिक परंपराओं और इसकी मिट्टी के अन्य तत्वों से फ़ायदा उठाया, बल्कि उस समय के कुछ प्रामाणिक स्रोतों से और अधिक प्रभावित हुआ। उर्दू शायरी के प्राचीन उदाहरण भी इस शैली के उदाहरणों से रहित नहीं हैं। महत्वपूर्ण और महत्वहीन वाक्यांश, घटनाएं और अन्य चीजें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करती हैं। इस युग के शायरी के कुछ प्रयोग इस दृष्टि से स्मरणीय कहे जा सकते हैं कि उनमें हिंदुस्तानी सभ्यता को इतिहास के अन्य घटनाओं से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

दक्कन (विशेष रूप से दक्षिणी भारत का इलाक़ा, हैदराबाद इत्यादि) की सांस्कृतिक परंपराएं साझा सांस्कृतिक परंपराओं के अनुभवों से समृद्ध हैं। अशरफ़ बयाबानी, जो अपनी मस्नवी 'नौसर-हार' के लिए बहुत मशहूर हैं। इसमें कई ऐसे किरदार हैं जो अरब देश से संबंधित हैं लेकिन इनको इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि वे पूरी तरह से भारतीय प्रतीत होते हैं। दक्कन के सूफ़ियों ने उदारवादी परंपरा को अपनी शायरी के प्रयोग का न केवल हिस्सा बनाया बल्कि उसको एक नई ऊँचाई पर पहुँचा दिया। इस क्रम में ख़्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दारज़, मीराँ जी शम्सुल-इशाक़, जानम, अमीनुद्दीन आला और महमूद ख़ुश-दहाँ आदि के नाम शामिल हैं। इब्राहिम आदिल शाह सानी की मशहूर किताब 'नौ-रस'' है। इसे दक्कन काल का प्रतिनिधि रचना माना जाता है। नौ-रस के अधिकांश गीत हिंदू देवमाला पर आधारित हैं। इसमें शिव, पार्वती, सरस्वती, गणेश और इंद्र जैसे देवताओं का बार-बार उल्लेख बड़ी विनम्रता और श्रद्धा के साथ किया गया है।

दक्कन के मशहूर शायर मुल्ला वज्ही की मशहूर मस्नवी (शायरी) 'क़ुतुब मुश्तरी' है। वज्ही ने कुतुब मुश्तरी के एक शेर में बादशाह की उपमा कृष्ण से दी है। मस्नवी का एक शेर इस प्रकार हैः

हर एक गो अपनी शह की जूँ माह है
कि इस दौर में किशन औ-शाह है

दक्कन के शायरों में जो लोकप्रियता और महत्व क़ुली क़ुतुब शाह को हासिल हुई वह दूसरों के हिस्से में नहीं आई। इसका एक कारण यह भी है कि उनकी शायरी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। उन्हें उर्दू के पहले साहिब-ए-दीवान शायर (उर्दू में किसी कवि या शायर की रचनाओं का संग्रह) की हैसियत भी रखते हैं। नज़ीर अकबराबादी से दो शताब्दी पहले क़ुली क़ुतुब शाह की शायरी राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना को समर्पित थी। क़ुतुब शाह के बारे में कहा जाता है कि वह व्यावहारिक रूप से वह भारतीयता का चलता-फिरता नमूना थे। वह विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और त्योहारों में विशेष रुचि रखते थे। वह बसंत, मौसम-ए-बहार और अन्य अवसरों पर विशेष व्यवस्था करते थे। क़ुतुब शाही काल की सभ्यता को गंगा-जमुनी सभ्यता भी कहा जाता है। उस ज़माने में रीति रिवाज, रहन-सहन और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में मुहम्मद क़ुली कतुब शाह ने जिस तरह से राष्ट्रीय एकता और सद्भाव की भावना को मज़बूत किया, उसकी मिसालें उस ज़माने में आम नहीं थीं। यही भावना उनकी शायरी में भी नज़र आती है। आम जनता से जुड़े विषयों पर नज़्मों के अलावा धार्मिक विषयों और व्यक्तियों पर अनगिनत नज़्में उन्होंने कही हैं। वास्तव में उनकी यही भावना एकता और भाईचारे की भावना के लिए न केवल प्रेरणा का स्रोत बनीं बल्कि साझी संस्कृति को एक आधार भी मिला गया। इसके अनेक उदाहरण उनकी शायरी में देखे जा सकते हैं। क़ुली क़ुतुब शाह की शायरी की यही सबसे बड़ी ख़ूबी है, जो दक्कन के लोगों के लिए गर्व की बात है।

वली दकिनी ने अपनी शायरी के माध्यम से उत्तर भारत को बहुत प्रभावित किया। उनकी शायरी के बारे में कहा जाता है कि इसमें दकिनी प्रभाव के साथ-साथ स्थानीय रंग का सामंजस्य भी है। पीतम, पी, जग, चरण, बचन जैसे शब्दों का प्रयोग आम बात है। उनका शेर हैः

ज़ुल्फ़ तेरी है मौज जमुना की
तिल नज़िक उस के जियूँ सनासी है

भारत में साझी संस्कृति के जिन दृष्टिकोणों का विकास हुआ और बाद में जिसने लोकप्रियता भी हासिल की है, उसमें इस भाषा के सभी लोगों का योगदान शामिल है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुधार्मिक देश में लोग बिना किसी धार्मिक या सामाजिक भेदभाव के एक-दूसरे के सुख-दुख बांटते रहे हैं। यहां राष्ट्रीयता की अवधारणा का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है, लेकिन यह भी एक तथ्य है कि राष्ट्रीयता की अवधारणा ही देश है। इस संबंध में बहसें होती रहती हैं, लेकिन इस तरह की बहसें समय के साथ बीते दिनों की बात हो गई हैं। अब राष्ट्रीय एकता का एक बहुत ही स्पष्ट पाठ उर्दू शायरी में देखा जा सकता है।

उर्दू शायरी ने शुरू से ही भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को इस तरह आत्मसात किया है कि उर्दू साहित्य में इस प्यारे देश की सभी ख़ूबियाँ देखी जा सकती हैं। शायर और साहित्यकार आम लोगों की सोच से ज्यादा सोच-विचार करते हैं। ऐसे बहुत से विषय हैं जिन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है, स्थानीय रीति-रिवाज, मौसम, रहन-सहन आदि का अध्ययन भी उनमें से एक है। उर्दू शायरी में धर्म, धर्म गुरूओं, राजनेताओं के अलावा ऐतिहासिक स्थानों और मौसम, जंगल, पेड़, पक्षियों और इस तरह के अन्य विषयों का बहुत अच्छा प्रयोग किया गया है क्योंकि इन सबके बिना किसी भी लोकतांत्रिक देश की पूर्ण अवधारणा संभव नहीं है। यही सारी चीज़ें किसी भी देश को ख़ूबसूरत बनाती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें प्रकृति से गहरा लगाव है। जिस तरह से उर्दू शायरी में क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल किया गया है, उससे भी भाषाई स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों को समझने में मदद मिली है।

नज़ीर अकबराबादी की शायरी केवल सार्वजनिक अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि भारतीयता के प्रतीक के रूप में देखी जा सकती है। उनकी शायरी में हिंदू देव मालाई तत्वों और हिंदू धर्म का न केवल उपमाओं और रूपकों के रूप में उल्लेख किया गया है बल्कि इसे जीवन और श्रद्धा के रूप में प्रयोग किया गया है। एकता और सहिष्णुता का ऐसा गीतात्मक दृष्टिकोण कभी नहीं देखा गया। एक ओर वे भारत के मौसम, जलवायु और भौगोलिक विविधता का वर्णन करते हैं, वहीं दूसरी ओर त्योहारों, धार्मिक विचारों और लोगों का प्रतिनिधित्व भी उनके शब्दों के माध्यम से होता है। प्रो. शम्सुल-हक़ उस्मानी ने शौक़-ए-तमाशा को नज़ीर अकबराबादी की

रचनात्मक मनोदशा का मुख्य घटक बताया है। नज़ीर ज़िंदगी के हर खेल में शामिल है क्योंकि हर अवसर के लिए उनकी शायरी मौजूद है।

ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

मगर ख़ुशी का मामला यहीं तक नहीं है। इससे आगे बढ़कर वह यह भी कहते हैंः

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की

परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की
ख़ुम, शीशे, जाम, झलकते हों तब देख बहारें होली की

नज़ीर अकबराबादी की शायरी इसी तरह की ख़ूबसूरती से मालामाल है। सार्वजनिक अभिव्यक्ति का इतना व्यापक अनुभव अन्य कवियों के हिस्से में कम ही आया और नज़ीर को इसी वजह से बार-बार याद किया जाता है।

उर्दू भाषा के साहित्य के अध्ययन से राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और सहिष्णुता का सुखद अहसास होता है। बेशक, भारत जिस तरह से उर्दू शायरी में बसता है उसका इतना स्पष्ट उदाहरण शायद ही कहीं मिले। शायरी में क़सीदा, मस्नवी, मर्सिया, ग़ज़ल और नज़्म हो या फिर गद्य में दास्तान, नावेल और अफ़साना आदि। हर विधा में भारतीय मिट्टी और उसकी सुगंध है। उदाहरण के लिए इमाम हुसैन, उनका घर, बच्चे और महिलाएं सब भारतीय संदर्भ में देखने को मिलते हैं। उनके रहन-सहन, तौर-तरीक़े और बातचीत सब कुछ हिंदुस्तानी मालूम होते हैं। मीर अनीस का एक शेरः

बानु-ए-नेक-नाम की खेती हरी रहे
संदल से माँग, बच्चों से गोदी भरी रहे

कहां सैयदना इमाम हुसैन की पत्नी और कहां मांग में सिंदूर। यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक विशुद्ध हिस्सा है। उर्दू ग़ज़ल प्रेम, परोपकार, धार्मिक सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षक है। उर्दू ग़ज़ल में इस तरह के अनगिनत प्रयोग हुए हैं। मीर की ग़ज़लों में भारतीय सभ्यता के तत्वों को देखा जा सकता है। मीर का एक शेर हैः

ख़ूब-रू अब नहीं हैं गंदुम-गूँ [1]
मीर हिंदोस्ताँ में काल पड़ा

आतिश कहते हैंः

बुत-ख़ाना तोड़ डालिए मस्जिद को ढाइए
दिल को न तोड़िए ये ख़ुदा का मक़ाम है

सौदा का शेर मुलाहिज़ा फ़रमाएँः

टूटा जो काबा कौन सी ये जा-ए-ग़म है शैख़
कुछ क़स्र-ए-दिल नहीं कि बनाया न जाएगा

ज़ौक़ कहते हैंः

गुल्हा-ए-रंगारंग से है ज़ीनत-ए-चमन
ऐ ज़ौक़ इस जहाँ को है ज़ेब इख़्तिलाफ़ से

इसी बात को ग़ालिब अपने अंदाज़ से बयान करते हैंः

है रंग-ए-लाला-ओ-गुल-ओ-नसरीं जुदा जुदा
हर रंग में बहार का इसबात चाहिए

ग़ालिब का एक और शेर हैः

वफ़ा-दारी ब-शर्ते-उस्तुवारी अस्ल ईमाँ है
मरे बुत-ख़ाने में तो काबे में गाड़ो बरहमन को

हफ़ीज़ जौनपुरी का शेर हैः

पी लो दो घूँट कि साक़ी की रहे बात 'हफ़ीज़'
साफ़ इंकार से ख़ातिर-शिकनी होती है

इन अशआर से उर्दू ग़ज़ल की सामान्य मनोदशा को समझा जा सकता है। और यह भी कि उर्दू ग़ज़ल में इसकी एक व्यापक अवधारणा प्रचलित रही है, हालाँकि देशप्रेम की शायरी के ज़माने में कुछ विषयों को बहुत ही स्पष्ट और आसान अंदाज़ में इस्तेमाल किया गया।

अलीगढ़ आंदोलन ने देश के लोगों को एकता और मेलजोल की ओर आकर्षित किया। सर सैयद ने अपने लेखों और उपदेशों से न केवल एकता और मेलजोल का आह्वान किया, बल्कि उन्होंने एक राष्ट्र की अवधारणा को भी उजागर

[1] गेहूँ के रंग का, गेहुएँ रंग का, साँवला, सलोना

किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस देश में हम सदियों से मिलजुल कर रह रहे हैं और हमने एक-दूसरे की सैकड़ों आदतों और रीति-रिवाजों को अपनाया है। अपने उपदेशों में उन्होंने भारत को दुल्हन, और हिंदू-मुसलमानों को उसकी दोनों आंखों के रूप में वर्णित किया था। वास्तव में उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद की उस चाल को भांप लिया था कि वह किस तरह इस देश के रहने वालों की आपसी मोहब्बत और मेलजोल को नष्ट कर देना चाहते थे ताकि यह सदियों पुराना रिश्ता किसी तरह कमज़ोर हो जाए। डॉ. मंज़र आज़मी का यह सोच भी यहाँ विचार करने योग्य है:

> "1857 के स्वतंत्रता आंदोलन से पहले उर्दू शायरी में देशभक्ति की जो अवधारणा थी उसका रिश्ता मातृभूमि, उसकी घाटियों, रेगिस्तानों और पहाड़ों और नदियों से जुड़ा था। यह किसी राष्ट्रीय पहचान, एकता और राष्ट्रीय चेतना से संबंधित नहीं थी बल्कि यह कहा जाना चाहिए कि वह ज़्यादातर क्षेत्रीय थे। वह व्यक्तिगत वफादारी से जुड़े थे। उनका कोई दार्शनिक आधार नहीं था।'' (उर्दू अदब के इर्तिक़ा में अदबी तहरीकों और रुझानों का हिस्सा, डॉ. मंज़र आज़मी, पेज 239)

डॉ. मंज़र आज़मी ने कुतुब मुश्तरी, मस्नवी बहराम व गुल-ए-अंदाम, जाफ़र ज़ेटली और शाह मुबारक आबरू और अन्य शायरों की शायरी को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय एकता की अवधारणा को अंजुमन पंजाब लाहौर की नज़्म-निगारी की प्रेरणा से भी बढ़ावा मिला। इन नज़्मों के माध्यम से एक ऐसा परिदृश्य भी सामने आया है जिसमें भारतीयता और भारत के सांस्कृतिक पहलुओं को और अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन मुशायरों में बरसात, उम्मीद, देशभक्ति, अमन और इंसाफ़ के विषयों पर नज़्में पढ़ी गईं। इनसे एक नई सोच का जन्म हुआ। इस संबंध में ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन हाली का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। उनकी कुछ नज़्मों के शेर प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुईं। आम तौर पर यह माना जाता था कि इन नज़्मों में भारत और भारत की सांस्कृतिक भावना परिलक्षित होती है। उन्होंने उन दृष्टिकोणों को उजागर करने का प्रयास किया है जो केवल एक देशभक्त और देशप्रेमी से ही संभव थे जो अपने को भारतीय कहलाने पर गर्व करते थे। मौलाना अल्ताफ़

हुसैन हाली ने इन नज़्मों में विशेष रूप से और अपनी अन्य नज़्मों में भी आमतौर पर जिस भारत का चित्रण किया है और जिस सांस्कृतिक दृष्टिकोण को उन्होंने उजागर करने का प्रयास किया है, वह केवल एक देशभक्त और एक हिंदुस्तानियत पर फ़ख़्र करने वाले फ़नकार से ही मुमकिन था। हाली और उस वक़्त के अन्य प्रतिष्ठित लोगों के लेख से एक ऐसे भारत के निर्माण का संकेत मिलता है जिसमें यहां पर रहने वाले सभी निवासी शामिल हैं। आज से सौ साल पहले हिंदुस्तान और हिंदुस्तानियत का जो नुस्ख़ा हाली ने प्रस्तुत किया था, आज उसको एक बार फिर से दोहराने और ज़िंदा करने की ज़रूरत है।

तुम अगर चाहते हो मुल्क की ख़ैर
न किसी हम-वतन को समझो ग़ैर
हों मुसलमान इस में या हिन्दू
बौद्ध मज़हब हो या कि हो ब्रहमू
सब को मीठी निगाह से देखो
समझो आँखों की पुतलियाँ सब को
मुल्क हैं इत्तिफ़ाक़ से आज़ाद
शहर हैं इत्तिफ़ाक़ से आबाद
हिन्द में इत्तिफ़ाक़ होता अगर
खाते ग़ैरों की ठोकरें क्यूँकर
क़ौम जब इत्तिफ़ाक़ खो बैठी
अपनी पूँजी से हाथ धो बैठी
एक का एक हो गया बद-ख़्वाह
लगी ग़ैरों की तुम पे पड़ने निगाह
फिर गए भाइयों से जब भाई
जो न आनी थी वो बला आई

इसी नज़्म में उन्होंने यह भी कहा है:

बैठे बे-फ़िक्र क्या हो हम-वतनो
उट्ठो अहल-ए-वतन के दोस्त बनो

एक बहुधार्मिक, सांस्कृतिक और भाषाई देश की स्थिरता के लिए जो मूलभूत आवश्यकता थी, उसे हाली ने स्पष्ट कर दिया था। नज़्म कहने वाला एक

मुस्लिम है और जिस भाषा में यह कही गई है वह उर्दू है; लेकिन कमाल की बात यह है कि आप यह बता नहीं सकते कि हाली का संबोधन किससे है। यानी किसी हिंदू से या मुसलमान से। यह नज़्म की एक अहम ख़ूबी है और जिसका पूरा ज़ोर एकता पर है।

उर्दू में देशभक्ति की नज़्में लिखने वाले वालों की एक लंबी क़तार है। हालाँकि अल्लामा इक़बाल को इसके प्रमुख नामों में एक विश्वसनीय संदर्भ के रूप में कभी नहीं भुलाया जा सकता है। उन्होंने देशभक्ति के विषयों पर अनगिनत नज़्में लिखीं। हिंदुस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत (चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ाम-ए-हक़ सुनाया, नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया...) और तराना-ए-हिंदी (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा...) को तो बहुत लोकप्रियता और शोहरत हासिल है:

सच कह दूँ ऐ बरहमन गर तू बुरा न माने
तेरे सनम-कदों के बुत हो गए पुराने
आ ग़ैरियत के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें नक़्श-ए-दुई मिटा दें
हर सुब्ह उठ के गाएँ मंतर वो मीठे मीठे
सारे पुजारियों को मय पीत की पिला दें
शक्ति भी शांति भी भगतों के गीत में है
धरती के बासीयों की मुक्ती प्रीत में है

राष्ट्रीय एकता वास्तव में राष्ट्रीयता का प्रथम और आधारभूत स्तम्भ है। यह सब एकता के बिना संभव नहीं है। इस संबंध में असर लखनवी की एक नज़्म 'दर्स-ए-इत्तिहाद' शीर्षक से बहुत प्रसिद्ध है। इस नज़्म का एक अंश देखिए, ताकि आप समझ सकें कि ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जो हमारी सहिष्णुता में रुकावट बनती हैं।

उल्फ़त हुई रस्म-ए-पारीना
है उसकी जगह दिल में कीना
अगलों के चलन हम भूल गए
वो रस्म-ए-कुहन हम भूल गए
आपस की रवादारी उट्ठी
उल्फ़त उट्ठी यारी उट्ठी

वो योग रहा न वो प्रीत रही
बस इक नफ़रत की रीत रही
यकजहती जब मफ़क़ूद हुई
और फ़िक्र ज़ियाँ-ओ-सूद रही
वह जज़्ब की ताक़त सल्ब हुई
तौफ़ीक़-ए-हिदायत सल्ब हुई

असर लखनवी की उपरोक्त नज़्म वास्तव में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखी गई है, वर्तमान की समीक्षा इतिहास के संदर्भ में प्रस्तुत की गई है कि हम किस तरह के वरदान से वंचित हो गए हैं। एकजुटता के लिए आपसी स्नेह और प्यार ज़रूरी है, लेकिन हमने इसे एक पुराने ज़माने की रस्म बना दिया है। एकता और भाईचारे के लिए जिस तरह का माहौल होना चाहिए, अब सिर्फ़ उसका ख़्वाब देखा जा सकता है लेकिन इसकी प्राप्ति दूर-दूर तक नज़र नहीं आती है। बेशक इस दिशा में काम करने की ज़रूरत है। उर्दू साहित्य ने प्रारम्भ से ही इस सोच को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। उर्दू भाषा भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती रही है। एकता और एकजुटता के बिना इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

उर्दू शायरी में भारत का इतिहास, सभ्यता और संस्कृति, धार्मिक सहिष्णुता, अकादमिक, साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक व्यक्तित्वों के साथ-साथ मौसम, खेत, किसान, मज़दूर, जलवायु, धार्मिक स्थलों में ऐसा कोई अध्याय नहीं है जिस पर उर्दू में शायरी न की गई हो। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को उर्दू शायरी में जितनी स्पष्टता से ढाला गया है, इसका उदाहरण कहीं और मुश्किल से मिलता है। उर्दू का जन्म ही राष्ट्रीय एकता की अवधारणा पर आधारित है।

पंडित बृज नारायण चकबस्त ने अपनी नज़्मों में देशभक्ति की बेहतरीन मिसाल पेश की है। उन्होंने उर्दू शायरी में अपनी क़ाबिलयत दिखाई है। अर्थात् केवल देशभक्ति का जोश और ऐतिहासिक संदर्भ के कारण ही उनकी शायरी हमारे साहित्य का हिस्सा नहीं है, बल्कि कलात्मक और बौद्धिक दृष्टिकोण से भी चकबस्त की शायरी हमें प्रभावित करती है। उनकी एक एक नज़्म 'ख़ाक-ए-हिंद' के शीर्षक से है। इसमें उन्होंने भारत की महानता, इतिहास और लोकप्रिय लोगों को इस तरह प्रस्तुत किया है कि वे भारत की महानता की एक सच्ची और स्पष्ट तस्वीर प्रतीत होते हैं। भारत की ख़ूबियों को दूसरे शायरों ने भी अपनी नज़्मों में स्थान दिया है और इस धरती

के प्रति अपने गहरे लगाव और भावनाओं को व्यक्त किया है। चकबस्त भी भारत की मिट्टी और उसकी महानता को स्वीकार करते हुए कहते हैंः

ऐ ख़ाक-ए-हिंद तेरी अज़्मत में क्या गुमाँ है
दरिया-ए-फ़ैज़े-क़ुदरत तेरे लिए रवाँ है
तेरे जबीं से नूरे-हुस्ने-अज़ल अयाँ है
अल्लाह-रे ज़ेबो-ज़ीनत क्या औजे-इज़्ज़ो-शाँ है
हर सुब्ह है ये ख़िदमत ख़ुर्शीदे-पुर-ज़िया की
किरनों से गूँधता है चोटी हिमालिया की

चकबस्त ने जहां उपरोक्त नज़्म में भारत के गुणों का वर्णन किया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने ग़ुलाम हिंदुस्तान को 'इक लाश-ए-बेकफ़न है हिंदोस्ताँ हमारा' बताया है। इसी नज़्म में उन्होंने भारतीयों को नींद से जगाने का भी काम किया है और भारत को ग़ुलामी से मुक्त कराने और उस चीज़ को हासिल करने का संकेत दिया है, जो भारत की मूल पहचान थी। चकबस्त भारत की महान हस्तियों और कुछ अन्य चीज़ों पर गर्व करते हुए कहते हैंः

गौतम ने आबरू दी इस माबुद-ए-कुहन को
सरमद ने इस ज़मीं पर सदक़े किया वतन को
अकबर ने जाम-ए-उल्फ़त बख़्शा इस अंजुमन को
सींचा लहू से अपने राणा ने इस चमन को
सब सूरबीर अपने इस ख़ाक में निहाँ हैं
टूटे हुए खंडर हैं या उन की हड्डियाँ हैं

दीवार-ओ-दर से अब तक उन का असर अयाँ है
अपनी रगों में अब तक उन का लहू रवाँ है
अब तक असर में डूबी नाक़ूस की फ़ुग़ाँ है
फ़िरदौस-ए-गोश अब तक कैफ़िय्यत-ए-अज़ाँ है
कश्मीर से अयाँ है जन्नत का रंग अब तक
शौकत से बह रहा है दरिया-ए-गंग अब तक

जमील मज़हरी की नज़्में बौद्धिक और कलात्मक दोनों दृष्टि से सार्थक हैं। उनकी नज़्मों की एक अहम ख़ूबी यह भी है कि उनमें देश से मोहब्बत के कई दृष्टिकोण

उभरते हैं। यह कहा जा सकता है कि उनके सीने में एक ऐसा दिल है जिसमें इस मुल्क की मोहब्बत और इसे व्यक्त करने का जुनून है। उनकी एक नज़्म 'भारत माता' है। इसमें अपनी देश के लिए जिस तरह की पवित्रता और एकजुटता व्यक्त की गई है वह देश के साथ संबंध को बयान करने के लिए काफ़ी है। एक नज़्म के कुछ शेर देखेंः

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
तेरी गोद में भाई-भाई
छींटों में तेरे बादल की
साये में तेरे आँचल की

देश के साथ सच्ची सहानुभूति और भाईचारे की रंगीन तस्वीरें इक़बाल सोहेल की नज़्मों में देखी जा सकती हैं। इक़बाल सोहेल की नज़्मों की एक ख़ूबी यह है कि उन्होंने बिना किसी भेदभाव के देश की महान हस्तियों की सेवाओं को उजागर किया है, उनकी उपलब्धियों को अपनी शायरी का विषय बनाया है। इस संदर्भ में पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, महात्मा गांधी और मौलाना मुहम्मद अली जौहर के नामों का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू की याद में लिखी गई कविता में उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू की ऐसी तस्वीर पेश की है, मानो पूरा दृश्य आंखों के सामने आ गया हो। एक कलाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह होती है कि वह जिसे भी चित्रित करे वह जीवित प्रतीत होने लगे। इस नज़्म में इक़बाल सोहेल ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का वर्णन किया है। इक़बाल सोहेल ने उन्हें चित्रित करने के लिए ऐसी शब्दावली का सहारा लिया है कि हर शब्द पंडित जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व और चरित्र को दर्शाता है।

खद्दर उस फूल से बदन पर
ग़ैरत-दह अतलस-ए-मुशज्जर
इख़्लास की दिल-फ़रेब तस्वीर
ईसार की जाँ-नवाज़ पैकर
अख़्लाक़ की सूरत-ए-मुजस्सम
ईमान का शोला-ए-मुसव्विर
हिंद उसके फ़ैज़ से चरागाँ
मुल्क उसके क़ुदूम से मुनव्वर

अल्फ़ाज़ में शहद की हलावत
अंदाज़ में जल्वा-ए-गुल-ए-तर
आज़ादी-ए-हिंद का हरावल
हिज़्ब-ए-वतन का मीर-ए-लश्कर
वह रास्त बयान ओ रास्त किरदार
वह पाक सरिश्त पाक गौहर
हिंदू, मुस्लिम, क्रिश्चियन, सिख
सब उसके ख़ुलूस के सनागर

इकबाल सोहेल ने नज़्म के द्वारा पंडित जवाहरलाल नेहरू की बेहतरीन तस्वीर का बनाई है। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी हैसियत हरावल दस्ते की थी। इसीलिए इक़बाल सोहेल की पंडित नेहरू के प्रति अपार श्रद्धा थी। यह नज़्म उसी श्रद्धा का परिणाम है, जो उनकी याद में लिखी गई है। इसके अलावा भी इक़बाल सोहेल की कई देशभक्ति और व्यक्तिगत नज़्में हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है, जैसे क़यादत-ए-उज़्मा, याद-ए-माज़ी, जमींदार और किसान, आईन-ए-जदीद, पयाम-ए-हक़्क़ आदि।

इक़बाल सोहेल की कुछ नज़्में भी प्रकृति और प्रकृतिवाद के उच्च उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी नज़्मों के माध्यम से ऐसा दृश्य निर्मित किया है मानो कोई चित्रकार चित्र बना रहा हो। इक़बाल सोहेल की नज़्म 'कोह-ए-मसूरी' को इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रकृति का ऐसा आकर्षक नज़ारा बहुत कम देखने को मिलता है। प्रकृति के नज़ारों के बारे में कुछ अश'आरः

मरहबा कोह-ए-मसूरी ये तेरी शान-ए-जमाल
तेरी चौखट चूमते हैं सरफ़रोशान-ए-जमाल
ये फ़लक फ़रसा बुलंदी पैकर-ए-शान-ओ-शिकोह
ये बहिश्त आशोब रंग आराईयाँ जान-ए-जमाल
तेरी बर्फ़-आलूदा चोटी बन गई आईनादार
देखनी चाही शुआ-ए-ख़ोर ने जब शान-ए-जमाल
सुब्ह दम फूलों पे वह इक कुहर सा छा गया
खुल गई है नींद में या ज़ुल्फ़ में पेचान-ए-जमाल

है हवा इस सरज़मीं की या शराब-ए-जिंदगी
फिर दिल-ए-अफ़सुर्दा में है इल्तिहाम-ए-ज़िंदगी
रूह को सेहरा-ए-ग़ुर्बत में मिला दर्स-ए-सुकून
थी वतन की ज़िंदगी तो ख़ुद हिजाब-ए-ज़िंदगी
तेरी आँखों से निहाँ है चश्मा-ए-आब-ए-हयात
रोज़-ओ-शब से तू लगाता है हिसाब-ए-ज़िंदगी

इक़बाल सोहेल की कई ऐसी बहुत सी नज़्में हैं जिनमें उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की बड़ी ख़ूबसूरत व्याख्या की है। इसका मुख्य कारण यह है कि इक़बाल सोहेल को भारत की हर एक चीज़ से मोहब्बत थी। उन्होंने अपनी इस मोहब्बत का इज़्हार हिंदुस्तानी रस्म-ओ-रिवाज, यहाँ की फ़स्लों और मौसमों के साथ-साथ यहाँ के त्यौहारों को भी अपनी नज़्मों का विषय बनाया है। इसी क्रम की एक नज़्म उन्होंने ''ब-तक़रीब जश्ने होली महाराजा अलवर'' के शीर्षक से लिखी है। इस नज़्म के शुरूआत में इक़बाल सोहेल ने वसंत ऋतु का चित्रण किया है। वसंत ऋतु में ऐसा लगता है कि सब कुछ धुल गया है। कविता के दूसरे भाग में, उन्होंने 'अलवर' के महाराजा के व्यक्तित्व और उनकी जीवनी के साथ-साथ महाराजा की शासन प्रणाली का बखान व प्रशंसा की है।

भारत पूरी दुनिया में अपनी जिन सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता है, उर्दू शायरी उनमें एक अहम स्थान रखती है। क्योंकि यह ज़बान यहां के मिज़ाज और माहौल के अनुकूल है। आज एक बार फिर दुनिया के सामने यह बात रखने और बताने की ज़रूरत है कि यह नज़्में इसी समाज के लिए लिखी गई थीं और इन्हीं से इस देश के मूल्यों की पहचान भी होती है। एक सदी बाद आज यह कितना कुछ बदल चुका है इसका अंदाज़ा इन नज़्मों से लगाया जा सकता है।

अफ़सर मेरठी की शायरी भी देशभक्ति से ओत-प्रोत है। इसकी एक अलग पहचान और शान है। उनकी शायरी देशभक्ति और गहरे जज़्बात का दर्पण है। ''जैसा मेरा देश है अफ़सर ऐसा देश नहीं'' जैसी नज़्म के साथ-साथ उन्होंने ''वतन का राग'' जैसी बेहद भावुक नज़्म भी कही है। ऐसा लगता है कि उनका दिल देशभक्ति की भावना से भरा हुआ है।

साग़र निज़ामी (1905-1984) को स्वतंत्रता आंदोलन के गायक के रूप में जाना जाता है। यूँ तो उन्होंने अनगिनत नज़्में लिखीं और उसमें असंख्य विषयों को

शामिल किया लेकिन देशप्रेम, उसकी स्वतंत्रता और स्वतंत्रता सेनानियों के जोश को प्रोत्साहित करने वाली नज़्में यादगार बन गईं। उर्दू शायरी ने स्वतंत्रता आंदोलन को जो दिशा और गति दी और जिस तरह से सार्वजनिक स्तर पर ब्रिटिश निरंकुशता को उजागर किया, इतिहास के इस अध्याय में सागर निज़ामी की हैसियत हरावल देस्ते की है। उनकी नज़्मों में केवल शारीरिक स्वतंत्रता का ही मुद्दा नहीं है, बल्कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद जिस प्रकार भारत की संस्कृति, सभ्यता और एकता को बर्बाद कर रहा था, उन्होंने इसको भी अपनी नज़्मों का विषय बनाया।

साग़र निज़ामी की नज़्में जहाँ एक ओर देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना से भरी हैं, तो दूसरी ओर वे देशवासियों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित भी करती हैं। इसके साथ ही ये सुखद भविष्य का शुभ समाचार भी देती हैं। शायर को भरोसा था कि स्वतंत्रता आंदोलन के सामने ज़ुल्म और अत्याचार का यह सिलसिला बहुत जल्द ख़त्म हो जाएगा, इसलिए यहां आशावाद का पहलू प्रबल है। स्वतंत्रता के बारे में ''बादा-ए-मश्रिक़'' की वह नज़्में जो ''सुब्ह-ए-नौ'' के शीर्षक से 1918 से 1932 के आपातकाल के दौरान लिखी गई हैं वह विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

भारत की बहुलतावादी संस्कृति और विभिन्न धर्मों की रंगारंगी को देखते हुए साग़र निज़ामी ने जहाँ एक ओर मुसलमानों में स्वतंत्रता की भावना जगाई और अरब और ईरान के ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ में यह संदेश दिया कि आपके पुरखों ने कभी ग़ुलामी को क़ुबूल नहीं किया तो दूसरी ओर हिंदू धर्मों और पौराणिक परंपराओं के हवाले से भी उनमें स्वतंत्रता की अलख जगाई। साग़र निज़ामी की नज़्मों का यह पहलू बहुत प्रमुख है। इस संदर्भ में उनके पास सूफ़ी प्रेम गीत भी हैं। उनकी नज़्में प्रकृति के दृश्यों और उपमाओं से भी भरी पड़ी हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में देश के सभी देशवासियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। जिन भाषाओं में गीत गाए गए उसमें उर्दू का हिस्सा ज़्यादा है। अनगिनत लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। इस अवसर पर उन्होंने भारतीयता की व्यापक अवधारणा बनाई, जिसमें सभी के लिए अवसर हो। इसी कारण उर्दू कविता में देशभक्ति और बहुलवाद का एक बड़ा हिस्सा है। गांधीजी, तिलक, लाला लाजपत राय, सुभाष चंद्र बोस, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, भगत सिंह, चंद्र शेखर आज़ाद, अशफाकुल्ला ख़ाँ, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल आदि को कौन भुला सकता है। जोश मलीहाबादी ने इसीलिए कहा थाः

सुनो ऐ बस्तिगान-ए-ज़ुल्फ़-ए-गीती
निदा क्या आ रही है आस्माँ से
कि आज़ादी का एक लम्हा है बेहतर
ग़ुलामी की हयात-ए-जाविदाँ से

फ़िराक़ गोरखपुरी की शायरी में एक दुनिया बसी है। फ़िराक़ ने अपनी मशहूर नज़्म ‘‘हिंडोले’’ में जिस तरह से भारतीय सभ्यता और समाज का चित्रण किया है, उसे कला और अभिव्यक्ति दोनों का आदर्श कहा जा सकता है। यह नज़्म गंगा-जमुनी तहज़ीब और हिंदुस्तान की बहुआयामी परंपरा की बेहतरीन मिसाल कही जाती हैः

दयार-ए-हिंद था गहवारा याद है हमदम
बहुत ज़माना हुआ किसके किसके बचपन का
इसी ज़मीन पे खेला है राम का बचपन
इसी ज़मीन पे उन नन्हे नन्हे हाथों ने
किसी समय में धनुष-बाण को संभाला था
इसी दयार ने देखी कृष्ण की लीला

फ़िराक़ की इस नज़्म में भारतीय सभ्यता की रंगारंगी का ख़ासा महत्व है। ऐसी नज़्में उर्दू शायरी के पुस्तकालय में दस्तावेज़ी अहमियत रखती हैं।

अली सरदार जाफ़री प्रमुख प्रगतिशील कवियों में से एक हैं। उन्होंने इंक़लाबी और जोशीली नज़्मों के माध्यम से देश प्रेम और इंसान दोस्ती के गीत गाए हैं। उनकी नज़्में एक ख़ास एहसास से भरी हुई हैं। उन्होंने देश के हवाले से बहुत कुछ कहने की कोशिश की है और लोगों में एकता और भाईचारा का संदेश दिया है।

सलाम मछली शहरी की गिनती उर्दू के अहम शायरों में होती है। उनके यहाँ देशप्रेम का एक बेमिसाल जज़्बा पाया जाता है। हिंदुस्तान की मिलीजुली संस्कृति और इसकी महानता के गुणगान करने वाले शायर के तौर पर भी उनको याद किया जाता है।

देशभक्ति की भावना उर्दू शायरी की प्रकृति और मिज़ाज का हिस्सा इस तरह बन गई कि जैसे वह उनके लिए ज़िंदगी का सब कुछ हो। इसलिए, हर युग और हर ज़माने में यह भावना कहीं साफ़ तौर पर और कहीं ढके छुपे तौर पर नज़र आती है। इस पुस्तक में उल्लेखनीय शायरों के देशभक्ति के शब्दों को शामिल किया गया है, लेकिन उन सभी की चर्चा प्राक्कथन में करना संभव नहीं है। यह लगभग डेढ़

शताब्दी का क़िस्सा है। इसलिए यहाँ केवल कुछ ही शायरों का उल्लेख किया गया है ताकि अंदाज़ा हो सके कि उर्दू शायरी की दुनिया में देश और देशभक्ति के कैसे-कैसे जल्वे मौजूद हैं।

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है और इसकी यही शान है जिसे उर्दू शायरी में उजागर किया गया है। यही हमारी पहचान है। आज के परिदृश्य में अपने इतिहास और संस्कृति को याद रखना और संजोना दोनों ही ज़रूरी है, इसीलिए यहां कुछ महत्वपूर्ण नज़्मों का चयन प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें कोशिश की गई है कि इनसे हिंदुस्तानियत और यहाँ के बहुसांस्कृतिक समाज की तस्वीर को स्पष्ट किया जा सके। हम लोगों को यह स्पष्ट कर सकते हैं कि यही इस जगह की असली पहचान है और कुछ समय के लिए हमारे बुजुर्गों ने इसे अपनाया है और प्रसिद्धि प्राप्त की है। भविष्य के लिए भी यही ख़ुशी की राह प्रशस्त करेगी।

इस पुस्तक में शामिल नज़्में शायरों की कृतियों और शायरी के कुछ विश्वसनीय चयनों से ली गई हैं। कई लंबी नज़्मों के चुनिंदा शेरों को ही किताब में शामिल किया गया है।

अंत में मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपने बड़ों विशेषकर ख़ुसरों फ़ाउण्डेशन के डायरेक्टर्स को धन्यवाद दूं जिन्होंने मुझे इतनी महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर अपने गुरु और मार्गदर्शक प्रोफ़ेसर अख़्तरुल वासे का धन्यवाद करना ज़रूरी है जिनकी वजह से यह काम हो सका। वे स्वयं भारतीय समाज में इस बहुलवादी संस्कृति और दृष्टिकोण के संरक्षक रहे हैं। उन्होंने बड़ों की संगति से बहुत कुछ सीखा है और लगातार अपने लेख के माध्यम से न केवल भारतीयता की भावना का प्रतिनिधित्व किया है, बल्कि इस अनूठी अवधारणा के अस्तित्व और संरक्षण में भी योगदान दिया है। पुस्तक की यह रूपरेखा और इसके वैचारिक लक्ष्य उन्हीं के विचारों पर आधारित हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि प्रोफ़ेसर अख़्तरुल वासे की इस सोच से नई पीढ़ी अवश्य ही लाभान्वित होगी।

उमैर मंज़र, *असि. प्रो. (उर्दू विभाग)*
मौलाना आज़ाद नेश्नल उर्दू यूनिवर्सिटी,
लखनऊ कैम्पस, लखनऊ

तराना-ए-हिन्दी

अल्लामा इक़बाल

(1877-1938)

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं इस की ये गुलसिताँ हमारा
ग़ुर्बत[1] में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा
पर्बत वो सब से ऊँचा हम-साया[2] आसमाँ का
वो संतरी हमारा वो पासबाँ[3] हमारा
गोदी में खेलती हैं इस की हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिन के दम से रश्क-ए-जिनाँ[4] हमारा
ऐ आब-रूदे-गंगा[5] वो दिन है याद तुझ को
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा
यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रूमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नाम-ओ-निशाँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

---

1 परदेस

2 पड़ोसी

3 चौकीदार

4 स्वर्ग से ईर्ष्या

5 गंगा की धारा

सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा
'इक़बाल' कोई महरम[1] अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्द-ए-निहाँ[2] हमारा

[1] परिचित

[2] छिपा हुआ दर्द

ख़ाक-ए-हिंद[1]

ब्रिज नारायण चकबस्त

(1882-1926)

ऐ ख़ाक-ए-हिंद तेरी अज़्मत[2] में क्या गुमाँ है
दरिया-ए-फ़ैज़-ए-क़ुदरत तेरे लिए रवाँ है
तेरे जबीं से नूर-ए-हुस्न-ए-अज़ल[3] अयाँ[4] है
अल्लाह-रे ज़ेब-ओ-ज़ीनत[5] क्या औजे-इज़्ज़-ओ-शाँ[6] है

हर सुब्ह है ये ख़िदमत ख़ुर्शीदे-पुर-ज़िया की
किरनों से गूँधता है चोटी हिमालिया की

इस ख़ाके-दिल-नशीं[7] से चश्मे[8] हुए वो जारी
चीन-ओ-अरब में जिन से होती थी आबियारी[9]
सारे जहाँ पे जब था वहशत का अब्र[10] तारी
चश्म-ओ-चराग़-ए-आलम[11] थी सर-ज़मीं हमारी

---

1 हिंदुस्तान की मिट्टी

2 प्रतिष्ठा

3 अनन्त सौंदर्य की ज्योति

4 स्पष्ट

5 श्रृंगार और सजावट

6 इज़्ज़त और शान की ऊँचाई

7 दिल को अच्छी लगने वाली मिट्टी

8 झरने

9 सिंचाई

10 बादल

11 दुनिया के लिये मार्गदर्शक

शम-ए-अदब[1] न थी जब यूनाँ[2] की अंजुमन में
ताबाँ[3] था महर-ए-दानिश[4] इस वादी-ए-कुहन[5] में
'गौतम' ने आबरू दी इस माबुद-ए-कुहन को
'सरमद' ने इस ज़मीं पर सदक़े[6] किया वतन को
'अकबर' ने जाम-ए-उल्फ़त बख़्शा इस अंजुमन को
सींचा लहू से अपने 'राणा' ने इस चमन को
सब सूरबीर अपने इस ख़ाक में निहाँ हैं
टूटे हुए खंडर हैं या उन की हड्डियाँ हैं
दीवार-ओ-दर से अब तक उन का असर अयाँ[7] है
अपनी रगों में अब तक उन का लहू रवाँ है
अब तक असर में डूबी नाक़ूस की फ़ुग़ाँ[8] है
फ़िरदौस-ए-गोश[9] अब तक कैफ़िय्यत-ए-अज़ाँ है
कश्मीर से अयाँ है जन्नत का रंग अब तक
शौकत[10] से बह रहा है दरिया-ए-गंग अब तक
अगली सी ताज़गी है फूलों में और फलों में
करते हैं रक़्स[11] अब तक ताऊस[12] जंगलों में
अब तक वही कड़क है बिजली की बादलों में
पस्ती सी आ गई है पर दिल के हौसलों में

---

1 साहित्य का ज्ञान

2 यूनान

3 रौशन, प्रकाशमय

4 शिक्षा की लौ

5 पुरानी वादी अर्थात् हिंदुस्तान

6 दान

7 स्पष्ट

8 नाक़ूस की फ़ुग़ाँ=शंख का शोर

9 मधुर आवाज़

10 शान, रौब

11 नृत्य

12 मोर

गुल शम-ए-अंजुमन है गो अंजुमन वही है
हुब्ब-ए-वतन वही है ख़ाक-ए-वतन वही है

बरसों से हो रहा है बरहम [1] समाँ हमारा
दुनिया से मिट रहा है नाम-ओ-निशाँ हमारा
कुछ कम नहीं अजल[2] से ख़्वाब-ए-गिराँ[3] हमारा
इक लाश-ए-बे-कफ़न है हिन्दोस्तान हमारा

इल्म-ओ-कमाल ओ ईमाँ बर्बाद हो रहे हैं
ऐश-ओ-तरब के बंदे ग़फ़लत में सो रहे हैं

ऐ सूर-ए-हुब्ब-ए-क़ौमी[4] इस ख़्वाब से जगा दे
भूला हुआ फ़साना कानों को फिर सुना दे
मुर्दा तबीअतों की अफ़्सुर्दगी मिटा दे
उठते हुए शरारे इस राख से दिखा दे

हुब्ब-ए-वतन समाए आँखों में नूर हो कर
सर में ख़ुमार हो कर दिल में सुरूर हो कर

शैदा-ए-बोस्ताँ [5] को सर्व-ओ-समन [6] मुबारक
रंगीं तबीअतों को रंग-ए-सुख़न मुबारक
बुलबुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक
हम बे-कसों [7] को अपना प्यारा वतन मुबारक

गुंचे [8] हमारे दिल के इस बाग़ में खिलेंगे
इस ख़ाक से उठे हैं इस ख़ाक में मिलेंगे

---

[1] आक्रोशित, ग़ुस्से में, नाराज़

[2] मौत

[3] लापरवाही

[4] देशभक्ति की आवाज़

[5] बाग़ को पसंद करने वाला

[6] cypress and jasmine

[7] असहाय

[8] कली

है जू-ए-शीर[1] हम को नूर-ए-सहर[2] वतन का
आँखों की रोशनी है जल्वा इस अंजुमन का
है रश्क-ए-महर ज़र्रा इस मंज़िल-ए-कुहन का
तुलता है बर्ग-ए-गुल[3] से काँटा भी इस चमन का
गर्द-ओ-ग़ुबार याँ का ख़िलअत[4] है अपने तन को
मर कर भी चाहते हैं ख़ाक-ए-वतन कफ़न को

[1] दूध की नहर
[2] सुबह की रौशनी
[3] फूल की पंखुड़ी
[4] क़ीमती कपड़ा

वतन का राग

अफ़सर मेरठी

(1895-1958)

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है
हर रुत हर मौसम इस का कैसा प्यारा प्यारा है
कैसा सुहाना कैसा सुंदर प्यारा देश हमारा है
दुख में सुख में हर हालत में भारत दिल का सहारा है
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

सारे जग के पहाड़ में बे-मिस्ल[1] पहाड़ हिमाला है
पर्बत सब से ऊँचा है ये पर्बत सब से निराला है
भारत की रक्षा करता है ये भारत का रखवाला है
लाखों चश्मे[2] बहते हैं ये लाखों नदियों वाला है
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

गंगा-जी की प्यारी लहरें गीत सुनाती जाती हैं
सदियों की तहज़ीब[3] हमारी याद दिलाती जाती हैं
भारत के गुलज़ारों[4] को सरसब्ज़[5] बनाती जाती हैं
खेतों को हरियाली देती फूल खिलाती जाती हैं
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

---

[1] लाजवाब

[2] झरने

[3] संस्कृति

[4] बाग़, उद्यान

[5] हरा भरा

कृष्ण की बंसी ने फूंकी है रूह हमारी जानों में
गौतम की आवाज़ बसी है महलों में मैदानों में
'चिश्ती' ने जो मय दी थी वो अब तक है पैमानों में
'नानक' की ता'लीम अभी तक गूँज रही है कानों में
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

मज़हब कुछ हो हिन्दी हैं हम सारे भाई भाई हैं
हिन्दू हैं या मुस्लिम हैं या सुख हैं या ईसाई हैं
प्रेम ने सब को एक किया है प्रेम के हम शैदाई[1] हैं
भारत नाम के आशिक़ हैं हम भारत के शैदाई हैं
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है

1 आशिक़

ऐ मादर-ए-हिंद

फ़िराक़ गोरखपुरी

(1896-1982)

ऐ मादर-ए-हिंद सुब्ह तेरी तेरी शाम
हैं साक़ी-ए-दौराँ के छलकते हुए जाम
लम्हों में तेरे राज़-ए-अबद पिन्हां हैं
तेरी हर सांस पैग़ाम-ए-दवाम [1]

दरपा आईना जहां गुज़रा
कोहसार [2] तेरे सुकून-ए-दायम के निशाँ
है तेरी फ़िज़ा में कुछ घुलावट ऐसी
अफ़ज़ूं जो करे रक़्क़ते-क़ल्बे-यज़्दां

शान-ए-रम ज़िंदगी अदाओं में तेरी
पेच व ख़म ज़िंदगी कलाओं में तेरी
मौसीक़ी-ए-सय्याल लब-ओ-लहजा [3] तेरा
कैफ़-ओ-कम-ए-ज़िंदगी सदाओं में तेरी

बादल का धुआं सरेफ़राज़-ए-कोहसार
जल्वा दह देव-लोक दश्त-ओ-गुलज़ार [4]
गाती हुई अप्सराएं [5] जैसे गुज़रें
नदियों ने तेरी वह छेड़ रखा है सितार

---

[1] चिर-स्थायी

[2] पर्वत

[3] बात करने का तरीक़ा

[4] मरुस्थल और उद्यान

[5] परियाँ

वह इंद्र धनुष वह सात रंगो की फुआर
बहरूप दिखाते मौसमों की रफ़्तार
आ जाती है झंकार तेरे पायल की
इक रक़्स सरमदी [1] है या रुत का सिंघार

रुख़सरों में तेरी ही दमक देखते हैं
हर अज़्व [2] में तेरी ही लचक देखते हैं
पड़ती है आँख अपनी जब ख़लक़त [3] पर
हर चेहरे में तेरी ही झलक देखते हैं

दिन रात खनक रहे हैं लाखों ही तार
कानों में अज़ल [4] से आ रही है झंकार
अफ़लाक-ए-बरीं [5] पर उंगलियों में तेरी
लौ देते हुए तारों का छेड़ा है सितार

तेरी हर साँस में जिनाँ [6] की बू-बास [7]
दामन की हवा तेरे ज़माने को है रास
हासिल हुआ धड़कनों से तेरे दिल की
रूहानियत [8] माद्दा का यह एहसास

हर फ़िर्क़ा व हर मिल्लत व हर मज़हब व दीं
सब ने जाए पनाह पाई है यहीं
औलाद में मामता झलकती है तेरी
दुनिया की मादर-ए-वतन है यह ज़मीं

फेरी तेरे दर की जो लगाते हैं
सीने की दबी जोत जगा जाते हैं

---

[1] अनंत

[2] वस्तु

[3] भीड़भाड़

[4] अनादिकाल

[5] उच्चतम आकाश

[6] जन्नत

[7] गंध, महक

[8] अध्यात्मवाद

सुनते हैं अलावा दौलत-ए-दुनिया के
साइल [1] तेरे कुछ और भी पा जाते हैं

क्या-क्या हमें दे गए हमारे अजदाद [2]
क्या-क्या हमें कर गए वो शाद-ओ-नाशाद [3]
दी दौलत-ए-बेदार रुमूज़-ए-हस्ती
गहरी है निशात-ओ-ग़म [4] से जिनकी बुनियाद

पैग़ाम तेरा बात अटल है ऐ हिंद
हर दौर तेरा एक ही पल है ऐ हिंद
शामों पे तेरी शाम-ए-अबद का साया
हर सुब्ह तेरी सुब्ह-ए-अज़ल [5] है ऐ हिंद

दिल साँचों में अनवार के ढल जाते हैं
आतिश-ए-नफ़्सी के लोग बल जाते हैं
ज़ुल्मात के सीने में बक़ौल-ए-रावी [6]
सांसो से तेरी चिराग़ जल जाते थे

इंसान को तक़दीर बना देती है
हर आह को तासीर बना देती है
पहलू में तेरे दबी हुई है वह आँच
जो दर्द को इकसीर [7] बना देती है

देखा नहीं आँखों में तेरा कोमल गात
हैं तेरे गवाह ज़िंदगी के लम्हात
तू एक वजूद ग़ैर मरई की तरह
रही है हमारे साथ, दिन हो या रात

---

1 फ़र्यादी

2 पूर्वज

3 ख़ुश और नाख़ुश

4 ख़ुशी और ग़म

5 वह समय जब सृष्टि की रचना हुई

6 वर्णनकर्ता के अनुसार

7 वह रसायन जो पीतल को सोना बना देता है

हर ग़ुंचा व गुल जाम व सुबू है तेरा
औलाद तेरी जोश-ए-नुमू है तेरा
हर अहल-ए-वतन को तूने पाला-पोसा
इस क़ौम की रग-रग में लहू है तेरा

कन्याएँ अज़ल की सबाहत [1] जिनमें
राधा की अदाओं की नज़ाकत जिनमें
तू आज भी जन रही है ऐसे बच्चे
है कृष्ण की शोख़ी व शरारत जिनमें

शोले से जबीनों [2] से लपक जाते हैं
मुरझाए हुए चेहरे दमक जाते हैं
उन चेहरों में जिन पर है अटी गर्द-ए-मलाल
रुख़ भीष्म व अर्जुन के झलक जाते हैं

इक नग़मा हवा अब भी सुना जाती है
इक आग सी सीनों में लगा जाती है
हाँ आज भी संसनाती हुई बंसवाड़ियों [3] में
बंसी वाले की तान आ जाती है

है तेरी क़दामत [4] में भी बरनाई [5] सी
असरार-ए-नुमू से है शनासाई [6] सी
वह लोच है ज़ावियों [7] में फ़िक्र-ओ-फ़न [8] के
लेता है दवाम [9] जिनमें अंगड़ाई सी

---

[1] हुस्न, सुंदरता

[2] ललाट, माथा

[3] बाँसों का जंगल

[4] प्राचीनता

[5] नवीनता

[6] जानकारी

[7] नज़रिया

[8] विचार और कला

[9] स्थायित्व

हर फ़न-ए-लतीफ़ [1] की नौईयत [2] है
नश्तर-ए-ज़द [3] विजदान वह शेरियत है
अनदेखी हक़ीक़तों ने सूरत पकड़ी
कितनी दिलकश ये क़ल्ब-ए-माहीयत [4] है

बेज़ारी [5] चश्म-ए-ग़ैब [6] की है जो मिसाल
देखा तेरे फ़नकारों ने वह ख़्वाब-ए-जमाल [7]
जो क़ल्ब हक़ीक़त से छलक जाता है
शादाब [8] उसी लहू से रगे-हाए-ख़्याल

हर नक़्श-ए-अजंता का वह चलता जादू
वह हुस्न व जमाल के बदलते पहलू
वह बुत-साज़ी [9] कि जान पत्थर में पड़े
है ताज के रुख़सार-ए-जमां पर आंसू

पहुंचे हैं कहाँ-कहाँ यह तेरे फनकार
शिव का ताण्डव है या है सृष्टि सिंघार
पेशानी-ए-शिव [10] दम-ए-हलाहल-नौशी [11]
वह अबरूओं पे चढ़ी कमानों का तार

फ़ितरत की ख़लवतों में डाले डेरे

---

[1] ललित कला, फ़ाइन आर्ट्स

[2] विशेषता

[3] घाव लगाने वाला औज़ार

[4] दिल की प्रकृति

[5] निराशा

[6] अदृश्य नज़र

[7] बहुत सुंदर ख़्वाब

[8] हराभरा

[9] शिल्पकारी

[10] शिव की ललाट

[11] वह प्रचण्ड विष, जो समुद्र मंथन के समय निकला था

पेच-ओ-ख़मे-ज़ीस्त [1] के लगाए फेरे
दुनिया के कुत्बख़ानों [2] से जो पिन्हां [3] थे
वह राज़ खुले हैं जंगलों में तेरे

तहज़ीब की पहली सुब्ह की पाक दुआएँ
गूंजी हूई हैं फ़िज़ा में ऋषियों की सदाएँ
ऐ गंग व जमन की गुनगुनाती लहरो
देती हैं सुनाई तुम में वेदों की रचाएँ

वह तेरे मुफ़क्किर [4] का क़ल्ब [5] -ए-हुशियार
पलकों में जिनकी बंद रूह-ए-बेदार [6]
वह जैन और बुद्ध की ग़ाइर-नज़री [7]
इंकार को कर दिया है रश्क-ए-इक़रार

शायर तेरे जिस वक़्त सदा देते हैं
सोए-सोए सपनों को जगा देते हैं
आफ़ाक़ [8] के मंदिर में वह नग़में उनके
रह-रह के घण्टियाँ बजा देते हैं

इन रागों का राज़ कोई पूछे हम से
अफ़लाक [9] खनक रहे हैं ताल व सम से
मिट्टी तेरी ऐ हिंद है नरमाई हुई
सीता व शकुन्तला के अश्क-ए-ग़म [10] से

---

[1] ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव

[2] पुस्तकालय

[3] गुप्त

[4] विचारक

[5] दिल

[6] जगाने वाली आत्मा

[7] बारीकी देख लेना, समझ की तेज़ी

[8] आकाश-समूह, सब आस्मान

[9] आकाश-समूह, सब आसमान

[10] ग़म के आँसू

आग़ोश-ए-मुलायम में सुलाया हमको
ख़ामोश आवाज़ से जगाया हमको
कुछ हम भी बनाएँ तेरे बिगड़े हुए काम
ऐ ख़ाक-ए-वतन तूने बनाया हमको

ऐ-वतन

गोपाल मित्तल

(1901-1993)

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
यह रस्मे-आम है जो चाहे सर उठा के चले
कोई भी शर्त बजुज़ वज़अ-ए-एहतियात नहीं
कोई संभल के चले कोई लड़खड़ा के चले

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
मेरे जुनून की पादाश[1] संग-ओ-ख़िश्त[2] नहीं
जहाँ पे दाना-ए-गंदुम[3] नहीं है वजह-ए-इताब[4]
ज़हे-नसीब[5] मयस्सर है वह बहिश्त-ए-बरीं[6]

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
हमेशा हो तेरी गलियों पे जो कुशादा रहें
मैं एक सरकश[7]-ओ-आवारा था मगर तूने
हमेशा बख़्श दिया है शफ़ीक़[8] मां की तरह

---

[1] परिणाम, बदला

[2] पत्थर और ईंट

[3] गेहूँ का दाना

[4] ग़ुस्से की वजह

[5] सौभाग्य, अच्छा भाग्य

[6] सबसे ऊँचा स्वर्ग

[7] विद्रोही

[8] दयालु, हमदर्द

सलाम हो तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां
है जिनकी देन मेरा ज़ौक़े-शेर-ओ-नग़मा-गिरी
ख़ुलूस[1] दिल से दुआ है रहे क़यामत तक
मुसर्रतों[2] के सितारों से तेरी मांग भरी

[1] निष्कपटता, निश्छलता, सच्चाई
[2] ख़ुशियों

नज़्र-ए-वतन[1]

सिकंदर अली वज्द

(1914-1983)

जिहाद-ए-अम्न व सदाक़त है शाहकार तेरा ख़ुलूस महर व मुरव्वत रहा शिआर तेरा
हयात बख़्श तमद्दुन सदा बहार तेरा चमक रहा है नया ताज ज़रनिगार तेरा
कहीं उफ़ुक़ पे अंधेरा नज़र नहीं आता
नज़र न हो तो सवेरा नज़र नहीं आता
कहीं जवाब नहीं तेरे कोहसारों का समां अजीब है गंग व जमन के धारों का
मिसाल-ए-क़ौसे-क़ज़ह रंगे-किश्तज़ारों का फ़िज़ा में इत्र हैं तहज़ीब की बहारों का
ज़माना तेरे फ़साने भुला नहीं सकता
नुक़ूश-ए-ताज व अजंता मिटा नहीं सकता
बहार साज़ हैं तेरे जदीद मयख़ाने छलक रहे हैं मय आगही के पैमाने
हक़ीक़तों में जहां ढल रहे हैं अफ़साने ख़िरद को राह दिखाते हैं तेरे दीवाने
मुजाहिदों का लहू अर्जुमंद हो के रहा
तेरे वक़ार का परचम बुलंद हो के रहा
बहे जो चश्मा-ए-हिम्मत से नूर के धारे हक़ीर ख़ाक के ज़र्रात बन गए तारे
हुए मुहीब चट्टानों के संग मय पारे क़दम-क़दम पे चले ज़िंदगी के फ़व्वारे
बशर ने चश्मा-ए-आब-ए-हयात ढूंढ लिया
माल-ए-कार-ए-निशान-ए-सबात ढूंढ लिया
दयार-ए-लुत्फ़ है तू, दोस्ती का मख़ज़न है हिसार-ए-अदल है, जम्हूरियत का गुलशन है

---

[1] देश को अर्पित, भेंट

हरीम-ए-अम्नो-अमां है, ख़ुशी का मसकन है   कोई हो तफ़र्रुक़ा परदाज़ तेरा दुश्मन है
किसी के ज़ुल्म वफ़ादार सह नहीं सकते
तेरी पनाह में खूंख़ार रह नहीं सकते

शमीम-ए-अम्न ज़माने में चलने वाली है   महक रही है चमन रुत बदलने वाली है
हयात-ए-नौ की सवारी निकलने वाली है   तेरी ज़मीन जवाहर उगलने वाली है
ये इंक़िलाब-ए-करामत नहीं तो फिर क्या है
शिकस्त-ए-ख़्वाब हक़ीक़त नहीं तो फिर क्या है

प्याम-ए-सब्र-ओ-सुकूं धुन तेरे तराने की   निगाह-ए-शौक़ है तेरी तरफ़ ज़माने की
नवीद तूने सुनाई बहार आने की   सितम-कशों को है उम्मीद मुस्कुराने की
लुटा के हुस्न सहर बेक़रार फूलों में
हयात झूल रही है ख़ुशी के झूलों में

तेरा तरीक़ मदावा है दर्द-ए-आलम का   जहान-ए-ताज़ा करिश्मा है सई-ए-पैहम का
नज़र नवाज़ है अंदाज़ तेरे परचम का   फ़िज़ा में नूर-ए-फ़िशां है प्याम-ए-गौतम का
स्याह दौर-ए-ग़ुलामी ख़्याल ख़्वाब है आज
बुलंद अज़मत-ए-इंसां का आफ़ताब है आज

ये है मेरा हिन्दोस्तान

ज़ुबैर रिज़वी

(1935-2016)

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
हँसता गाता जीवन इस का धूम मचाते मौसम
गंगा जमुना की लहरों में सात सुरों के सरगम
ताज एलोरा जैसे सुंदर तस्वीरों के एल्बम

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
दिन अलबेले रातें इस की मस्ती की सौदागर
धरती जैसे फूट बही हो दूध की कच्ची गागर
ऊँचे ऊँचे पर्बत इस के नीले नीले सागर

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
बादल झूमे बरखा बरसे पवन झकोले खाए
धरती के फैले आँगन में यूँ खेती लहराए
जैसे बच्चा माँ की गोद में रह रह के मुस्काए

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
राधा सीता चंद्र गाय गाय इंदूबाल
नैनों में काजल के डोरे सुर्ख़ गुलाबी गाल
ज़ुल्फ़ों की वो छाया जैसे शिमला नैनीताल

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
ढोलक जागी मेहंदी लागी रंग रंगीला सावन
सखियाँ मिल मिल होली खेलें साँवरिया के आँगन
घूँघट में गोरी शरमाए पिया मिलन के कारन

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
राजा-रानी गुड्डा-गुड्डी और परियों की कहानी
बच्चों के झुरमुट में सुनाए बैठ के बूढ़ी नानी
लोरी गाय माथा चूमे ममता की दीवानी

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
अलबेला पंजाब है इस का रूमानों की बस्ती
सुब्हे-बनारस शामे-अवध और शालीमार की मस्ती
बम्बई जैसे शहर हैं इस में दिल्ली जैसी बस्ती

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
ग़ालिब और टैगोर यहीं के मीरा काली-दास
यहीं हुआ था सच्चाई का गौतम को एहसास
यहीं लिया था साथ राम के सीता ने बन-बास

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को
मंदिर मस्जिद हैं तो कहीं हैं गिरजा और शिवाले
मुल्ला पंडित गीता और क़ुरआन के हैं मतवाले
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई देश के सब रखवाले

ये है मेरा हिन्दोस्तान
मेरे सपनों का जहान
इस से प्यार है मुझ को

आर्यों की पहली आमद हिन्दोस्तान में

वहीदुद्दीन सलीम पानीपती

(1859-1928)

वो देख कि मौजें रक़्स-कुनाँ[1] हैं सतह-ए-ज़मीं पर गँगा की
नौ-वारिद[2] आर्य हैरत में हैं देख के शान इस दरिया की
गंगोत्री से आती है चली, अठखेलियाँ करती धार इस की
आज़ादी है तेवर से अयाँ मतवाली है रफ़्तार इस की
उत्तर की तरफ़ जब उठती है इस क़ाफ़िल-ए-मग़रिब की नज़र
पड़ती हुई किरणें सूरज की हैं देखते बर्फ़ के तूदों पर
हर क़िला-ए-कोहे-हिमाला पर अज़्मत के हैं बादल छाए हुए
सीनों को हैं ताने देव खड़े अम्बर से सिरों को मिलाए
बरगद के दरख़्तों से जंगल फैले हैं पहाड़ के दामन में
शाख़ें हैं जो उन की साया-फ़िगन[3] ज़ुल्मत का समाँ है हर बन में
फिरते हैं वो फ़ील[4] मस्त यहाँ है देव का जिन के क़द पे गुमाँ
ये काली घटा जब दौड़ती है आता है नज़र हैबत[5] का समाँ
हैं रंग-ब-रंग के फूल खिले ज़ीनत है चमन के शबाब उन का

---

[1] नाचते हुए, नृत्यमग्न

[2] नये आने वाले

[3] रक्षा करने वाला

[4] हाथी

[5] भय, दहशत

खोला है नसीमे-सहर[1] ने अभी किस शान से बंद नक़ाब उन का
आते हैं मुसाफ़िर हिन्द में जो ख़ैबर के दरों से उतर के अभी
देखे थे उन्हों ने लाला-ओ-गुल[2] पामीर की वादी में न कभी
ताइर[3] भी यहाँ पैदा हैं किए क़ुदरत ने अजब गुल-रंगो-हसीं
गर ज़मज़मे[4] उनकी ऋषि सुन लें याद आए उन्हें फ़िरदौस-ए-बरीं[5]
इन्द्र के अखाड़े की परियाँ गाती हैं जो दिलकश रागनियाँ
ये लोच सुरों में उन के नहीं ये सोज़ गुलों में उन के कहाँ
सूरज की चमकती हुई किरनें हैं छेड़ती ठंडी हवाओं को
भर देती हैं नूर-ओ-हरारत[6] से बाग़ों को और उन की फ़ज़ाओं को
सोती हुइ सौतें[7] चश्मों की उठती हैं सब आँखें मल मल कर
धारें हैं जो बर्फ़ के पानी की आती हैं पहाड़ों से चल कर
ऐ आर्यो! आओ क़दम रक्खो, इन हुस्न भरे गुलज़ारों में
जन्नत के मज़े लूटोगे सदा इस पाक ज़मीं की बहारों में
तुम गंग-ओ-जमन के किनारों पर शहर अपने नए आबाद करो
गा गा के भजन कर कर के हवन हो जाओ मगन दिलशाद[8] करो

[1] सुबह की मंद, शीतल और सुगंधित हवा

[2] फूल और बूटे, सुंदरता

[3] पक्षी, चिड़िया

[4] संगीत, गीत

[5] सबसे ऊपर का स्वर्ग

[6] रोशनी और गर्मी

[7] जल की बराबर बहने वाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे-पहाड़ का सोता, कूएं का सोता

[8] दिल को ख़ुश

हिमाला

अल्लामा इक़बाल

(1877-1938)

ऐ हिमाला ऐ फ़सील-ए-किश्वर-ए-हिंदोस्ताँ [1]
चूमता है तेरी पेशानी को झुक कर आसमाँ
तुझ में कुछ पैदा नहीं देरीना रोज़ी के निशाँ
तू जवाँ है गर्दिशे-शाम-ओ-सहर के दरमियाँ
एक जल्वा था कलीम-ए-तूर-ए-सीना के लिए
तू तजल्ली [2] है सरापा चश्म-ए-बीना [3] के लिए

इम्तिहान-ए-दीदा-ए-ज़ाहिर [4] में कोहिस्ताँ [5] है तू
पासबाँ अपना है तू दीवार-ए-हिन्दुस्ताँ [6] है तू
मतला-ए-अव्वल फ़लक जिस का हो वो दीवाँ[7] है तू
सूए-ख़ल्वत-गाह-ए-दिल दामन-कश-ए-इंसाँ है तू
बर्फ़ ने बाँधी है दस्तार-ए-फ़ज़ीलत [8] तेरे सर
ख़ंदा-ज़न है जो कुलाह-ए-मेहर-ए-आलम-ताब पर

---

[1] हिंदुस्तान के हिफ़ाज़त की दीवार

[2] प्रकाश, रौशनी

[3] अक़्लमंदों की निगाह

[4] ज़ाहिरी तौर पर

[5] पहाड़

[6] हिंदुस्तान का प्रहरी

[7] महाकाव्य

[8] उत्कृष्टता की पगड़ी

तेरी उम्र-ए-रफ़्ता[1] की इक आन[2] है अहद-ए-कुहन[3]
वादियों में हैं तेरी काली घटाएँ ख़ैमा-ज़न[4]
चोटियाँ तेरी सुरय्या से हैं सरगर्म-ए-सुख़न
तू ज़मीं पर और पहना-ए-फ़लक तेरा वतन
चश्मा-ए-दामन तेरा आईना-ए-सय्याल है
दामन-ए-मौज-ए-हवा जिस के लिए रूमाल है

अब्र के हाथों में रहवार-ए-हवा के वास्ते
ताज़ियाना दे दिया बर्क़-ए-सर-ए-कोहसार ने
ऐ हिमाला कोई बाज़ी-गाह है तू भी जिसे
दस्त-ए-क़ुदरत ने बनाया है अनासिर के लिए
हाए क्या फ़र्त-ए-तरब में झूमता जाता है अब्र
फ़ील-ए-बे-ज़ंजीर की सूरत उड़ा जाता है अब्र

जुम्बिश-ए-मौज-ए-नसीम-ए-सुब्ह गहवारा बनी
झूमती है नश्शा-ए-हस्ती में हर गुल की कली
यूँ ज़बान-ए-बर्ग से गोया है उस की ख़ामुशी
दस्त-ए-गुल-चीं की झटक मैं ने नहीं देखी कभी
कह रही है मेरी ख़ामोशी ही अफ़्साना मेरा
कुंज-ए-ख़ल्वत ख़ाना-ए-क़ुदरत है काशाना मेरा

आती है नद्दी फ़राज़-ए-कोह से गाती हुई
कौसर ओ तसनीम की मौजों को शरमाती हुई
आईना सा शाहिद-ए-क़ुदरत को दिखलाती हुई
संग-ए-रह से गाह बचती गाह टकराती हुई

---

[1] वो जीवन जो बीत चुका हो, पिछली ज़िंदगी, गुज़रा हुआ काल, भूतकाल, बीता हुआ समय

[2] एक पल

[3] प्राचीन काल, पुराना ज़माना

[4] ठहरना, रुकना

छेड़ती जा इस इराक़-ए-दिल-नशीं के साज़ को
ऐ मुसाफ़िर दिल समझता है तिरी आवाज़ को

लैला-ए-शब खोलती है आ के जब ज़ुल्फ़-ए-रसा
दामन-ए-दिल खींचती है आबशारों की सदा
वो ख़मोशी शाम की जिस पर तकल्लुम हो फ़िदा
वो दरख़्तों पर तफ़क्कुर का समाँ छाया हुआ
काँपता फिरता है क्या रंग-ए-शफ़क़ कोहसार पर
ख़ुश-नुमा लगता है ये ग़ाज़ा तिरे रुख़्सार पर

ऐ हिमाला दास्ताँ उस वक़्त की कोई सुना
मस्कन-ए-आबा-ए-इंसाँ जब बना दामन तेरा
कुछ बता उस सीधी-साधी ज़िंदगी का माजरा
दाग़ जिस पर ग़ाज़ा-ए-रंग-ए-तकल्लुफ़ का न था
हाँ दिखा दे ऐ तसव्वुर फिर वो सुब्ह ओ शाम तू
दौड़ पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिश-ए-अय्याम तू

कोह-ए-मसूरी
साग़र निज़ामी
(1905-1984)

इस मंज़र-ए-रंगीं के आगे अब हर दिलचस्पी खोटी है
इशरत में है हर उज़्व-ए-तन[1], फ़रहत में बोटी-बोटी है
जिन चंद बुलंद चट्टानों पर बिजली रातों को लौटी है
वह सब पाबूस-ए-शायर-ए-पीं, दुनिया नज़रों में छोटी है
मैं उस चोटी पर बैठा हूं जो सबसे ऊंची चोटी है

पस्ती कुछ धुंधली-धुंधली है आलम कुछ मैला-मैला है
दुनिया पर कोहरा तारी है हर सिम्त धुआं सा फैला है
शादाब दरख़्तों की शाख़ें झुक कर सज्दे में गिरती हैं
आज़ाद बुलंद फ़ज़ाओं में कुछ चिड़ियां उड़ती फिरती हैं
मैं उस चोटी पर बैठा हूं जो सबसे ऊंची चोटी है

कुछ ना-हमवार[2] चट्टानें है उन पर संगीं[3] काशाने[4] हैं
आबादी में हर-जा[5] रौशन बिजली के ख़लवत-ख़ाने[6] हैं
टेढ़ी, सीधी, ऊंची नीची सड़कें कोसों फैला दी हैं

---

[1] शरीर का अंग

[2] जो समतल न हो, ऊँचा-नीचा

[3] पत्थर के

[4] झोंपड़ी, घर, आशियाँ

[5] हर जगह

[6] तन्हाई की जगह, तन्हा रहने की जगह, अलग कमरा

कोहसार[1] में भी इंसानों ने क्या ज़िंदगियां दौड़ा दी हैं
मैं उस चोटी पर बैठा हूं जो सबसे ऊंची चोटी है

आंखों में किरणें भरने को कुछ काफ़िर सब्हें फिरती हैं
कोहरे की रिदा में छुप-छुप कर जन्नत की हूरें फिरती हैं
कुछ रंग हवाएं लाती हैं उन पुतलों में भर देने को
गुलज़ार उभर कर निकले हैं अंगड़ाई फ़िज़ा में लेने को
मैं उस चोटी पर बैठा हूं जो सबसे ऊंची चोटी है

बादल के साए वादी की गोदी में मचले फिरते हैं
मैं पर्दों में छुप जाता हूं अकसर, जब बादल घिरते हैं
हर अब्र की आगोश तर में इक मौज-ए-तबस्सुम[2] पाता हूं
सब जिसको बिजली कहते हैं मैं हंस-हंस कर कुछ गाता हूं
मैं उस चोटी पर बैठा हूं जो सबसे ऊंची चोटी है

---

[1] पर्वतमाला

[2] मुस्कुराहट की लहर, मुस्कुराते हुए होंठों पर दिखाई देने वाली रेखा

गंगा के चिराग़

आनंद नारायण मुल्ला

(1901-1997)

आब-ए-गंगा[1] क्या ही मस्ताना तेरा अंदाज़ है
झूम कर चलने पे तेरे मुझको क्या-क्या नाज़ है
क्या मेरे जज़्बात की दुनिया का तू हमराज़ है
तेरी लहरों में मेरी तख़य्युल[2] की परवाज़ है
अपनी मौजों का तलातुम[3] आ मेरे सीने में देख
अक्स अपनी बेकली[4] का दिल के आईने में देख

आज तक आंखों में है तेरा समां ऐ हरिद्वार
वह हूजूम-ए-मह व शां महवे-तमाशा[5] बर-कनार[6]
वह सफ़ाए आब-ए-अख़ज़र[7] में चिराग़ों की बहार
देख कर जिनको यही कहता था दिल बे-इख़्तियार
ताबा सत्हे-आब[8] हर गौहर उभर आया है क्या
आस्मां लेकर सितारों को उतर आया है क्या

[1] गंगा का पानी

[2] तख़य्युल की परवाज़ =कल्पना की उड़ान

[3] बेचैनी, परेशानी

[4] व्याकुलता, बेचैनी, व्यग्रता

[5] तमाशा देखने में व्यस्त या मशग़ूल, जीविका में व्यस्त

[6] दूर, अलग

[7] नीला, हरा

[8] पानी की सतह, जलतल, समुद्रतल

क्या शुआ-ए-महर[1] के ज़र्रे परेशां हो गए
फ़ैज़ से ख़ुर्शीद[2] के यह ख़ुद दरख़्शां[3] हो गए
तेरे आब-ए-पाक[4] के जौहर नुमायां हो गए
क्या किसी के दाग़े-असियां[5] नूर-ए-ईमां हो गए
रक़्स करने के लिए जुगनू निकल आए हैं क्या
फूल जन्नत के फ़लक वालों ने बरसाए हैं क्या

यह मुसाफ़िर कौन है, कैसा है उनका कारवां
क्या इसी का अक्स है कहते हैं जिसको कहकशां[6]
किस क़दर प्यारी हैं उनकी छोटी-छोटी कश्तियां
यह कहां से आए हैं बहर-ए-तमाशा-ए-जहां
अहले-दुनिया[7] को तेरे अज़मत दिखाने के लिए
स्वर्ग से उतरीं हैं क्या परियां नहाने के लिए

घूरने वालों की नज़रों से यह घबराती नहीं
पैकर-ए-नूरी[8] की उर्यानी से शर्माती नहीं
हां यक़ीं इंसान की बातों का यह लाती नहीं
मौजे-दरिया[9] छोड़ कर साहिल तलक आती नहीं
हुस्न दिखलाती तो हैं लेकिन कुछ इस अंदाज़ से
अपना जलवा ख़ुद छिपा लेती हैं अपने नाज़ से

---

1 सूरज की किरण
2 सूरज
3 प्रकाश से भरा, चमकीला
4 पवित्र जल
5 गुनागों के दाग़
6 आकाशगंगा
7 जनता
8 रोशनी का जिस्म
9 दरिया की लहर

ऐ चिराग़-ए-आब-ए-गंगा तुझमें कैसा नूर है
तू किसी आशिक़ का दिल है या जबीन-ए-नूर[1] है
इक झलक दिखला के तू मौजों में फिर मस्तूर[2] है
हुस्न का चश्म-ए-तमन्ना से यही दस्तूर है
तेरा जलवा क्या किसी मज़लूम की तक़दीर है?
एक हस्ती के उम्मीद-ओ-बीम[3] की तस्वीर है?

क्या तेरी तक़दीर में इंसां की रंजूरी भी है?
क्या तेरे दिल की तमन्नाओं की मजबूरी भी है?
सीना-ए-नूरी में तेरे ज़ौक़-ए-महजूरी[4] भी है
क्या तेरे जाम-ए-गली में आब-ए-अंगूरी[5] भी है?
किसकी उम्मीदों की गुलकारी तेरे दामन में है?
आरज़ू किस की फ़रोज़ां[6] तेरे पैराहन[7] में है

तू किसी के सोज़-ए-दिल[8] का शोला-ए-मस्तूर है
तू किसी के दीदा-ए-गिर्यां का सारा नूर है
तुझ में सारी इल्तिजा-ए-ख़ातिर-ए-मजबूर है
तू किसी बेकस की नज़रों में चिराग़-ए-तूर है
इक ख़ुलूस-ए-दिल[9] की तुझमें इंतिहाई शान है
जल्वा-ए-ख़ुर्शीद[10] तेरे नूर पर क़ुर्बान है

---

[1] माथा, पेशानी, ललाट की रोशनी
[2] छुपा हुआ, गुप्त
[3] आशा-निराशा
[4] विरह, वियोग, जुदाई की ख़ुशी
[5] अंगूर की मदिरा, शराब
[6] प्रकाशमान, रौशन, चमकदार
[7] वस्त्र, चोला, लिबास
[8] हृदय में जलती प्रेम की अग्नि
[9] निष्कपट, निश्छल दिल
[10] सूरज का जल्वा

जमुना

साग़र निज़ामी

(1905-1984)

जिसके पा-ए-नाज़ मस्जूद-ए-गदा-ओ-शाह थे
जिसके साहिल तीर-अंदाज़ों[1] के जौलाँ-गाह[2] थे
जिसने पाण्डौं को सुनाई थी नवेद[3]-ए-ज़िंदगी
जिसकी बेकल[4] मौज भी तस्कीन का इक राग थी
साहिलों पर जिसके सहरा-ए-लक़-ओ-दक़[5] था कभी
जो दरिन्दों और हैवानों का था मलजा[6] कभी
ज़ौक़ ने उल्फ़त के जिसको रश्क-ए-गुलशन कर दिया
गुल-ब-दामन[7] कर दिया जन्नत ब-दामन कर दिया

जिसको पाण्डौं ने सँवारा क्या वह दो-शीज़ा[8] है तू
सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

---

[1] तीर मारने वाला, तीर से शिकार करने वाला

[2] गतिविधि का स्थल, भाग दौड़ की जगह

[3] शुभ-सूचना, ख़ुशख़बरी

[4] व्याकुल, बेचैन

[5] जिसमें न वृक्ष हों न पानी हो, चटियल मैदान जिसमें घास तक न हो, चटियल मैदान

[6] रक्षा-स्थान, जान बचाने या सुरक्षित रहने की जगह, पनाह मिलने की जगह

[7] दामन में फूल भरे हुए

[8] सुंदर या रूपवान लड़की, ख़ूबसूरत लड़की

जिसके आगे सर्द था क़ुलज़ुम[1] वही दरिया है तू
जिसके पाकीज़ा किनारे मंदिरों के शहर थे
जिसके क़तरे एक दिन चश्मा-ओ-चिराग़-ए-बहर थे
जिसकी गोदी में हज़ारों किले थे लाखों चमन
जिसकी मौजों में बहा करती थी दुनिया और धन
जिसके साहिल पर बहादुर ज़िंदगी पाते रहे
अर्जुन-ओ-भीम-ओ-युधिष्टिर गुर्ज़[2] चमकाते रहे
आस्माँ जन्नत के मोती जिस पे बरसाता रहा
आर्य अज़मत का झण्डा जिस पे लहराता रहा

जिसको क़ुदरत ने तराशा है वही हीरा है तू
सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू
कृष्ण की बंसी का इक बहता हुआ नग़मा है तू
याद है अब तक तेरा तूफ़ाँ उठाना याद है
गोवर्धन को देखकर मौजों पर आना याद है
किस क़दर जादू भरा था शौक़-ए-पाबूसी तेरा
तेरी बेताबी पे आख़िर कृष्ण को रहम आ गया
कृष्ण ने अपना कदम मौज-ए-रवाँ[3] पर रख दिया
ताज उल्फ़त का वफ़ा के आस्ताँ[4] पर रख दिया
बोसे[5] दे के कृष्ण के क़दमों को तू बहने लगी
माइल-ए-मक़सूद-ओ-महवे-जस्तुजू बहने लगी
जो मधुर मुरली की लय पर उम्र भर बहती रही

---

[1] वो समुद्र जो अरब, मिस्र और अफ़्रीक़ा के मध्य स्थित है. लाल सागर

[2] एक प्राचीन अस्त्र, गदा

[3] बहती धारा

[4] चौखट, देहलीज़, किसी ऋषि का आश्रम

[5] स्पर्श

कृष्ण से अफ़साना-ए-शाम-ओ-सहर कहती रही
शाम के हलके धुँदलके में ये अंदाज़-ए-हिजाब
छेड़ती थी कुंज में राधा मोहब्बत का रुबाब[1]
हुस्न का गहवारा थी, दारुल-अमान-ए-इश्क़ थी
जिसकी हर मौज-ए-रवाँ आराम जान-ए-इश्क़ थी

कृष्ण जिसमें तैरते थे क्या वही दरिया है तू
सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू
सोहबत-ए-माज़ी का इक पुर-दर्द अफ़साना है तू
शाना-गीरी शह-ए-जहाँ[2] को तेरे गेसू से मिली
मर के भी की जज़्बा-ए-मुम्ताज़ ने मश्शातगी[3]
एक कोह-ए-नूर दामन पर तेरे टाँका गया
जो तेरी आबी-दलाई के लिए तारा बना
ताज से रातों की ख़ामोशी में क्या कहती है तू
आ के उसकी गोद में आहिस्ता क्यूँ बहती है तू
आह वह तेरे ज़माने इक फ़साना हो गए
नाचते थे मोर जिन कुंजों में वो क्या हो गए

यादगार-ए-हशमत[4] -ए-तारीख़-ए-देरीना है तू
सच बता ऐ मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

---

[1] बीन, वीणा

[2] दुनिया के बादशाह (शाहजहाँ)

[3] बनाव, सिंगार

[4] ऐश्वर्य, वैभव

संगम

अफ़सर मेरठी

(1895-1958)

प्रयाग पे बिछड़ी हुई बहनें जो मिली हैं
पानी की ज़मीं पर भी तो कलियाँ सी खिली हैं
कुछ गंगा का रुकना
कुछ जमुना का झुकना
फिर दोनों का मिलना
वो फूल से खिलना

किस शौक़ से इठलाती हुई साथ चली हैं
ये इश्क़-ओ-मोहब्बत के नज़्ज़ारे-अज़ली[1] हैं
कहते हैं कि जन्नत से भी आई है बहन एक
गो तीनों का ही अस्ल में घर एक वतन है
घर जब से छुटा था
दिल सर्द हुआ था
वो कोह से गिरना
वो दश्त में फिरना

[1] अनादि कालवाला नज़ारा, सृष्टि की रचना के समय का नज़ारा

रातों को वो सुनसान बयाबान[1] में चलना
सहमे हुए तारों का वो सीने में मचलना
था वो सफ़र दश्त में मैदान में बन में
ख़ामोश पहाड़ों में गुलिस्ताँ में चमन में
जंगल से निकलना
रुकते हुए चलना
कुछ बढ़ के पलटना
डर डर के सिमटना

मर मर के अकेले ये गुज़ारा है ज़माना
जैसे कोई दुनिया में न हो अपना यगाना
ख़ाली कभी जाती नहीं बे-लफ़्ज़ सदाएँ
आख़िर को असर कर गईं ख़ामोश दुआएँ
जागा है मुक़द्दर
प्रयाग पे आ कर
अब ग़म न सहेंगे
तन्हा न रहेंगे

प्रयाग पे बहनों को मिलाया है ख़ुदा ने
मुद्दत में ये दिन आज दिखाया है ख़ुदा ने
क्या जोश-ए-मोहब्बत से बग़ल-गीर[2] हुई हैं
वारफ़्तगी-ए-शौक़[3] की तस्वीर हुई हैं

---

1 उजाड़ या सुनसान जगह, वीरान, रेगिस्तान

2 गले मिलना

3 प्रेम में खो जाने की स्थिति

अल्लाह रे मोहब्बत
सरमाया -ए- राहत [1]
ये किस को ख़बर थी
दिल मिलते हैं यूँ भी

होंगी न जुदा हश्र[2] तक अब ऐसे मिली हैं
ख़ुश बहनें हैं या पानी पे कलियाँ सी खिली हैं

[1] राहत की पूँजी

[2] क़यामत

ऐ दरिया-ए-चिनाब

जगन्नाथ आज़ाद

(1918-2005)

शोरिश-ए-आलम[1] से घबरा के ले के दिले-बेताब
तेरे किनारे आ बैठा हूँ ऐ दरिया-ए-चिनाब[2]
तेरा ज़ाहिर ऐसा ठण्डा जैसे देरी नाग
लेकिन तेरे दिल में निहां[3] है जनम जनम की आग
तू इस ख़ाकी दुनिया में है जन्नत की तस्वीर
सोही तेरे दामन में है तेरे किनारे हीर
तेरी लहरों की लय में ख़्वाबीदा[4] है फ़रियाद
तेरा आब-ए-रवां[5] है सस्सी-पुन्नूँ[6] की रूदाद
तेरी मौजों का हर क़तरा एक धड़कता दिल
और धड़कते दिल को तेरी हर मौज-ए-रवां साहिल
मैं हूँ जिस दुनिया का बासी वह है दुनिया और
इस दुनिया का और है सौदा तेरा सौदा और
मेरी दुनिया की ज़ुल्मत में नूर हुआ मस्तूर
तेरा तन भी नूर है प्यारे तेरा मन भी नूर

---

1 दुनिया का कोलाहल
2 चिनाब नदी
3 गुप्त, छिपा हुआ, ओझल
4 नींद में, सोया हुआ
5 बहता पानी
6 मशहूर सिंधी लोक कहानी

दो मंज़र

मीर हसन

(1717-1786)

दरख़्तों की वह छाँव और वह कुछ दूर और धूप
वह धानों की सब्ज़ी वह सरसों का रूप
वह लाले[1] का आलम, हज़ारे का रंग
वह आँखों के डोरे नशे की तरंग
गुलाबी से हो जाता दीवार-ओ-दर
दरख़्तों से आना शफ़क़ का नज़र
वह चादर का छटना वह पानी का ज़ोर
हर इक जानवर का दरख़्तों पे शोर

वह सुनसान जंगल वह नूर-ए-क़मर[2]
वह बर्राक़[3] सा हर तरफ़ दश्त[4]-ओ-दर
वह उज्ला सा मैदाँ, चमकती सी रेत
उगा नूर से चाँद तारों का खेत
दरख़्तों के पत्ते चमकते हुए

---

[1] ट्यूलिप

[2] चांद का नूर, चांद की छिटकती हुई चांदनी

[3] उज्ज्वल, चमकीला, रोशन

[4] मरुस्थल, जंगल, निर्जन क्षेत्र

ख़स-ओ-ख़ार [1] सारे झमकते हुए
दरख़्तों के साए से मह [2] का ज़हूर [3]
गिरे जैसे छलनी से छन-छन के नूर

[1] घास-फूस और कांटे

[2] चाँद

[3] दिखाई पड़ना, प्रकट होना

बहार की एक दोपहर

जोश मलीहाबादी

(1898-1982)

बेचैन हैं हवाएँ, बादल है हल्का-हल्का
भेड़ें चरा रही हैं दोशीज़गान[1] -ए-सेहरा

कुछ लड़कियाँ चने के खेतों में गा रही हैं
कुछ फूल चुन रही हैं, कुछ साग खा रही हैं

बूढ़ा किसान अपनी गाड़ी में जा रहा है
खेतों को देखता है, और सर हिला रहा है

ज़ेर-ए-क़दम[2] जो बर्ग-ए-पज़मुर्दा[3] आ रहे हैं
हर गाम[4] पर कुचल कर नग़मे सुना रहे हैं

ख़ुर्शीद[5] बादलों में कश्ती जो खे रहा हैं
कव्वों का बोलना तक इक लुत्फ़ दे रहा है

---

1 कुंवारगी, कन्या

2 पैरों के नीचे

3 सूखे पत्ते

4 रास्ता

5 सूरज

खेतों पे धुंदली-धुंदली किरणें चमक रही हैं
सरसब्ज़[1] झाड़ियों में चिड़ियाँ फुदक रही हैं

सूरज है सर पे, बादल साया किए हुए हैं
ठण्डी हवा के झोंके गर्मी लिए हुए हैं

ग़ुंचे[2] चटक रहे हैं गुलज़ार-ए-ज़िंदगी के
दर खुल रहे हैं दिल पर असरार-ए-ज़िंदगी[3] के

ख़ुद अपने हाफ़िज़े[4] में जलवे दिखा रहा हूँ
मैं खो गया हूँ ऐसा, अपने को पा रहा हूँ

---

1 हरी-भरी

2 कलियाँ

3 ज़िंदगी के राज़

4 स्मरण शक्ति, याददाश्त

चरवाहे की बंसी

अख़्तर शीरानी

(1905-1948)

शफ़क़[1] का छाँव में चरवाहा जब बंसी बजाता है
तसव्वुर[2] में मेरे माज़ी[3] के नक्शे खींच लाता है
नज़र में एक भूला-बिसरा आलम लहलहाता है
मेरे अफ़कार-ए-तिफ़ली[4] को है निस्बत[5] उसके नग़्मों से
मैं बचपन में किया करता था उल्फ़त उसके नग़्मों से
जभी बंसी की लय में अहदे-तिफ़ली[6] झिलमिलाता है
वह खेतों की क़तारें और वह नज़ारा बाग़ों का
वह दरिया का किनारा और वह गहवारा बाग़ों का
रसीली बाँसुरी के हमहमों में झिलमिलाता है
नज़र में झूमता है बन के रंगीं ख़्वाब का आलम
वह सेहरा के नज़ारे और वह महताब का आलम
वही अफ़साना उस बंसी के लब पर गुनगुनाता है

[1] सूर्य के निकलने और डूबने के समय क्षितिज पर दिखाई देने वाली लाली
[2] ख़याल, कल्पना
[3] अतीत
[4] बचपन के विचार, दृष्टिकोण एवं ख़्यालात
[5] लगाव, संबंध, ताल्लुक
[6] लड़कपन, बचपन, बाल्यावस्था का समय

धान के खेत

फ़य्याज़ुद्दीन अहमद फ़य्याज़

यह धान के नन्हे पौदे हैं, हरियाली के दिल बादल हैं
या काही-रंग[1] की गोट लगी है, हल्के धानी आँचल में
रिमझिम जो बरसता निकला है इक अब्र का टुकड़ा खेतों पर
क्या ख़ूब नहा कर निखरे हैं फ़ितरत के हसीं गंगाजल में
हर सुब्ह बिखरते हैं मोती, सब्ज़े में निखरते हैं मोती
शबनम का ख़ज़ाना होता है, धानों की ज़ुमुर्रुदीं-छागल[2] में
खेतों की फ़राज़-ओ-पस्ती[3] में यूँ झूम रही है बाद-ए-सहर[4]
जैसे कोई मस्त शराब पिए, फिरता हो भटकते जंगल में
सुब्हों के सुहाने मंज़र हैं, रंगीं हैं नज़ारे शामों की
फूली है शफ़क़, उट्ठी है घटा, धानों को डुबोने जल-थल में
बढ़ती हुई शाम की ज़ुल्मत[5] में यूँ अक्स शफ़क़ का डूबा है
जिस तरह किसी दो-शीज़ा[6] की मस्ती भरी आँखें काजल में
बरसात की रुत, सावन का महीना और जवानी का मौसम
मैके में उरूस-ए-फ़ितरत[7] है, मंगल मनते हैं जंगल में

---

[1] घास-जैसे रंग का, हरा

[2] नीलापन लिए हरे रंग का मशकीज़ा, मिट्टी धात या चमड़े का वो बर्तन जिस में पानी भर कर मुसाफ़िर अपने साथ ले जाते हैं.

[3] ऊँच-नीच

[4] प्रातःकाल में हलकी हलकी चलने वाली वायु, सुबह के वक़्त पूर्व दिशा से चलने वाली शीतल और मंद वायु

[5] अंधकार

[6] कन्या

[7] प्रकृति की दुल्हन

देहात के रंगीं पोश यहाँ, जब खेत को नींद नय आते हैं
धानों के हरे-भरे खेतों में, सौ ग़ुंचा-ओ-गुल[1] खिल जाते हैं

ख़ुद-रू-पौदों[2] के साथ उगना भाता नहीं नाज़ुक धानों को
यह ग़ैरत कुम्ला[3] देती है इन नन्हीं-नन्ही जानों को
नींद से जो न जाएँ खेत कहीं, मिट जाए ये सब तख़्लीक़-हसीं[4]
मेहनत करना ही पड़ती है दिन-दिन फिर कुछ इंसानों को
धानों की नज़ाकत कहती है यह काम है सिन्फ़-ए-नाज़ुक[5] का
इस सिन्फ़ के क़दमों में पड़ कर मिलती है जवानी धानों को
थक कर वह जब इक लम्हे के लिए अंगड़ाई लेती उठती है
आ जाती है रौनक़ खेतों पर, मिलती है तरावत[6] धानों को
ऐ माल-ए-मग़ाम कुछ सुनता है, इन धानों की क्या बिपता है
वह हाथ पका कर पकते हैं तू खाता है जिन धानों को
सूरज ने कुछ सराही मेहनत, बादल ने कुछ बढ़ाई हिम्मत
लेकिन तेरी ना-शुक्री फ़ितरत, भूली सारे एहसानों को
इनसे ही हुकूमत पलती है, ख़लक़त[7] के यही अन्नदाता हैं
तन ढकने का मक़दूर[8] नहीं जिन बद-क़िस्मत इंसानों को
फ़य्याज़ ये धान के खेत नहीं, इक दर्द भरा अफ़साना है
मज़लूम की सूखी रोटी हैं और ज़ालिम का पैमाना हैं

---

[1] कली और फूल

[2] अपने आप उगा हुआ, प्राकृतिक रूप से उगने वाला, जो वोया न गया हो, खरपतवार

[3] मुर्झा जाना या मुर्झाना

[4] ख़ूबसूरत उत्पत्ति

[5] स्त्रीवर्ग, महिलाएँ, स्त्रियाँ

[6] ताज़गी, हरा-भरा

[7] जनसमूह

[8] ताकत, शक्ति, सामर्थ्य

सुब्ह की बहार

उफ़ुक़ लखनवी

(1869-1913)

पुर्ज़े-पुर्ज़े है गुल का दामाँ
सद-चाक [1] है सुब्ह का गिरेबाँ
आँखें मलते हैं ग़ुंचा-ए-तर [2]
छींटे देती है ओस मुंह पर
आवाज़-ए-जरस [3] जगा रही है
शानों को सबा हिला रही है
फूली [4] शफ़क़ आसमाँ पर है
तड़का हुआ नूर-ए-सहर [5] है

मह ने रह-ए-इल्तिफ़ात काटी
सुरख़ाब [6] ने ग़म की रात काटी
वह चाँद जो मार-ए-शब का मन था
वह चाँद जो शम-ए-अंजुमन था

---

[1] जो बहुत जगह से फटा हो, जो टुकड़े-टुकड़े हो

[2] भीगी कली

[3] घंटे की आवाज़,(विशेष रूप से) कारवाँ (क़ाफ़िला) की घंटी की आवाज़

[4] खिली हुई

[5] सुबह की रोशनी

[6] चकवा नामक पक्षी सुरखाब (चकवा) सुर्ख़ रंग का एक आबी (पानी) परिंदा जिस के नर और मादा रात भर जुदा रहते और एक दूसरे को पुकारते और इस की आवाज़ के पीछे जाते मगर मिल नहीं पाते

गुम मिस्ल-ए-शरर हुआ चमक के
जुगनू की तरह छिपा चमक के

शबनम जो थी जो महव-ए-दरफ़िशानी
है बहर-ए-वज़ूए गुल वह पानी
बाग़ों में नसीम चल रही है
परियों की तरह टहल रही है
गुल लहन-ए-तयूर[1] सुन के सुन्न है
हर मुर्ग़ को भैरवीं की धुन है
हर इक कली महक रही है
उंगली की तरह चटक रही है

[1] परिंदों की सुरीली आवाज़

रात

मोलवी मोहम्मद इस्माईल मेरठी

(1844-1917)

गया दिन हुई शाम आई है रात
ख़ुदा ने अजब शय बनाई है रात
न हो रात तो दिन की पहचान क्या
उठाए मज़ा दिन का इंसान क्या
हुई रात ख़िल्क़त [1] छुटी काम से
ख़मोशी सी छाई सर-ए-शाम से
लगे होने अब हॉट बाज़ार बंद
ज़माने के सब कार [2] बेहवा बंद
मुसाफ़िर ने दिन भर किया है सफ़र
सर-ए-शाम मंज़िल पे खोली कमर
दरख़्तों के पत्ते भी चुप हो गए
हवा थम गई पेड़ भी सो गए
अँधेरा उजाले पे ग़ालिब हुआ
हर इक शख़्स राहत का तालिब हुआ
हुए रोशन आबादियों में चराग़
हुआ सब को मेहनत से हासिल फ़राग़

---

[1] प्रकृति

[2] काम, कार्य

किसान अब चला खेत को छोड़ कर
कि घर में करे चैन से शब बसर
ग़रीब आदमी जो कि मज़दूर हैं
मशक़्क़त से जिन के बदन चूर हैं
वो दिन भर की मेहनत के मारे हुए
वो माँदे थके और हारे हुए
निहायत ख़ुशी से गए अपने घर
हुए बाल बच्चे भी ख़ुश देख कर
गए भूल सब काम धंधे का ग़म
सवेरे को उट्ठेंगे अब ताज़ा-दम

कहाँ चैन ये बादशह को नसीब
कि जिस बे-ग़मी से हैं सोते ग़रीब

तुलूअ-ए-आफ़ताब[1]

मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ां ग़ालिब

(1797-1869)

सुब्ह दम दरवाज़ा-ए-ख़ावर खुला
महर-ए-आलम-ताब [2] का मंज़र खुला
ख़ुसरू-ए-अंजुम के आया सिर्फ़ मैं
शब को था गंजीना-ए-गौहर खुला
वह भी थी इक सीमिया की सी नुमूद
सुब्ह को राज़-ए-मह-ओ-अख़्तर खुला
हैं कवाकिब कुछ नज़र आते हैं कुछ
देते हैं धोका ये बाज़ीगर खुला
सतह-ए-गर्दूं [3] पर पड़ा था रात को
मोतियों का हर तरफ़ ज़ेवर खुला
सुब्ह आया जानिब-ए-मश्रिक़ [4] मगर
इक निगारीं आतिश-ए-रुख़, सर खुला

---

[1] सूर्योदय

[2] दुनिया को रोशन करने वाला सूरज

[3] आसमान की सतह पर

[4] पूरब की ओर

शाम

निदा फ़ाज़ली

(1938-2016)

सूखे कपड़ों को छत से चुनती हुई
पीली किरणों का हार बुनती हुई
गीले बालों में तौलिया लिपटाए
हाथ में इक कटी पतंग उठाए
दाएँ बाज़ू पे थोड़ी धूप सजाए
सीढ़ियों से उतर के आई है
बजते हाथों से चिमनियाँ धोकर
घर के हर काम से सुबुक होकर
पालने को झुला रही है शाम
प्यालियों में खिला रही है शाम
चंदा मामूं उगा रही है शाम

मौसम-ए-बहार

मिर्ज़ा मुहम्मद रफ़ी 'सौदा'

(1713-1781)

सज्दा-ए-शुक्र में है जो शाख़े-समरवार[1] हर एक
देख कर बाग़-ए-जहां में करमे-अज़्ज़-ओ-जल[2]

वास्ते ख़िलअत-ए-नौरोज़ के हर बाग़ के बीच
आब-ए-जू[3] क़तअ लगी करने रविश पर मख़मल

बख़्शी है गुले-नौ-रुस्ता[4] की रंग-आमेज़ी[5]
पोशिश-ए-छींट क़लमकार बहर-ए-दश्त-ओ-जबल

अक्स-ए-गुल[6] बन पे ज़मीं है कि जिसके आगे
कार-ए-नक़्क़ाशी-ए-मानी है दोम[7], वह अव्वल

---

[1] फलों से लदी शाख़ा

[2] जो ग़ालिब और महान हो, ईश्वर के नाम के साथ बोलते हैं

[3] नदी, नहर, जलाशय

[4] नया नया खिला हुआ फूल, ताज़ा फूल

[5] चित्र-कर्म, नक्क़ाशी

[6] फूल की परछाईं

[7] द्वितीय

साया-ए-बर्ग[1] है इस लुत्फ़ से हर इक गुल पर
साग़र-ए-लाल में जूँ कीजिए ज़मर्रुद को हल

बार से आब-ए-रवाँ अक्स-ए-हुजूम-ए-गुल के
लोटे हैं सब्ज़े पे अज़-बस-कि[2] हवा है बेकल[3]

आब-ए-जू गर्दे-चमन लाला-ए-ख़ुर्शीद से है
ख़त-ए-गुलज़ार[4] के सफ़हे पे तलाई जदवल[5]

चश्मे-नरगिस[6] की बसारत[7] कि-ज़े-बस[8] है दर पे
ग़ुंचा-ए-लाला[9] ने सुरमा से भरी है मकजल

लड़खड़ाती हुई फिरती है ख़्याबाँ[10] में नसीम
पाँव रखती है सबा[11] सेहन में गुलशन से संभल

---

1 पत्तियों की छाया

2 इसलिये

3 व्याकुल, विकल, बेचैन

4 बाग़ की ख़ूबसूरती

5 नहर, छोटी नदी

6 जिसकी आँखें बड़ी और नरगिस के समान हों, ख़ूबसूरत आँखों वाला

7 बुद्धी, समझ, दृष्टिकोण, सोच

8 बहुत, अधिक, काफ़ी

9 फूल की कली

10 उद्यान, बाग़, चमन

11 सुबह की हवा, पूरब की ओर से आने वाली अच्छी और ठंढी हवा जो प्रिय लगती है.

मौसमों का गीत

अली सरदार जाफ़री

(1913-2000)

कितने दिलकश हैं मेरे मुल्क के मौसम, इन में
हुस्न की बात करें, इश्क़ पर इसरार करें
नूर-ए-महबूब से रोशन करें आँखों के चिराग़
फूल की तरह से ज़िक्रे-लब-ओ-रुख़सार [1] करें
मुसहफ़-ए-हक़ [2] की तरह खोलें किताब-ए-दिल को
जिसमें जंग और जदल का कोई अफ़साना नहीं
फ़सले-गुल फ़सले-ख़िज़ाँ, फ़सले-ज़मिस्ताँ है मगर
मौसम-ए-जंग नहीं, मौसम-ए-वीराना नहीं

(1)

गर्मियां आई हैं बरसाती हुई अंगारे
देखना शोला बदन धूप पे आया है शबाब
लोग तालाबों में उतरे हैं नहाने के लिए
तह-नशीं होती चली जाती है हर चादर-ए-आब
इक ज़रा देर को थोड़ा सा सुकूँ मिलता है
जिस्म को छूता है जिस वक़्त ख़नक शाम का हाथ
इतनी सोज़िश है कि बस सर्द हुई गर्मी-ए-इश्क़
प्यार के मुँह से निकलती ही नहीं प्यार की बात

---

[1] होंट और गाल का ज़िक्र

[2] पवित्र क़ुरआन

नींद आ सकती नहीं इश्क़ के बीमारों को
इन दिनों जागते रहने के बहाने हैं बहुत
तैरती रही हैं दुनिया की सुरीली तानें
गीत शीरीं है बहुत, नर्म तराने हैं बहुत

आब-ए-संदल में डुबोए हुए पंखों की हवा
अपने महके हुए हाथों से थपक देती है
और धड़कते हुए सीनों पे धड़कते हुए हाथ
हर लड़ी मोती की बस जान ही ले लेती है

आग बरसाती हुई किरणों का जलाल
तेज़ और तुंद हो जिस तरह हवन का शोला
दुश्मनी साँप की ताऊस [1] से बस ख़त्म हुई
वह भी ताऊस से देरीना अदावत [2] भूला
इतनी गर्मी है कि खुलती नहीं मिंक़ार [3] उसकी
भूक बाक़ी नहीं क्या जाए ग़िज़ा के पीछे
धूप की जलती हुई आग से बचने के लिए
साँप आ बैठा है रंगीन परों के नीचे
मेरी जाँ ऐ मेरे नग़्मों की जवाँ शहज़ादी
फ़स्ल-ए-गर्मा [4] सहर-ओ-शाम तुझे रास आए
चाँदनी रात सजाए तेरी महकी हुई सेज
जिस्म-ए-सीमीं [5] के लिए फूलों के तोहफ़े लाए

---

[1] मोर

[2] दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष

[3] चोंच

[4] गर्मी का मौसम

[5] चाँदी सा बदन

तेरी सुब्हों को रखे सर्द कंवल की झीलें
ठण्डे पानी के उछलते हुए फ़व्वारों से
तेरी शामों को तेरे चाहने वाले मिल जाएँ
जो चुनें फूल तेरे हुस्न के गुलज़ारों से
धूप बे जान हो गीतों की घटा छाई हो
तू हो, अहबाब हों और गोशा-ए-तन्हाई हो

(2)

देखना मेघ का वह शाह-सवार आ पहुंचा
गूंज उठे वह दमन गूंज उठे दश्त-ओ-जिबाल
घन गरज वह है मेरी जान की शाही डंके
जिस तरह बजते हैं मैदाँ में बसद शान-ए-जलाल
बिजली लहराती है शोलों का सुनहरी परचम
अब्र के फ़ील पे बारिश की शहंशाह सवार
घर से सब उसके स्वागत को निकल आए हैं
ग़ौल-ए-इश्शाक़ के बद-मस्त हसीनों की क़तार
फ़ौजें बादल की चली आती हैं करती हुई कूच
चोट पड़ती है गरजते हुए नक़्क़ारों [1] पर
आग की डोर है रंगों की कड़कती है कमाँ
बिजलियाँ बाँध गईं इंद्रधनुष पर कस कर
छींटा बारिश का है या तीरों की बौछारें हैं
जो किए देती हैं मतवालों के दिल को छलनी
इश्क़ तो ज़ख़्म-रसीदा [2] है सितम-दीदा [3] है

---

[1] नगाड़ा नाम का बाजा

[2] क्षत, आहत, घायल, नुक़्सान उठाया हुआ

[3] वो व्यक्ती जिसका उत्पीडन हुआ हो, उत्पीड़ित, सताया हुआआ

आज तो हुस्न पे भी होती है नावक-फ़िगनी [1]
ऐसा लगता है कि हंसने लगा जंगल सारा
और नीपा के दरख़्तों में नए फूल खिले
शाख़ें बेताब हवाओं में नृत्य करने लगीं
जैसे मदहोशी के आलम में कोई रक़्स करे
आई नौ-रुस्ता [2] शगूफ़ूं के लबों पर हल्की
दिल-नवाज़ाना तबस्सुम की दिल-आवेज़ लकीर
दर्द बाक़ी है तपिश का न निशाँ गर्मी का
निकली बरसात जो पहने हुए पोशाक-ए-हरीर [3]

तुझको ऐ नूर की तस्वीर मुबारक हो ये दिन
ले के आए हैं जो घंघोर घटाओं का प्याम
आतिश-ए-शौक़ में जल जाए जवानी तेरी
नौ-उरूसी [4] को ऐश व मर्सरत का सलाम
ज़िंदगी जिससे तर-ओ-ताज़ा है उस बारिश से
धान के खेत वह उस्तादा समरदार [5] दरख़्त
झूम उठते हैं जब आते हैं हवा के झोंके
ले के आग़ोश में जब नाचती है बाद-ए-ख़िज़ाँ
फूल ही फूल बरस जाते हैं पेड़ों के तले
झुरझुरी लेती हैं आहिस्ता कँवल की झीलें
कलियाँ मुँह चूक के कलियों के झिझक जाती हैं
इश्क़ के मारों को आता है मोहब्बत का ख़्याल

---

[1] तीर चलाना, तीर फेंकना

[2] नया जमा हुआ, नया उगा हुआ, जो अभी पैदा हुआ हो

[3] एक रेशमी और बारीक कपड़ा

[4] नया विवाह, दुल्हन

[5] फलदार

ख़्वाहिशें दिल के कटोरों से छलक जाती हैं
इस ख़िज़ाँ में भी मगर तू है बहारों की बहार
नौजवाँ जिस्म के गुल रंग शगूफ़े फूटीं
प्यार के हाथ मोहब्बत से सँवारे तुझको
कभी होंटों कभी मुश्ताक़ निगाहों से छुएँ
मुस्कुराए तेरे पैरों की हिना और महके
ज़ाफ़राँ जिस्म की सीने का सुनहरा संदल
दिल पे इश्शाक़ के ज़ुल्फ़ों की घटाएँ बरसें
ढूँढ़ें ख़ुद भँवरों की हंसती हुई आँखों के कँवल

(3)

जा चुकी फ़स्ल-ए-ख़िज़ाँ[1], फ़स्ल-ए-ज़मिस्ताँ[2] आई
कोई तन्हा सी कली शाख़ पे नम-दीदा[3] आई
सब्ज़ बेलों की तरह तू भी तर-ओ-ताज़ा है
मेरी महबूबा पे हो रहमत-ए-हक़ की बारिश
जगमगाता हुआ रुख़सार रहे ग़ाज़ा[4] रहे

(4)

लो वह आती है ख़िज़ाँ, गाँव की कुँआरी जैसे
नाज़-ओ-अंदाज़ की जाँ, हुस्न की नाज़ुक मूरत
बालियाँ धान की बालों में सजा रखी है
दोनों रुख़सार दमकते हैं कँवल की सूरत
जिस्म पर घास के फूलों का महकता मलबूस
अपनी रफ़्तार पे हंसों को भी शर्माती हुई

---

[1] पतझड़ का मौसम

[2] जाड़े की ऋतु, शीतकाल

[3] रोती हुआ

[4] मुँह पर मलने का पाउडर, सुगंधित पाउडर जो सुंदरता के लिए चेहरे पर लगाया जाता है

उसके स्वागत में चहक उठती हैं चिड़ियाँ जैसे
किसी माशूक़ा की पायल की सदा आती हुई

रात की माँग में तारों की सुनहरी अफ़्शाँ
ताज-ए-महताब से कुछ और भी रोशन है जबीं
पैरहन [1] चाँद की किरणों का चमकता रेशम
इतना शफ़्फ़ाफ़ कि बादल का कहीं नाम नहीं
हंसती है देख के मुँह चाँद के आईने में
पड़ती है साँवले मुखड़े पे तबस्सुम की फुवार
ऐसा लगता है कि नौ-उम्र है, दो-शीज़ा है
अभी आने को है भरपूर जवानी की बहार
अपने दामन में लिए अपने सुनहरे मोती
खूशा-ए-गंदुम-ए-नौ खेत में बालीदा है
ग़म न कर जान-ए-जहाँ, लुट गई गर दौलत-ए-गुल
सख़्त जाँ फूल कोई अब भी नज़र आता है
बर्फ़-ओ-बाराँ [2] से भी बुझता नहीं शोला उसका
सर्द और तेज़ हवाओं में भी लहराता है
बर्फ़-आलूदा हवाओं में लरज़ती बेलें
याद आती है उन्हीं मौसम-ए-ताबिस्ताँ की
कुछ तो मिल जाती है यादों से हरारत दिल को
जुस्तुजू दर्द को है खोए हुए दरमाँ की
ज़िंदगी को वह तड़प है कि अभी ज़िंदा हैं
फिर भी पीली सी नज़र आती हैं कुम्हलाई हुई

[1] पोशाक, वस्त्र

[2] बर्फ़ और बारिश

जिस तरह हिज्र की मारी हो सुहागन कोई
जैसे दो-शीज़ा कोई इश्क़ की तरसाई हुई

काश यह फ़स्ल-ए-ज़मिस्ताँ हो तेरी फ़स्ल-ए-उम्मीद
हर घड़ी आए मसर्रत के फ़साने लेकर
मुंतज़िर रहती हैं जिसके लिए दो-शीज़ाएँ
रोज़-ओ-शब[1] आएँ वह राहत के ख़ज़ाने लेकर
गाँव में शोर है, हंगामा है, आवाज़ें हैं
पक चुके खेत तो खलियान में आता है अनाज
दूर आकाश पे उड़ते हुए बगुलों की क़तार
हुस्न को तेरे मिले इश्क़-ओ-मुहब्बत का ख़िराज

(5)

ऐ मेरी जाँ, मुझे इज़्न-ए-सुख़न आराई से
नौ-बहार आई है, नग़्मों पे बहार आ जाए
नौ-बहारान-ए-गुल-अंदाम के दिल हँसने लगे
उनकी बेताब तमन्ना को क़रार आ जाए
भर गई नाच के ढेरों से ज़मीं की गोदी
बढ़ गई और भी हर सीने की शौक़-अंगेज़ी[2]
दूर से आती है सारस के कलेजे की पुकार
फ़स्ल ये वो है कि ख़ुश होते हैं सब मिलजुल कर
जमा हो जाते हैं जब जलती हुई आग के पास
घर से बाहर जो निकलते हैं तो सूरज के लिए

[1] दिन-रात

[2] इच्छा या लालसा बढ़ाने वाला, तीव्र आवेग जगाने वाली

सर्दी-ए-जिस्म बढ़ा देती है कुछ जिस्म की प्यास
ज़ेब-ए-तन अतलसो [1] -पश्मीना-ओ-संजाबो-समूर [2]
अब जो चलती हैं चलें सर्द हवाएँ हर-सू
खिड़कियां बंद हैं और लिपटी हुई है तन से
भीनी-भीनी किसी दो-शीज़ा बदन की ख़ुश्बू
नौ-बहारों के ये दिन तुझको करें आसूदा
रंग-ए-आरिज़ [3] से तेरे हुस्न की हो गुल-पोशी
ख़ुश करे इश्क़ की गुस्ताख़-ए-निगाही तुझको
तुझको सरशार करे लज़्ज़त-ए-हम-आग़ोशी
नेशकर [4] रस की लताफ़त से दहन को भर दे
लब-ए-शीरीं में हो चावल के निवालों की मिठास
तेरी हस्ती से रहे दूर बहुत दर्द-ए-फ़िराक़ [5]
तेरी क़िस्मत में न हो हिज्र की रातों का हिरास

(6)

आख़िरश [6] मौसम-ए-गुल देर-ओ-सुस्त आ ही गया
अपने हाथों में लिए इश्क़ की रंगीं कमान
काले भँवरों की क़तारों की लचकती डोरी
आम के बोर के तीर आते हैं या प्रेम के बान
छेदते हैं ये मेरे दिल को, तेरी सीने को
हम तो ऐ चन्द्र दौन-ए-इश्क़ के मतवाले हैं

---

[1] एक बहुमूल्य रेशमी वस्त्र

[2] मूल्यवान चीज़

[3] गाल, रुख़सार का रंग

[4] गन्ना, ईख

[5] जुदाई का दर्द

[6] अंततः, अंततोगत्वा, आख़िर

हमने कब इश्क़ के देवता से किया है इंकार
हमने क्या शौक़ के पैग़ाम कभी टाले हैं?
जोश-ए-गुल यह है कि शाख़ों की झुकी है गर्दन
और हवा चलती है महकी हुई, इतराई हुई
झीलें हैं सुर्ख़ कटोरों से कँवल के रौशन
औरतें इश्क़ की किरणों से हैं गदराई हुई
दिन, सुबुक, नर्म, रवाँ, शाम हसीन-ओ-शादाब
दिल के ले लेने का अंदाज़ उन्हें आता है
जो भी इस फ़स्ल में बालीदा-ओ-रूईदा [1] है
बूए-गुल-गुल, रंग-ए-बहाराँ में बदल जाता है

बेला फूला है कि जलते हैं ख़्याबाँ में चिराग़
नूर का कुंज नज़र आता है मधु बन के
जिस तरह इश्क़ में हँसती है हसीना कोई
जगमगा उठते हैं रुख़सारों के गुलशन जैसे
ज़ाहिद-ए-ख़ुश्क की भी ख़ैर नहीं है कि रवाँ
हर तरफ़ हुस्न की और इश्क़ की तनवीरें हैं
नौजवाँ सीनों में जज़्बात हैं या आवेज़ाँ
वस्ल के ख़्वाबों की हँसती हुई तस्वीरें हैं
फ़स्ल-ए-गुल आई है या फ़स्ल-ए-ख़िज़ाँ आई है
एक माशूक़ा-ए-ख़ुर्शीद-ए-जमाल आई है
कितने दिलकश हैं मेरे मुल्क के मौसम इनमें
हुस्न की बात करें इश्क़ पर इसरार करें

[1] बढ़ा हुआ, विकसित, प्रौढ़, सयाना

नूर महबूब से रौशन करें आँखों के चिराग़
फूल की तरह से ज़िक्र-ए-लब-ओ-रुख़सार करें
मुसहफ़-ए-हक़ की तरह खोलें किताब-ए-दिल को

बरसात की बहारें

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

हैं इस हवा में क्या क्या बरसात की बहारें
सब्ज़ों की लहलहाहट बाग़ात की बहारें
बूंदों की झमझमावट क़तरात की बहारें
हर बात के तमाशे हर घात की बहारें
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बादल हवा के ऊपर हो मस्त छा रहे हैं
झड़ियों की मस्तियों से धूमें मचा रहे हैं
पड़ते हैं पानी हर जा जल-थल बना रहे हैं
गुलज़ार भीगते हैं सब्ज़े[1] नहा रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

मारे हैं मौज डाबर दरिया दौंड रहे हैं
मोर-ओ-पपीहे कोयल क्या क्या रुमंड रहे हैं
झड़ कर रही हैं झड़ियाँ नाले उमँड रहे हैं
बरसे है मुँह झड़ा झड़ बादल घुमंड रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

[1] हरी घास, हरियाली

जंगल सब अपने तन पर हरियाली सज रहे हैं
गुल फूल झाड़-बूटे कर अपनी धज रहे हैं
बिजली चमक रही है बादल गरज रहे हैं
अल्लाह के नक़ारे नौबत के बज रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बादल लगा टकोरें नौबत की गत लगावें
झींगुर झंगार अपनी सुरनाइयाँ बजावें
कर शोर मोर बगुले झड़ियों का मुँह बुलावें
पी पी करें पपीहे मेंडक मलारें गावें
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

हर जा बिछा रहा है सब्ज़ा हरे बिछौने
क़ुदरत के बिछ रहे हैं हर जा हरे बिछौने
जंगलों में हो रहे हैं पैदा हरे बिछौने
बिछवा दिए हैं हक़ ने क्या क्या हरे बिछौने
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

सब्ज़ों की लहलहाहट कुछ अब्र की सियाही
और छा रही घटाएँ सुर्ख़ और सफ़ेद काही
सब भीगते हैं घर घर ले माह-ता-ब-माही
ये रंग कौन रंगे तेरे सिवा इलाही
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

क्या क्या रखे हैं या रब सामान तेरी क़ुदरत
बदले है रंग क्या क्या हर आन तेरी क़ुदरत

सब मस्त हो रहे पहचान तेरी क़ुदरत
तीतर पुकारते हैं सुबहान तेरी क़ुदरत
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोयल की कूक में भी तेरा ही नाम हैगा
और मोर की ज़टल में तेरा पयाम हैगा
ये रंग सौ मज़े का जो सुब्ह-ओ-शाम हैगा
ये और का नहीं है तेरा ही काम हैगा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बोलीं बए बटेरें क़ुमरी पुकारे कू-कू
पी पी करे पपीहा बगुले पुकारें तू-तू
क्या हुदहुदों[1] की हक़ हक़ क्या फ़ाख़्तों की हू हू
सब रट रहे हैं तुझ को क्या पँख क्या पखेरू[2]
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की मारें

जो मस्त हों इधर के कर शोर नाचते हैं
प्यारे का नाम ले कर क्या ज़ोर नाचते हैं
बादल हवा से कर कर घनघोर नाचते हैं
मेंडक उछल रहे हैं और मोर नाचते हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

फूलों की सेज ऊपर सोते हैं कितने बन-बन
सो हैं गुलाबी जोड़े फूलों के हार अबरन

---

[1] एक प्रसिद्द सुंदर पक्षी जिसके सर पर मुकुट होता है, कठफोड़वा, wood-pecker

[2] पक्षी, चिड़िया

कितनों के घर है खाना सोना लगे है आँगन
कोने में पड़ रही हैं सर मुँह लपेट सोगन
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो ख़ुश हैं वो ख़ुशी में काटे हैं रात सारी
जो ग़म में हैं उन्हों पर गुज़रे है रात भारी
सीनों से लग रही हैं जो हैं पिया की प्यारी
छाती फटे है उन की जो हैं बिरह[1] की मारी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो वस्ल में हैं उन के जूड़े महक रहे हैं
झूलों में झूलते हैं गहने झमक रहे हैं
जो दुख में हैं सो उन के सीने फड़क रहे हैं
आहें निकल रही हैं आँसू टपक रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

अब बिरहनों के ऊपर है सख़्त बे-क़रारी
हर बूँद मारती है सीने उपर कटारी
बदली की देख सूरत कहती हैं बारी बारी
है है न ली पिया ने अब के भी सुध हमारी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जब कोयल अपनी उन को आवाज़ है सुनाती
सुनते ही ग़म को मारे छाती है उमंडी आती
पी पी की धुन को सुन कर बेकल[2] हैं कहती जाती

---

[1] वियोग, जुदाई

[2] बेचैन

मत बोल ऐ पपीहे फटती है मेरी छाती
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

है जिन की सेज सूनी और ख़ाली चारपाई
रो रो उन्हों ने हर-दम ये बात है सुनाई
परदेसी ने हमारी अब के भी सुध भुलाई
अब के भी छावनी जा परदेस में है छाई
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितनों ने अपनी ग़म से अब है ये गत बनाई
मैले कुचैले कपड़े आँखें भी डबडबाई
ने घर में झूला डाला ने ओढ़नी रंगाई
फूटा पड़ा है चूल्हा टूटी पड़ी कढ़ाई
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

गाती है गीत कोई झूले पे कर के फेरा
मारो जी आज कीजिए याँ रैन का बसेरा
है ख़ुश किसी को आ कर है दर्द-ओ-ग़म ने घेरा
मुँह ज़र्द[1] बाल बिखरे और आँखों में अँधेरा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

और जिन को अब मुहय्या[2] हुस्नों की ढेरियाँ हैं
सुर्ख़ और सुनहरे कपड़े इशरत की घेरियाँ हैं
महबूब दिलबरों की ज़ुल्फ़ें बिखेरियाँ हैं

[1] पीले

[2] उपलब्ध, मौजूद

जुगनू चमक रहे हैं रातें अँधेरियाँ हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने तो भंग पी पी कपड़े भिगो रहे हैं
बाहें गुलों में डाले झूलों में सो रहे हैं
कितने बिरह के मारे सुध अपनी खो रहे हैं
झूले की देख सूरत हर आन रो रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बैठे हैं कितने ख़ुश हो ऊँचे छुआ के बंगले
पीते हैं मय के प्याले और देखते हैं जंगले
कितने फिरे हैं बाहर ख़ूबाँ को अपने संग ले
सब शाद हो रहे हैं उम्दा ग़रीब कंगले
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितनों को महलों अंदर है ऐश का नज़ारा
या साएबान सुथरा या बाँस का उसारा
करता है सैर कोई कोठे का ले सहारा
मुफ़्लिस भी कर रहा है पोले तले गुज़ारा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

छत गिरने का किसी जा ग़ुल शोर हो रहा है
दीवार का भी धड़का कुछ होश खो रहा है
दर दर हवेली वाला हर आन रो रहा है
मुफ़्लिस सो झोपड़े में दिल-शाद सो रहा है
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

मुद्दत से हो रहा है जिन का मकाँ पुराना
उठ के है उन को मेंह में हर आन छत पे जाना
कोई पुकारता है टुक मोरी खोल आना
कोई कहे है चल भी क्यूँ हो गया दिवाना
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोई पुकारता है लो ये मकान टपका
गिरती है छत की मिट्टी और साएबान[1] टपका
छलनी हुई अटारी कोठा निदान[2] टपका
बाक़ी था इक उसारा[3] सो वो भी आन टपका
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

ऊँचा मकान जिस का है पच-खना[4] सिवाया
ऊपर का खन टपक कर जब पानी नीचे आया
उस ने तो अपने घर में है शोर-ग़ुल मचाया
मुफ़्लिस पुकारते हैं जाने हमारा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

सब्ज़ों पे बीर भूटी टीलों उपर धतूरे
पिस्सू[5] से मच्छरों से रोए कोई बिसूरे[6]
बिच्छू किसी को काटे कीड़ा किसी को घूरे

---

[1] घर के आगे या छत पर लगाया गया शेड, छप्पर

[2] अंततः, आख़िरकार

[3] बरामदा

[4] जिसमें पाँच खंड या मंजिलें हों

[5] एक प्रकार का छोटा उड़ने वाला कीड़ा जो मच्छर की तरह शरीर का ख़ून चूसता है

[6] रोती सी शक्ल बनाना, हल्के-हल्के रोना

आँगन में कनसलाई[1] कोनों में खनखजूरे[2]
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

फुँसी किसी के तन में सर पर किसी के फोड़े
छाती ये गर्मी दाने और पीठ में दरोड़े
खा पूरियाँ किसी को हैं लग रहे मरोड़े
आते हैं दस्त जैसे दौड़ें इराक़ी घोड़े
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

पतली जहाँ किसी ने दाल और कढ़ी पकाई
मक्खी ने वोहीं बोली आ ऊँट की बुलाई
कोई पुकारता है क्यूँ ख़ैर तो है भाई
ऐसे जो खाँसते हो क्या काली मिर्च खाई
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जिस गुल-बदन के तन में पोशाक सौसनी है
सो वो परी तो ख़ासी काली-घटा बनी है
और जिस पे सुर्ख़ जोड़ा या ऊदी[3] ओढ़नी है
उस पर तो सब घुलावट बरसात की छनी है
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

बदनों में खब रहे हैं ख़ूबों के लाल जोड़े
झमकें दिखा रहे हैं परियों के लाल जोड़े

---

[1] कीड़ा जो प्रायः कान में प्रवेश कर जाता है

[2] कनखजूरा, एक ज़हरीला कीड़ा जो 5 या 6 इंच लंबा होता है, जिसके बहुत से पांव या पंजे होते हैं और जब वो चिमटता है तो पंजे गाड़ देता है और हटाने पर गोश्त नोच कर निकलता है.

[3] जामुनी

लहरें बना रहे हैं लड़कों के लाल जोड़े
आँखों में चुभ रहे हैं प्यारों के लाल जोड़े
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

और जिस सनम के तन में जोड़ा है ज़ाफ़रानी
गुलनार[1] या गुलाबी या ज़र्द सुर्ख़ धानी
कुछ हुस्न की चढ़ाई और कुछ नई जवानी
झूलों में झूलते हैं ऊपर पड़े है पानी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोई तो झूलने में झूले की डोर छोड़े
या साथियों में अपने पाँव से पाँव जोड़े
बादल खड़े हैं सर पर बरसे हैं थोड़े थोड़े
बूंदों में भीगते हैं लाल और गुलाबी जोड़े
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितनों को हो रही है उस ऐश की निशानी
सोते हैं साथ जिस के कहती है वो सियानी
इस वक़्त तुम न जाओ ऐ मेरे यार-ए-जानी[2]
देखो तो किस मज़े से बरसे है आज पानी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने शराब पी कर हो मस्त छक रहे हैं
मय की गुलाबी आगे प्याले छलक रहे हैं

---

[1] तीखा लाल रंग, अनार के फूलों के जैसा

[2] बहुत ही घनिष्ठ मित्र

होता है नाच घर घर घुंघरू झनक रहे हैं
पड़ता है मेंह झड़ा-झड़ तबले खड़क रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

हैं जिन के तन मुलाएम मैदे की जैसे लोई
वो इस हवा में ख़ासी ओढ़े फिरे हैं लोई
और जिन की मुफ़्लिसी ने शर्म-ओ-हया है खोई
है उन के सर पे सर की या बोरिए की खोई
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने फिरे हैं ओढ़े पानी में सुर्ख़ पट्टू
जो देख सुर्ख़ बदली होती है उन पे लट्टू
कितनों की गाड़ी रथ हैं कितनों के घोड़े टट्टू
जिस पास कुछ नहीं है वो हम सा है निखट्टू
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो इस हवा में यारो दौलत में कुछ बढ़े हैं
है उन के सर पे छतरी हाथी पे वो चढ़े हैं
हम से ग़रीब ग़ुरबा कीचड़ में गिर पड़े हैं
हाथों में जूतियाँ हैं और पाएँचे[1] चढ़े हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

है जिन कने मुहय्या पक्का पकाया खाना
उन को पलंग पे बैठे झड़ियों का ख़त उड़ाना
है जिन को अपने घर में याँ लोन तेल लाना

[1] पाजामे या शलवार आदि का टख़नों के पास वाला हिस्सा

है सर पे उन के पंखा या छाज है पुराना
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने ख़ुशी से बैठे खाते हैं ख़ुश महल में
कितने चले हैं लेने बनिए से क़र्ज़ पल में
काँधे पे दाल आटा हल्दी गिरह ने मल में
हाथों में घी की प्याली और लकड़ियाँ बग़ल में
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो कस्बियाँ जवानें हुस्नों में पुर्तियाँ हैं
सीनों में लाल अंगियाँ और लाल कुर्तियाँ हैं
नज़रें भी बदलियाँ हैं दिल में भी सुर्तियाँ हैं
इक इक निगह में काफ़िर बिजली की फुर्तियाँ हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो नौजवाँ हैं उन की तय्यारियाँ बड़ी हैं
हाथों में लाल छड़ियाँ कोठों पे वो खड़ी हैं
और वो जो आश्ना से झगड़ी हैं या लड़ी हैं
मुँह को छुपा पलंग पर मचली हुई पड़ी हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोई अपने आश्ना से कर नाज़ का झपट्टा
कहती है हँस के काफ़िर चुटकी ले या निहट्टा
तुम से तो दिल हमारा अब हो गया है खट्टा
तुम आज भी न लाए रंगवा मिरा दुपट्टा
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कहती हैं कोई मुझ को जोड़ा सोहा बना दो
या टाट बाफ़ी जूता या कफ़्श-ए-सुर्ख़[1] ला दो
कोई कहे है मेरी कुर्ती अभी रंगा दो
या गर्म से अंदरसे[2] इक सैर भर मँगा दो
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो उन के मुब्तला हैं सब चीज़ ला रहे हैं
कुर्ती बना रहे हैं अंगिया रंगा रहे हैं
जो जो हैं उन की बातें सब कुछ उठा रहे हैं
बाहें गले में डाले इशरत मना रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितनों ने क़ौल बाँधा मामूली दे के पैसे
कहते हैं शाद हो कर यूँ अपने आश्ना से
बरसात-भर तो मिल के सुनते हो जान प्यारे
अहमक़ हो जो पलंग से अब मूतने को उतरे
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

ये सुन के उन से हँस हँस कहती है शोख़ रंडी
मा'मूली अब तो ले कर बंदी भी है घमंडी
हम पहनें लाल जोड़ा तुम पहनो ख़ासी बंडी
ख़ंदी हो जो तुम्हारी छाती करे न ठंडी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

1 लाल जूता

2 चावल के ख़मीरी आटे की घी में तली हुई मीठी टिकियां या गोलीयां, पिसे हुए भीगे चावलों से बनी एक मिठाई

कुर्ती गुलाबी जिन में गोटे लगे हुए हैं
अंगियाँ के गर्द झूटे गोटे टके हुए हैं
कहती हैं उन से हंस हंस जो जो कटे हुए हैं
ला अब तो मेरे तुझ पर बारह टके हुए हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जो बेगमी है घर में आराम कर रही है
पर्दों में दोस्तों से पैग़ाम कर रही है
चितवन लगावटों से सौ दाम कर रही है
चुपके ही चुपके अपना सब काम कर रही है
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कहता है कोई अपने महबूब सीम-बर से
वो इस मेंह में न जाओ प्यारे हमारे बरसे
कोई कहे है अपने दिलदार ख़ुश-नज़र से
हाथों से मेरे जानी खा ले ये दो अंदर्से
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कहता है कोई प्यारी जो कुछ कहो सौ ला दें
ज़र-दोज़ी[1] टाट-बाफ़ी[2] जूता कहो पहना दें
पेड़ा जलेबी लड्डू जो खाओ सो मँगा दें
चीरा दुपट्टा जामा जैसा कहो रंगा दें
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

[1] सोने-चाँदी के तारों से वस्त्रों पर बेल-बूटे बनाने का काम

[2] ज़रदोज़ी का काम, ज़रदोज़ी के काम का जूता

जिन दिलबरों के तन पर हैं गर्मी दाने आले
कहते हैं उन को आशिक़ यूँ प्यार से बुला ले
क्या मेंह बरस रहा है प्यारे ज़रा नहा ले
छाती नहीं तो प्यारे टुक पीठ ही मिला ले
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

इस रुत में हैं जहाँ तक गुलज़ार भीगते हैं
शहर-ओ-दयार कूचे बाज़ार भीगते हैं
सहरा-ओ-झाड़ बूटे कोहसार भीगते हैं
आशिक़ नहा रहे हैं दिलदार भीगते हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कहती है जब वो सुन कर ये बात भीग अहमक़
मारूँगी तेरे आ कर इक लात भीग अहमक़[1]
मुझ को भी ज़िद चढ़ी है दिन-रात भीग अहमक़
यूँही तो अब के सारी बरसात भीग अहमक़
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

ज़रदार की तो सुन कर आवाज़ वो परी-रू[2]
कहती है लौंडियों से जल्दी किवाड़ खोलो
मुफ़्लिस कोई पुकारे तो इस से कहती है वो
हरगिज़ कोई न बोलो अहमक़ को भीगने दो
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

[1] नासमझ, मूर्ख या बेवक़ूफ़ व्यक्ति

[2] परियों जैसी शक्ल-सूरत वाली

कोई यार से कहे है ऐ दिल-सितान[1] आओ
बदली बड़ी उठी है कहने को मान आओ
क्या मेंह बरस रहा है हर इक मकान आओ
रातें अँधेरियाँ हैं ऐ मेरी जान आओ
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोई रात को पुकारे प्यारे मैं भीगती हूँ
क्या तेरी उल्फ़तों के मारे मैं भीगती हूँ
आई हूँ तेरी ख़ातिर आ रे मैं भीगती हूँ
कुछ तो तरस तू मेरा खा रे मैं भीगती हूँ
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कोई पुकारती है दिल सख़्त भीगती हूँ
काँपे है मेरी छाती यक-लख़्त भीगती हूँ
कपड़े भी तर-ब-तर[2] हैं और सख़्त भीगती हूँ
जल्दी बुला ले मुझ को कम्बख़्त भीगती हूँ
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

शीशा कहीं गुलाबी बोतल झमक रही है
राबील मोतिया की ख़ुश्बू महक रही है
छाती से छाती लग कर इशरत छलक रही है
पाए खटक रहे हैं पट्टी चटक रही है
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

[1] दिल मोह लेने का अमल, दिलबरी

[2] पूरी तरह भीगना

कोई पुकारती है क्या क्या मुझे भिगोया
कोई पुकारती है कैसा मुझे भिगोया
नाहक़ क़रार कर के झूटा मुझे भिगोया
यूँ दूर से बुला कर अच्छा मुझे भिगोया
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

जिन दिलबरों की ख़ातिर भीगे हैं जिन के जोड़े
वो देख उन की उल्फ़त होते हैं थोड़े थोड़े
ले उन के भीगे कपड़े हाथों में धर निचोड़े
चीरा कोई सुँघावे जामा कोई निचोड़े
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कीचड़ से हो रही है जिस जा ज़मीं फिसलनी
मुश्किल हुई है वाँ से हर इक को राह चलनी
फिसला जो पाँव पगड़ी मुश्किल है फिर संभलनी
जोती गिरी तो वाँ से क्या ताब फिर निकली
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने तो कीचड़ों की दलदल में फँस रहे हैं
कपड़े तमाम गंदी दलदल में बस रहे हैं
कितने उठे हैं मर-मर कितने उकस रहे हैं
वो दुख में फँस रहे हैं और लोग हँस रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कहता है कोई गिर कर ये ऐ ख़ुदाए लीजो
कोई डगमगा के हर-दम कहता है वाए लीजो
कोई हाथ उठा पुकारे मुझ को भी हाए लीजो

कोई शोर कर पुकारे गिरने न पाए लीजो
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

गिर कर किसी के कपड़े दलदल में हैं मोअत्तर[1]
फिसला कोई किसी का कीचड़ में मुँह गया भर
इक दो नहीं फिसलते कुछ इस में आन अक्सर
होते हैं सैकड़ों के सर नीचे पाँव ऊपर
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

ये रुत वो है कि जिस में ख़ुर्दो-कबीर[2] ख़ुश हैं
अदना[3] ग़रीब मुफ़्लिस शाहो-वज़ीर ख़ुश हैं
माशूक़ शादो-ख़ुर्रम आशिक़ असीर[4] ख़ुश हैं
जितने हैं अब जहाँ में सब ऐ 'नज़ीर' ख़ुश हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

1 सुगंधित

2 छोटा-बड़ा, बच्चा-बूढ़ा

3 छोटा

4

बरखा-रुत

अल्ताफ़ हुसैन हाली

(1834-1914)

गर्मी की तपिश बुझाने वाली
सर्दी का पयाम [1] लाने वाली
क़ुदरत के अजाइबात की काँ
आरिफ़ के लिए किताब-ए-इरफ़ाँ
वो शाख़-ओ-दरख़्त की जवानी
वो मोर-ओ-मलख़ [2] की ज़िंदगानी
वो सारे बरस की जान बरसात
वो कौन-ए-ख़ुदा की शान बरसात
आई है बहुत दुआओं के बाद
वो सैकड़ों इल्तिजाओं के बाद
वो आई तो आई जान में जाँ
सब थे कोई दिन के वर्ना मेहमाँ
गर्मी से तड़प रहे थे जानदार
और धूप में तप रहे थे कोहसार
भूबल से सिवा था रेग-ए-सहरा
और खौल रहा था आबे-दरिया [3]

---

[1] संदेश, पैग़ाम

[2] मोर और टिड्डी

[3] दरिया का पानी

सांडे थे बिलों में मुँह छुपाए
और हाँप रहे थे चारपाए
थीं लोमड़ियाँ ज़बाँ निकाले
और लू से हिरन हुए थे काले
चीतों को न थी शिकार की सुध
हिरनों को न थी क़तार की सुध
थे शेर पड़े कछार में सुस्त
घड़ियाल थे रूद-बार [1] में सुस्त
ढोरों का हुआ था हाल पतला
बैलों ने दिया था डाल कंधा
भैंसों के लहू न था बदन में
और दूध न था गऊ के थन में
घोड़ों का छुटा था घास दाना
था प्यास का उन पे ताज़ियाना
गर्मी का लगा हुआ था भबका
और अंस निकल रहा था सब का
तूफ़ान थे आँधियों के बरपा
उठता था बगूले पर बगूला
आरे थे बदन पे लू के चलते
शोले थे ज़मीन से निकलते
थी आग का दे रही हवा काम
था आग का नाम मुफ़्त बदनाम
रस्तों में सवार और पैदल
सब धूप के हाथ से थे बेकल [2]

[1] नदियों या जलधाराओं में मौजूद एक स्थान

[2] व्याकुल, विकल, बेचैन

घोड़ों के न आगे उठते थे पाँव
मिलती थी कहीं जो रूख की छाँव
थी सब की निगाह सू-ए-अफ़्लाक [1]
पानी की जगह बरसती थी ख़ाक

[1] आसमान की तरफ़

जाड़े की बहारें

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

जब माह अघन का ढलता हो तब देख बहारें जाड़े की
और हँस हँस पूस सँभलता हो तब देख बहारें जाड़े की
दिन जल्दी जल्दी चलता हो तब देख बहारें जाड़े की
और पाला बर्फ़ पिघलता हो तब देख बहारें जाड़े की
चिल्ला ग़म ठोंक उछलता हो तब देख बहारें जाड़े की

तन ठोकर मार पछाड़ा हो और दिल से होती हो कुश्ती सी
थर-थर का ज़ोर उखाड़ा हो बजती हो सब की बत्तीसी
हो शोर फफू हू-हू का और धूम हो सी-सी सी-सी की
कल्ले पे कल्ला लग लग कर चलती हो मुँह में चक्की सी
हर दाँत चने से दलता हो तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकाँ में सर्दी ने आ बाँध दिया हो ये चक्कर
जो हर दम कप-कप होती हो हर आन कड़ाकड़ और थर-थर
पैठी हो सर्दी रग रग में और बर्फ़ पिघलता हो पत्थर
झड़-बाँध महावट पड़ती हो और तिस पर लहरें ले ले कर
सन्नाटा बाव का चलता हो तब देख बहारें जाड़े की

हर चार तरफ़ से सर्दी हो और सेहन खुला हो कोठे का
और तन में नीमा शबनम का हो जिस में ख़स का इत्र लगा
छिड़काव हुआ हो पानी का और ख़ूब पलंग भी हो भीगा
हाथों में पियाला शर्बत का हो आगे इक फर्राश खड़ा
फर्राश भी पंखा झलता हो तब देख बहारें जाड़े की

हो फ़र्श बिछा ग़ालीचों का और पर्दे छोटे हों आ कर
इक गर्म अँगीठी जलती हो और शमा हो रोशन और तिस पर
वो दिलबर, शोख़, परी, चंचल, है धूम मची जिस की घर घर
रेशम की नर्म निहाली पर सौ नाज़-ओ-अदा से हँस हँस कर
पहलू के बीच मचलता हो तब देख बहारें जाड़े की

तरकीब बनी हो मज्लिस की और काफ़िर नाचने वाले हों
मुँह उन के चाँद के टुकड़े हों तन उन के रूई के गाले हों
पोशाकें नाज़ुक रंगों की और ओढ़े शाल दो-शाले हों
कुछ नाच और रंग की धूमें हों ऐश में हम मतवाले हों
प्याले पर प्याला चलता हो तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकाँ हो ख़ल्वत का और ऐश की सब तय्यारी हो
वो जान कि जिस से जी ग़श हो सौ नाज़ से आ झनकारी हो
दिल देख 'नज़ीर' उस की छब को हर आन अदा पर वारी हो
सब ऐश मुहय्या हो आ कर जिस जिस अरमान की बारी हो
जब सब अरमान निकलता हो तब देख बहारें जाड़े की

शब-ए-सरमा[1]

मोलवी मोहम्मद हुसैन आज़ाद

(1830-1914)

ऐ ज़मिस्ताँ[2] कहूँ किस तरह तेरी रात का लुत्फ़
तेरी शब हाए दराज़ और यह बरसात का लुत्फ़

है कोई छींट का ओढ़े हुए फ़र्ग़ुल[3] बैठा
पर फुलाए हुए जैसे कोई बुलबुल बैठा

ओढ़ बैठा कोई सर्दी से लिहाफ़ अपना है
कोई कर बैठा बिछौने को ग़िलाफ़[4] अपना है

कुछ लिहाफ़ों से अभी मुँह को निकाले हैं पड़े
लेकिन अंगीठी को पहलू में सँभाले हैं पड़े

मारे सर्दी के जिगर सीनों में थर्राते हैं
बच्चे माँ-बाप की बग़लों में घुस जाते हैं

---

[1] सर्दी की रात

[2] जाड़े की ऋतु, शीतकाल

[3] कपड़ा जो बच्चों को पहनाते हैं और जिसमें टोपी भी लगी होती है

[4] आवरण, किसी चीज़ पर चढ़ाया गया कवर

कहीं सू-सू कहीं सी-सी कहीं सीटी है
गिर्द सब बैठे हैं और बीच में अँगीठी है

बज़्म-ए-अहबाब[1] की सोहबत का मज़ा है तुझ से
साज़-ए-इश्रत के लिए बर्ग-ओ-नवा[2] है तुझ से

शब-ए-सरमा ही में है गाने बजाने का मज़ा
पान खाने का, गिलौरी[3] के चबाने का मज़ा

सूफ़ी-ओ-रिंद के जलसे की तू ही साक़ी है
माया-ए-ऐश-ओ-तरब[4] दम से तेरे बाक़ी है

बस कर एक दिल कि नहीं लिखने की ताक़त बाक़ी
मारे सर्दी के नहीं हाथ में हालत बाक़ी

मेरे अल्लाह तू ही अब है बचाने वाला
तेरे 'आज़ाद' को पाले से बड़ा है पाला

[1] दोस्तों की महफ़िल

[2] गाने-बजाने का सामान

[3] लगे हुए पानों का बीड़ा, पान का तिकोना या चौकोना बीड़ा

[4] आनन्द, प्रसन्नता का सामान

गर्मी की शिद्दत

मीर अनीस

(1803-1874)

कोसों किसी शजर में न गुल थे न बर्गो-बार[1]
एक-एक नख़्ल[2] जल रहा था सूरत-ए-चिनार
हँसता था कोई गुल न लहकता था सब्ज़ाज़ार[3]
काँटा हुई थी सूख के हर शाख़ बार-दार[4]
गर्मी न थी कि ज़ीस्त से दिल सबके सर्द थे
पत्ते भी मिस्ल चेहरा-ए-मदक़ूक़[5] ज़र्द थे
शेर उठते थे न धूप के मारे कछार से
आहू न मुँह निकालते थे सब्ज़ा-ज़ार से
आईना-ए-महर का था मुकद्दर[6] ग़ुबार से
गर्दूं[7] को तप चढ़ी थी ज़मीं के बुख़ार से
गर्मी से मुज़्तरिब[8] था ज़माना ज़मीन पर
भुन जाता था जो गिरता था दाना ज़मीन पर

---

[1] फल और पत्ते, फल-फूल

[2] खजूर का पेड़, कोई पेड़

[3] जहाँ हरियाली ही हरियाली हो, घास का मैदान, वो मैदान जो घास से ढका हो

[4] फल देने वाली डाली

[5] पीले रंगत का, पीले रंग वाला, पीला

[6] उदास, मलिन, मैला

[7] आसमान

[8] बेचैन

गर्मी
(बैसाख और जेठ)
सैयद अब्दुल मजीद शम्स
(1983-)

परेशान है इस वक़्त हर आदमी कि गर्मी है यह जेठ-बैसाख की
ग़ज़ब की है लू और कड़ी धूप है बला जेठ-बैसाख की धूप है
दहकती ज़मीं आसमाँ शोला-बार[1] हैं सूखे हुए सर-ब-सर किश्त-ज़ार
हैं झुलसी हुई हर तरफ़ झाड़ियाँ नहीं घास तक का ज़मीं पर निशाँ
सिमट आए हैं बाग़ में सब चरिन्द छिपे बैठे हैं पत्तियों में परिंद
हैं खेत इन दिनों सारे सूखे पड़े भरे उनमें काँटे हैं छोटे बड़े
मगर खेत गन्नों के हैं जा-ब-जा
तर-ओ-ताज़गी जिनकी है दिलकुशा

अलग सबसे अंदाज़ है बाग़ का हरी पत्तियों और फलों से भरा
ख़ज़ाने हैं पानी के ज़ेर-ए-ज़मीं[2] कहीं दूर पर, पास ही में कहीं
फ़रेब-ए-नज़र रंग-आराईयाँ[3] हैं फ़ितरत की हर सिम्त गुलकारियाँ
इन्हीं से हैं शादाब सारे शजर इन्हीं से हैं बालीदा बर्ग-ओ-समर
कहीं लीचियों के गुलाबी समर बहार इन से है बाग़ में रंग पर

[1] आग बरसाने वाला, जला देने वाला

[2] ज़मीन के नीचे

[3] रंगों से सजावट करना, रंगों की सजावट

कहीं फ़ालसा[1] है कहीं मौलसिरी[2]
कहीं जामुनों से हैं शाख़ें झुकी
कहीं कटहलों से तने हैं लदे
कहीं पेड़ हैं बड़हलों से झुके
हैं आमों से हर बाग़ बाग़-ए-जिनाँ[3]
है नज़्ज़ारे से जिनके दिल शादमाँ
जो ज़र्द आलुओं से हैं ज़र्रीं शजर
तो हैं लाल परियों से लालीं शजर
कहीं तोता परियों से रंगीं है बाग़
कहीं हैं सफ़ेदों से रौशन चिराग़
चमकते हैं इस तरह रोशन तबाक़
कि हैं क़ुमक़ुमे ज़ेरे नीली-रुवाक़[4]
जो जाती है चौसों की जानिब नज़र
तो कहता है दिल हैं "बहिश्ती समर"
कोई आम है शक्ल में ला-जवाब
कोई रंगो-बू[5] में है मिस्ल-ए-गुलाब
हर इक की है बू-बास में ख़ास बात
ग़रज़ जितने हैं आम उतने सिफ़ात

हुई जेठ की सह-पहर अब तमाम
गए लू के झोंके, सुहानी है शाम
हवा की हरारत में आई कमी
दरख़्तों पे आने लगी ताज़गी
घरों से निकल आए इंसान भी
थे गर्मी के मारे परेशाँ सभी
हवा चलते-चलते रुकी यक-ब-यक
फ़िज़ा पुर-सुकूँ हो गई यक-ब-यक
थी साकित हवा और ज़मीं पुर-सुकूँ
ख़मोशी दरख़्तों की थी पुर-फ़ुसूँ
गरजने की बादल के आई सदा
चमकने लगी बिजलियों से फ़िज़ा
हवा थी जो साकित हुई तेज़-गाम
कि अब रख़्शे-फ़ितरत हुआ बे-लगाम
ज़मीं से उठी गर्द सूए फ़लक
लगे आँख मलने फलक पर मलक
हवा हर तरफ़ ख़ाक उड़ाने लगी
दरख़्तों को झूला झुलाने लगी
गिरीं शाख़ें और पत्तियाँ टूट कर
गिरे डालियों से समर छूट कर
अजब नशे में झूमते थे दरख़्त
ख़ुद अपने क़दम चूमते थे दरख़्त
था अब मूसलाधार पानी का ज़ोर
गरज बादलों की हवाओं का शोर
न ठहरा यह पानी बहुत देर तक
फ़िज़ा साफ़ होने लगी यक-ब-यक

---

1 एक प्रकार खट्टा और छोटा फल

2 एक बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं(

3 स्वर्ग, जन्नत

4 जिसकी छत नीली हो, अर्थात आसमान

5 रंग और ख़ुशबू

हुआ अब्र दोश-ए-हवा[1] पर रवाँ बदलने लगा रंग फिर आसमाँ
फिर अंदाज़-ए-मौसम बदलने लगे वही झोंके पछुआ के चलने लगे
जलाने लगी जेठ की धूप तेज़ हुआ महर ताबिन्दा फिर शोला रेज़
ज़मीं तप के आतिश उगलने लगी
जो सुलगी हवा, दूब जलने लगी

[1] खुली हवा

फागुन[1]

सैयद अब्दुल मजीद शम्स

(1983-)

फ़िज़ा में फागुन की रानाइयाँ हवा में बहारों की सरमस्तियाँ
हर इक सू [2] फ़रावानी-ए-रंगो-बू [3] है फ़ितरत में हर सिम्त जोश-ए-नुमू
दिलों में मसर्रत, सुरों में सुरूर मिज़ाजों में बालीदगी का वुफ़ूर
न गर्मी, न सर्दी की शिद्दत है अब दिलों में उमंग और मुसर्रत है अब
है दुनिया पे सूरज की तिरछी नज़र कि फ़स्ल-ए-बहाराँ[4] की है सह-पहर[5]
बढ़ी कुछ हरारत तो अब्र आ गया फ़लक पे रिदा [6] की तरह छा गया
तमाज़त [7] में सूरज की आई कमी हवा में तर-ओ-ताज़गी आ गई
बरस कर खुला है जो अब्र-ए-बहार नहीं नाम को अब फ़िज़ा में ग़ुबार
हवा में है इतना नमी का असर हैं गौहर बदामाँ गियाह-ओ-शजर
सुहाना है मंज़र सुनहरी है धूप कि धुल कर निखर आया फ़ितरत का रूप
ज़मीं पर है बारिश की ताबिंदगी उभरने को बेताब है ज़िंदगी

---

[1] शिशिर ऋतु का दूसरा महीना, हिन्दी साल का बारहवां और जाड़े का (माघ के बाद का) दूसरा महीना

[2] तरफ़, ओर, दिशा

[3] रंग और ख़ुशबू की प्रचुरता, बहुलता

[4] वसंत ऋतु, बहार का मौसम

[5] दोपहर के बाद और शाम से पहले का वक़्त

[6] ओढ़ने की चादर

[7] सूरज की गर्मी

जो ओझल हुआ आँख से आफ़ताब
घटी बाम-ए-गर्दूं[1] की वह आब-ओ-ताब

हजर हो, शजर हो कि बर्ग-ओ-गियाह
सभी पर पड़ी इस रिदाए सियाह

चमकने लगा अब रुख़-ए-माहताब
फ़रोज़ाँ हैं अंजुम बसद आब-ओ-ताब

है छिटकी हुई चाँदनी हर तरफ़
है चाँदी की चादर बिछी हर तरफ़

करौंदे के फूलों से झाड़ी भरी
बबूल और बेरी की शाख़ें हरी

मुअत्तर है फूलों की ख़ुश्बू से बन
हर इक पेड़ पर है नई इक फबन

हवा मस्त है, झूमते हैं दरख़्त
हर इक शाख़, साक़ी-ए-साग़र ब-दस्त

जो रोशन हुआ चरख़-ए-गर्दूं[2] का फ़र्क़
छलकने लगा जाम-ए-ज़र्रीं का शर्क़

चमकने लगी सुब्ह-ए-नौ की किरण
हर इक शय में आने लगा बाँकपन

ख़ुशी से फ़िज़ा मुस्कुराने लगी
नसीम-ए-सहर गुनगुनाने लगी

कहीं शाख़ पे फ़ाख़्ता ख़ुश-गुलू
ब-सद-वज्द[3] कहती है ''या पाक तू''

पपीहों ने रट पी कहाँ की लगाई
कहीं मस्त कोयल ने कू-कू सुनाई

कहीं से सदाएँ महूकल की आईं
कहीं सीटियाँ हारियल[4] ने बजाईं

वह तीतर कहीं फड़फड़ा कर उड़े
कहीं मोर झाड़ी में छुपने लगे

हिरण चौकड़ी भर के भागे उधर
गए दूर इतने न आए नज़र

नई कोंपलों से सजी झाड़ियाँ
हरी, सुर्ख़ और चम्पई पत्तियाँ

हो शीशम कि बड़, ताड़ हो या खुजूर
सभी हैं बहारों के नश्शे में चूर

निकल आए पीपल में पत्ते नए
चमकदार, चिकने, सजीले, हरे

है पाकड़ भी इस वक़्त दूल्हा बना
है पहने हुए इक गुलाबी क़ुबा

सरस के भी हैं फूल क्या ख़ुशनुमा
सफ़ेद और हरे रंग में जलवा-ज़ा

है आमों के बाग़ों में मंज़र की बास
हवा में है नश्शा दरख़्तों के पास

---

[1] आकाश की छत

[2] गर्दिश करने वाला आसमान

[3] बहुत अधिक ख़ुशी

[4] हरे रंग का कबूतर के रूप का पक्षी

हसीं शाख़ें कचनार[1] की हैं झुकी
है कलियों में इनकी अजब दिलकशी

है ख़ुश-रंग कलियों से चम्पा सजा
कोई बंद है और कोई अध-खिला

करौंदे के काँटों पे फूलों का जाल
दिलों का भुलाता है रंज-ओ-मलाल

हैं बेले की कलियों से शाख़ें लदी
हर इक शाख़ है मोतियों की लड़ी

अजब शान से मोगरा है खिला
दिल-अफ़रोज़ बू, दिलकशो-दिलरुबा

है जरकंडा या कोई नीलम-परी
फ़रोजाँ चमन में ब-सद दिलबरी

अमलतास के ज़र्द चमकीले फूल
हों जिस तरह आवेज़ाँ[2] सेहरे के फूल

कहीं गुल-मोहर की क़तारें खड़ी
हसीं सुर्ख़ फूलों से शाख़ें लदी

ग़रज़ हर शजर पर है हुस्न-ए-बहार
छिपी दामन-ए-गुल से है नोक-ए-ख़ार[3]

हैं कटनी में मसरूफ़ पीर-ओ-जवाँ[4]
मसर्रत है चेहरों पे सबके अयाँ

हैं मेंडों[5] पे ग़ल्लों के बोझे धरे
है रक्खा जिन्हें खेत से काट के

उठाती हैं अपने क़दम तेज़-तेज़
जवानी की रानाइयाँ हश्र-ख़ेज़[6]

कमर में लचक बाज़ुओं में तनाव
जबीं पर शिकन अबरुओं में झुकाव

है सीनों की जुंबिश से लरज़ाँ ज़मीं
न हो जाए बरपा क़्यामत कहीं

निगाहों में इस्मत की बे-बाकियाँ
मशक़्क़त की चेहरे पे शादाबियाँ

कोई घूर कर देख ले क्या मजाल
है ग़ुर्बत की आँखों में जाहो-जलाल[7]

चलें शहर की सैर को साक़िया
तेरे साथ होली का लूटें मज़ा

हर इक सिम्त होली की है धूम-धाम
मुसर्रत से सरशार हर ख़ास-ओ-आम

कई रंग की दीदनी है बहार
ज़मीं पर हैं क़ौस-ए-क़ज़ह[8] बे-शुमार

---

[1] एक वृक्ष जिसकी कलियाँ सब्ज़ी बनाने तथा फूल और तने की छाल औषधि के काम आती है

[2] लटका या लटकाया हुआ

[3] कांटे की नोक, कांटे का तेज़ चुभने वाला सिरा

[4] बूढ़े और जवान

[5] खेत की सरहद

[6] बहुत ज़्यादा शोर उठाने वाला

[7] वैभव, भव्यता, धूमधाम

[8] इन्द्र-धनुष, धनुक

पिलाई है मौसम ने इतनी शराब कि गालों पे सबके खिले हैं गुलाब
पिए बे-पिए सब हैं नश्शे में चूर
ख़ुशी का है सबके दिलों में सुरूर

बयान-ए-होली

मीर तक़ी मीर

(1723-1810)

होली खेले आसिफ़ुद्दौला वज़ीर रंग-ए-सोहबत से अजब हैं ख़ुर्दो-पीर[1]
जश्ने-नौरोज़ी-ए-अहले-हिंद सब है यही, तब महवे-इशरत हैंगे अब
शीशा शीशा रंग सर्फ़-ए-दोस्ताँ सहने-दौलत-ख़ाना, रश्क-ए-बोस्ताँ
दस्ता-दस्ता [2] रंग में भीगे जवाँ जैसे गुलदस्ता थे जूओं पर रवाँ
रंगे-अफ़्शानी से पड़ती थी फुवार रंग-ए-बाराँ था मगर अबर-ए-बहार [3]
क़ुमक़ुमे जो मारते भर कर गुलाल जिसके लगता आन कर, फिर मुँह है लाल
बर्ग-ए-गुल[4] मिलवाँ उड़ाते थे अबीर थी हवा में गर्द ता [5] चर्ख़-ए-असीर
रोशनुद्दौला ने की थी रोशनी कब हुई थी लेकिन ऐसी रोशनी
वह चरागाँ गर-चे थे दरगाह तक थे तमाशाई गदा-ओ-शाह [6] तक
राह में तिरपौलिए [7] मीनार थे रोशनी के कूचा व बाज़ार थे
था जहाँ तक आब-ए-दरिया का बहाव वाँ तलक था उस चरागाँ का दिखाव
एक आलम देखता था दूर से रात, दिन थी रोशनी के नूर से

---

[1] छोटा-बड़ा

[2] समूह-समूह, टोली-टोली

[3] बसंत ऋतु का बादल

[4] फूल की पंखुड़ियाँ

[5] तक

[6] ग़रीब और अमीर

[7] जिसमें जाने के तीन बड़े द्वार या रास्ते हों

उन दियों के अक्स से दरिया का आब आईने की सतह की रखता था ताब
मुनअकिस[1] जो थे चराग़ाँ तह तलक आब की वुसअत थी बर नज्म-ए-फ़लक
हर दो जानिब चुन गए नारी अनार गुल-फ़िशानी से उन्हों की थी बहार
इस रविश से थे सितारे छूटते ना-गहाँ [2] जूँ होवैं तारे टूटते
माहताबी इक तरफ़ से जो दग़ी चाँद सा निकला, हुए हैराँ सभी
आफ़रीं [3] सन्नाअ [4] लोगो आफ़रीं क्या लगाया बाग़ आकर काग़ज़ीं
गुल कतर कर फूल गुल ही कर दिए रंग ताज़े काग़ज़ों में भर दिए
मुत्तसिल [5] तोपें सितारों की दग़ीं लोगों की आँखें फ़लक से जा लगीं
देखियाँ क्या-क्या न शोला-ख़ेज़ियाँ थीं हवा में से सितारा-रेज़ियाँ
नज़्र को नवाब की अहल-ए-फ़रंग [6] ले के आतिशबाज़ी आए रंग-रंग
अरसा गुल-रेज़ी[7] से गुलशन हो गया चर्ख़ [8] इन तारों से रोशन हो गया
दाग़ियाँ तोपें हवाई एक बार फैले तारे आस्माँ में बेशुमार
क्या ही आतिश दस्तियाँ देकर गए शोलों से पानी की लहरें भर गए
रहमत ऐ आतिश-ज़नाँ क्या लाग है
कि बिसात-ए-आब-ए-दरिया आग है

[1] प्रतिबिंब

[2] अकस्मात, अचानक

[3] प्रशंसा, सराहना

[4] शिल्पकार, कारीगर

[5] जो किसी के पास या साथ लगा या सटा हुआ हो, समीपवर्ती, समीप, क़रीब

[6] अंग्रेज़, यूरोप का निवासी

[7] फूल बरसाना

[8] आसमान

होली की बहारें

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की
और दफ़[1] के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की
परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की
ख़ुम, शीशे, जाम, झलकते हों तब देख बहारें होली की
महबूब नशे में छकते हों तब देख बहारें होली की

हो नाच रंगीली परियों का बैठे हों गुल-रू रंग भरे
कुछ भीगी तानें होली की कुछ नाज़-ओ-अदा के ढंग भरे
दिल भूले देख बहारों को और कानों में आहंग भरे
कुछ तबले खड़कें रंग-भरे कुछ ऐश के दम मुँह-चंग भरे
कुछ घुंघरू ताल छनकते हों तब देख बहारें होली की

सामान जहाँ तक होता है उस इशरत के मतलूबों का
वो सब सामान मुहय्या हो और बाग़ खिला हो ख़्वाबों का
हर आन शराबें ढलती हों और ठठ हो रंग के डूबों का
इस ऐश मज़े के आलम में एक ग़ोल खड़ा महबूबों का
कपड़ों पर रंग छिड़कते हों तब देख बहारें होली की

गुलज़ार खिले हों परियों के और मज्लिस की तय्यारी हो
कपड़ों पर रंग के छींटों से ख़ुश-रंग अजब गुलकारी हो

---

[1] बड़ी डफ्ली

मुँह लाल, गुलाबी आँखें हों, और हाथों में पिचकारी हो
उस रंग-भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो
सीनों से रंग ढलकते हों तब देख बहारें होली की

उस रंग-रंगीली मज्लिस में वो रंडी नाचने वाली हो
मुँह जिस का चाँद का टुकड़ा हो और आँख भी मय के प्याली हो
बद-मसत बड़ी मतवाली हो हर आन बजाती ताली हो
मय-नोशी हो बेहोशी हो "भड़वे" की मुँह में गाली हो
भड़वे भी, भड़वा बकते हों तब देख बहारें होली की

और एक तरफ़ दिल लेने को महबूब भवय्यों के लड़के
हर आन घड़ी गत भरते हों कुछ घट घट के कुछ बढ़ बढ़ के
कुछ नाज़ जतावें लड़ लड़ के कुछ होली गावें अड़ अड़ के
कुछ लचके शोख़ कमर पतली कुछ हाथ चले कुछ तन भड़के
कुछ काफ़िर नैन मटकते हों तब देख बहारें होली की

ये धूम मची हो होली की और ऐश मज़े का झक्कड़ हो
उस खींचा-खींच घसीटी पर भड़वे रंडी का फक्कड़ हो
माजून, शराबें, नाच, मज़ा, और टिकिया सुल्फ़ा कक्कड़ हो
लड़-भिड़ के 'नज़ीर' भी निकला हो, कीचड़ में लत्थड़-पत्थड़ हो
जब ऐसे ऐश महकते हों तब देख बहारें होली की

बसंत और होली की बहार

उफ़ुक़ लखनवी

(1864-1913)

साक़ी कुछ आज तुझ को ख़बर है बसंत की हर सू बहार पेशे-नज़र है बसंत की
सरसों जो फूल उट्ठी है चशमे-क़ियास में फूले-फले शामिल हैं बसंती लिबास में
पत्ते जो ज़र्द ज़र्द हैं सोने के पात हैं सदबर्ग से तलाई किरन फूल मात हैं
हैं चूड़ियों की जोड़ बसंती कलाई में बन के बहार आई है दस्ते-हिनाई[1] में
मस्ती भरे दिलों की उमंगें न पूछिए क्या मंतिक़ें हैं क्या हैं तरंगें न पूछिए
माथे पे हुस्न-ख़ेज़ है जल्वा गुलाल का बिंदी से औज पर है सितारा जमाल का
गेंदों से माइल-ए-गुल-ए-बाज़ी हसीन हैं सर के उभार पर से दुपट्टे महीन हैं
अक्से-नक़ाब ज़ीनत-ए-रुख़्सार हो गया ज़ेवर जो सीम का था तिला-कार[2] हो गया
सरसों के लहलहाते हैं खेत इस बहार में नर्गिस[3] के फूल फूल उठे लाला-ज़ार[4] में
आवाज़ है पपीहों की मस्ती भरी हुई तूती के बोल सुन के तबीअत हरी हुई
कोयल के जोड़े करते हैं चुहलें सुरूर से आते हैं तान उड़ाते हुए दूर दूर से
बौर आम के हैं यूँ चमने-काएनात में मोती के जैसे गुच्छे हों ज़रकार[5] पात में
भेरों की गूँज मस्त है हर किश्तज़ार[6] में बंसी बजाते किश्न है गोया बहार में

---

[1] मेहंदी लगे हाथ

[2] वो चीज़ जिस पर सोने की चित्रकारी हो या सुनहरा काम हो

[3] एक फूल जो कटोरी के आकार का गोल तथा काला धब्बा लिये सफेद रंग का होता है जिस में सिर्फ़ छः पत्तियां होती हैं

[4] ट्यूलिप के फूलों का खेत

[5] सुनहले काम की चीज़, सोने या सुनहरे काम से सुसज्जित

[6] खेती, हरा-भरा खेत

केसर कुसुम की ख़ूब दिल-अफ़ज़ा बहार है
गेंदों की हर चमन में दो-रूया[1] क़तार है

इक आग सी लगाई है टेसू[2] ने फूल के
क्या ज़र्द ज़र्द फूल खिले हैं बबूल के

है इष्ट देवताओ के मंदिर सजे हुए
हैं ज़र्द ज़र्द फूलों से कुल दर सजे हुए

बस देव-जी के लाल की झाँकी अजीब है
आनंद बे-हिसाब दिलों को नसीब है

बंसी जड़ाव सोने की लब से मिली हुई
दिल की कली कली है नज़र में खिली हुई

पीताम्बर नफ़ीस[3] कमर में कसा हुआ
ख़ुशबू से हार फूल की मंदिर बसा हुआ

शानों पे बल पड़े हुए ज़ुल्फ़े-सियाह[4] के
राधा से बार बार इशारे निगाह के

बाँकी अदाएँ देख के दिल लोट-पोट है
रुतकाम इस्त्री के कलेजे पे चोट है

कानों में कुण्डलों की चमक है जड़ाव से
राधा लजाई जाती है चंचल सुभाव से

प्यारी का हाथ अपनी बग़ल में लिए हुए
आँखें शराबे-हुस्ने-जवानी पिए हुए

दिल राधिका का बादा-ए-उल्फ़त से चूर है
कुहनी से ठेलने की अदा का ज़ुहूर है

चुपकी खड़ी है किश्न के रुख़ पर निगाह है
है पहलू-ए-जिगर में जगह दिल में राह है

उल्फ़त भरी जो बंसी की जानिब नज़र गई
गोया बसंत की राग की धुन मस्त कर गई

इस छब पे इस सिंगार पे दिल से निसार 'उफ़ुक़'
क़ुर्बान एक बार नहीं लाख बार 'उफ़ुक़'

ऐ किश्न नाज़िरीं को मुबारक बसंत हो
खेला जो आपने वो अबद तक बसंत हो

---

[1] दोनो तरफ़

[2] पलाश का फूल

[3] उम्दा, श्रेष्ठ, मृदुल, उत्तम, बढ़िया

[4] काले बाल

बसंत

अमानत लखनवी

(1815-1858)

है जल्वा-ए-तन से दर-ओ-दीवार बसंती
पोशाक जो पहने है मेरा यार बसंती
क्या फ़स्ल-ए-बहारी ने शगूफ़े हैं खिलाए
माशूक़ हैं फिरते सर-ए-बाज़ार बसंती
गेंदा है खिला बाग़ में मैदान में सरसों
सहरा वो बसंती है ये गुलज़ार बसंती
उस रश्क-ए-मसीहा का जो हो जाए इशारा
आँखों से बने नर्गिस-ए-बीमार बसंती
गेंदों के दरख़्तों में नुमायाँ नहीं गेंदे
हर शाख़ के सर पर है ये दस्तार बसंती
मुँह ज़र्द दुपट्टे के न आँचल से छुपाओ
हो जाए न रंग-ए-गुल-ए-रुख़्सार बसंती
खिलती है मिरे शोख़ पे हर रंग की पोशाक
ऊदी, अगरी, चम्पई, गुलनार, बसंती
है लुत्फ़ हसीनों की दो-रंगी का 'अमानत'
दो चार गुलाबी हों तो दो चार बसंती

राखी

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

चली आती है अब तो हर कहीं बाज़ार की राखी
सुनहरी सब्ज़ रेशम ज़र्द और गुलनार की राखी
बनी है गो कि नादिर[1] ख़ूब हर सरदार की राखी
सलोनों[2] में अजब रंगीं है उस दिलदार की राखी
न पहुँचे एक गुल को यार जिस गुलज़ार की राखी

अयाँ[3] है अब तो राखी भी चमन भी गुल भी शबनम भी
झमक जाता है मोती और झलक जाता है रेशम भी
तमाशा है अहा हा-हा ग़नीमत है ये आलम भी
उठाना हाथ प्यारे वाह-वा टुक देख लें हम भी
तुम्हारी मोतियों की और ज़री के तार की राखी

अदा से हाथ उठते हैं गुल-ए-राखी जो हिलते हैं
कलेजे देखने वालों के क्या क्या आह छिलते हैं
कहाँ नाज़ुक ये पहुँचे और कहाँ ये रंग मिलते हैं

---

1 अमूल्य, अनोखा

2 आकर्षक, सुंदर

3 ज़ाहिर

चमन में शाख़ पर कब इस तरह के फूल खिलते हैं
जो कुछ ख़ूबी में है उस शोख़-ए-गुल-रुख़्सार की राखी

फिरें हैं राखियाँ बाँधे जो हर दम हुस्न के तारे
तो उन की राखियों को देख ऐ जाँ चाव के मारे
पहन ज़ुन्नार[1] और क़श्क़ा[2] लगा माथे उपर बारे
'नज़ीर' आया है बाम्हन[3] बन के राखी बाँधने प्यारे
बँधा लो उस से तुम हँस कर अब इस त्यौहार की राखी

---

[1] जनेऊ, वो धागा या डोरी जो हिंदू गले से बग़ल के नीचे तक डालते हैं

[2] तिलक, टीका, माथे की भभूत

[3] एक जाति, ब्राह्मण

दीवाली का सामान

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

हर इक मकाँ में जला फिर दिया दिवाली का
हर इक तरफ़ को उजाला हुआ दिवाली का
सभी के दिल में समाँ भा गया दिवाली का
किसी के दिल को मज़ा ख़ुश लगा दीवाली का
अजब बहार का है दिन बना दिवाली का

जहाँ में यारो अजब तरह का है ये त्यौहार
किसी ने नक़्द लिया और कोई करे है उधार
खिलौने खेलों बताशों का गर्म है बाज़ार
हर इक दुकाँ में चराग़ों की हो रही है बहार
सभों को फ़िक्र है अब जा-ब-जा[1] दिवाली का

मिठाइयों की दुकानें लगा के हलवाई
पुकारते हैं कि "ला ला! दिवाली है आई"
बताशे ले कोई बर्फ़ी किसी ने तुलवाई
खिलौने वालों की इन से ज़्यादा बिन आई
गोया उन्हों के वाँ राज आ गया दिवाली का

---

[1] जगह-जगह

मकान लेप के ठिल्या[1] जो कोरी रखवाई
जला चराग़ को कौड़ी वो जल्द झनकाई
असल जुआरी थे उन में तो जान सी आई
ख़ुशी से कूद उछल कर पुकारे ओ भाई
शुगून[2] पहले करो तुम ज़रा दिवाली का

किसी ने घर की हवेली गिरो रखा हारी
जो कुछ थी जिंस मयस्सर बना बना हारी
किसी ने चीज़ किसी किसी की चुरा छुपा हारी
किसी ने गठरी पड़ोसन की अपनी ला हारी
ये हार जीत का चर्चा पड़ा दिवाली का

ये बातें सच हैं न झूट उन को जानियो यारो!
नसीहतें हैं उन्हें दिल से मानियो यारो!
जहाँ को जाओ ये क़िस्सा बखानियो यारो!
जो जुवारी हो न बुरा उस का मानियो यारो!
'नज़ीर' आप भी है जुवारिया[3] दीवाली का

[1] पानी रखने की मिट्टी की गगरी

[2] नज़राना, भेंट

[3] जुवारी

ईद मीलादुन्नबी (सल्ल.)

हफ़ीज़ जालन्धरी

(1900-1982)

यह किसी की जुस्तजू में महरे-आलम-ताब[1] फिरता है
अज़ल के रोज़ से बेताब था बे-ख़्वाब फिरता है
यह किसकी आरज़ू में चाँद ने सख़्ती सही बरसों
ज़मीं पर चाँदनी बर्बाद-ओ-आवारा रही बरसों
यह किसके शौक़ में पथरा गईं आँखें सितारों की
ज़मीं को तकते-तकते आ गईं आँखें सितारों की
करोड़ों रंगतें किसके लिए अय्याम[2] ने बदलीं
पियापे करवटें किस धुन में सुब्ह-ओ-शाम ने बदलीं
यह सब कुछ हो रहा था एक ही उम्मीद की ख़ातिर
यह सारी का ख़्वाहिशें थीं एक सुब्ह-ए-ईद की ख़ातिर
मशिय्यत[3] थी कि यह सब कुछ तहे-अफ़लाक होना था
कि सब कुछ एक दिन नज़्रे-शहे-लौलाक[4] होना था
मुरादें भर के दामन में मुनाजात-ए-ज़ुबूर आई
उम्मीदों की सहर पढ़ती हुई आयाते-नूर आई

---

[1] दुनिया को रोशन करने वाला सूरज

[2] दिन, ज़माना

[3] खुदा की मर्जी

[4] पैग़म्बर मोहम्मद की भेंट

नज़र आई बिल-आख़िर[1] मानी-ए-इंजील[2] की सूरत
वदीअत[3] हो गई इंसान को तकमील की सूरत
हवाएँ पै-ब-पै इक सरमदी[4] पैग़ाम लाती थीं
कोई मुश्दा[5] था जो हर गोश-ए-गुल में कह सुनाती थीं
तबस्सुम ही तबस्सुम थे नज़ारे लाला-ज़ारों के
तरन्नुम ही तरन्नुम थे किनारे जूएबारों[6] के

यकायक हो गई सारी फ़िज़ा तमसाल-ए-आईना
नज़र आया मुअल्लक़ अर्श तक इक नूर का ज़ीना
ख़ुदा की शान रहमत के फ़रिश्ते सफ़-ब-सफ़[7] उतरे
परें बाँधे हुए सब दीन-ओ-दुनिया के शरफ़[8] उतरे
सहाब-ए-नूर आ के छा गया मक्के[9] की बस्ती पर
हुई फूलों की बारिश हर बुलंदी और पस्ती पर
हुआ अर्शे-मुअल्ला[10] से नुज़ूल-ए-रहमत-ए-बारी[11]
तो इस्तिक़बाल को उट्ठी हरम[12] की चार-दीवारी

---

[1] आख़िरकार, अंत में

[2] बाइबिल

[3] अमानत, धरोहर

[4] अनन्त, अविनाशी

[5] खुशख़बरी, अच्छी ख़बर

[6] वो अवस्था जब कोई व्यक्ति अपने स्वभाव एवं आचरण से निरा हो कर ख़ुद को केवल ख़ुदा से जोड़ ले

[7] पंक्तिबद्ध, कतारें बाँधे हुए

[8] श्रेय, सौभाग्य, सम्मान, आदर

[9] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ पैग़म्बर मोहम्मद साहब का जन्म हुआ था, यह मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थस्थान है, हज करने के लिये मुसलमान वहाँ जाते हैं

[10] सबसे ऊँचा आसमान, जहां ईश्वर का पटल है

[11] अल्लाह ताला की मदद, मेहरबानी पहुंचना

[12] काबा का परिसर जहाँ वध या युद्ध की अनुमति नहीं है

मुबारकबाद उनके लिए जो ज़ुल्म सहते हैं
कहीं जिनको अमाँ[1] मिलती नहीं बर्बाद रहते हैं
मुबारकबाद बेवाओं[2] की हसरत ज़ा-निगाहों को
असर बख़्शा गया नालों[3] को फ़रियादों को आहों को
ज़ईफ़ों बे-कसों आफ़त-नसीबों को मुबारक
यतीमों को, ग़ुलामों को, ग़रीबों को मुबारक
मुबारक ठोकरें खा-खा के पैहम गिरने वालों को
मुबारक दश्त-ए-ग़ुर्बत से भटकते फिरने वालों को
मुअय्यन वक़्त आया ज़ोर-ए-बातिल घट गया आख़िर
अँधेरा मिट गया, ज़ुल्मत का बादल छट गया आख़िर
मुबारक हो कि दौर-ए-रहमत-ओ-आराम आ पहुँचा
निजाते-दायमी[4] की शक्ल में इस्लाम आ पहुँचा

निदा हातिफ़[5] की गूँज उट्ठी ज़मीन-ओ-आसमानों में
ख़मोशी दब गई अल्लाहु अकबर की अज़ानों में
हरीम-ए-क़ुद्स[6] से मीठे तरानों की सदा गूँजी
मुबारकबाद बन कर शादियानों की सदा गूँजी
बहर-सू नग़मा-ए-सल्ल-ए-अला गूँजा फ़िज़ाओं में
ख़ुशी ने ज़िंदगी की रूह दौड़ा दी हवाओं में

---

[1] सुरक्षा, पनाह, हिफ़ाज़त

[2] विधवाओं

[3] रोना धोना, फ़रियाद करना

[4] स्थायी मुक्ति, आज़ादी

[5] आसमानी आवाज़, गुप्त आवाज़ देने वाला फ़रिश्ता

[6] पवित्र वास

सलाम ऐ आमिना के लाल, ऐ महबूब-ए-सुब्हानी[1]
सलाम ऐ फ़ख़्र-ए-मौजूदात, फ़ख़्रे-नौअ-ए-इंसानी[2]
सलाम ऐ सर्र-ए-वहदत ऐ सिराज-ए-बज़्म-ए-ईमानी
ज़हे यह इज़्ज़त अफ़ज़ाई ज़हे तशरीफ़-अर्ज़ानी
तेरे आने से रौनक़ आ गई गुलज़ार-ए-हस्ती में
शरीक़-ए-हाल क़िस्मत हो गया फिर फ़ज़्ल-ए-रब्बानी
तेरी सूरत, तेरी सीरत, तेरा नक़्शा, तेरा जल्वा
तबस्सुम, गुफ़्तगू, बंदा-नवाज़ी, ख़ंदा-पेशानी[3]
ज़माना मुंतज़िर है अब नई शीराज़ा-बंदी[4] का
बहुत कुछ हो चुकी अजज़ा-ए-हस्ती की परेशीनी
हफ़ीज़-ए-बे-नवा भी है गदा-ए-कूचा-ए-उल्फ़त
अक़ीदत की जबीं तेरी मुरव्वत से है नूरानी
सलाम ऐ आतिशीं ज़ंजीर-ए-बातिल तोड़ने वाले
सलाम ऐ ख़ाक के टूटे हुए दिल जोड़ने वाले

---

1 ख़ुदा का प्यारा, पैग़म्बर मोहम्मद

2 मानव-जाति, आदम की संतान के सम्मान की बात

3 हँसमुख

4 संगठन, तंज़ीम

ईद का चाँद देखकर

अख़्तर शीरानी

(1905-1948)

उफ़ुक़[1] पे मस्जिद के पास है चाँद का महवे जल्वा-बारी
कि बहरे-नीली पे तैरती रही है ज़र्रीन इक अम्मारी
शफ़क़[2] की सुर्ख़ी से मस्त दीद होश हो रही हैं फ़िज़ाएँ सारी
ज़मीं का एक-एक ज़र्रा है महु-ए-शान-ए-जमाल-ए-बारी
जहान-ए-हस्ती का चप्पा-चप्पा फ़िज़ाए दामान-ए-रंग-ओ-बू है
ज़मीं से ता-चर्ख़[3] आज हर सिम्त साज़-ओ-सामान रंग-ओ-बू है

ख़ुशी के जल्वे हैं मुंतशिर[4] चार सू तरब ज़ार-ए-गुलिस्ताँ हैं
जहाँ-तहाँ मौज हाए ख़ुशबूए लाला-ओ-गुल रवाँ-दवाँ हैं
घनेरी शाख़ों पे जिस तरफ़ देखो बुलबुलें मस्त-ओ-नग़्मा ख़्वाँ हैं
हसीन कलियाँ ख़ुशी से फूली नहीं समातीं हैं शादमाँ हैं
चमन का एक-एक ग़ुंचा-ओ-गुल बहार के गीत गा रहा है
हिलाल[5] है महव-ए-जल्वाकारी, ज़माना ख़ुशियाँ मना रहा है

---

[1] क्षितिज, दृष्टि की अंतिम सीमा का वह गोलाकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए दिखाई पड़ते हैं, आसमान का किनारा जो ज़मीन से मिला हुआ दिखाई देता है

[2] सूर्य के निकलने और डूबने के समय क्षितिज पर दिखाई देने वाली लाली

[3] चर्ख़=आसमान

[4] बिखरे हुए

[5] नया चाँद

इलाही तेरा हज़ार शुक्र आज फिर ख़ुशी का ज़माना आया
हिलाल-ए-ईद[1] इक बरस के बाद आज तूने फिर आँख से दिखाया
हर एक ज़र्रे पे हो रहा है मुहीत तेरे करम का साया
ख़ुशी से है महवे-हम्द दुनिया में आज हर अपना और पराया
ज़माने भर को ख़ुशी मुबारक यह दौरा-ए-फ़र्रुख़ी[2] मुबारक
जो दिल शिकस्ता हैं ग़म से उनको यह आलमे-ख़ुशदिली[3] मुबारक

हर एक को क़ैदे-रंजो-दर्दो-अलम[4] से आज़ाद कर इलाही
ग़रीब नाशाद हस्तियों को करम से फिर शाद कर इलाही
सितमगरों की सितमगिरी को ख़राबो-बर्बाद कर इलाही
जहाँ के उजड़े हुए दिलों के घरों को आबाद कर इलाही
दिलों की बस्ती में हो फ़रोज़ाँ[5] ख़ुशी की यह रोशनी हमेशा
जहाँ के एक-एक ज़र्रे के लब पे हो इलाही हंसी हमेशा

---

[1] ईद का चाँद

[2] ख़ुशी का दौर

[3] ख़ुशी का वक़्त

[4] दर्द और मुसीबत के मारे

[5] प्रकाशमान, रोशन, चमकदार

ईद-उल-फ़ित्र

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

है आबिदों[1] को ताअत-ओ-तजरीद की ख़ुशी
और ज़ाहिदों[2] को ज़ुहद की तम्हीद[3] की ख़ुशी
रिंद[4] आशिक़ों को है कई उम्मीद की ख़ुशी
कुछ दिलबरों के वस्ल की कुछ दीद की ख़ुशी
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

रोज़े की ख़ुश्कियों से जो हैं ज़र्द-ज़र्द गाल
ख़ुश हो गए वह देखते ही ईद का हिलाल
पोशाकें तन में ज़र्द, सुनहरी, सफ़ेद, लाल
दिल क्या कि हँस रहा है पड़ा तन का बाल-बाल
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

पिछले पहर से उठ के नहाने की धूम है
शीर-ओ-शकर, सिवय्याँ पकाने की धूम है
पीर-ओ-जवाँ को नअमतें खाने की धूम है

---

1 इबादत (पूजा अर्चना) करने वाला, तपस्वी

2 ऐसा व्यक्ति जो सांसारिक प्रपंचों, बखेड़ों, बुराइयों आदि से दूर रहकर ईश्वर का ध्यान करता हो

3 शुरुआत

4 धार्मिक परंपराओं को न मानने वाला, धार्मिक बंधनों से मुक्त

लड़कों को ईदगाह के जाने की धूम है
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

क्या ही मुआनक़े[1] की मची है उलट-पुलट
मिलते हैं दौड़-दौड़ के बाहम झपट-झपट
फिरतें हैं दिलबरों के भी गलियों में ग़ट के ग़ट
आशिक़ मज़े उड़ाते हैं हर दम लपट-लपट
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

जो-जो कि उनके हुस्न की रखते हैं दिल में चाह
जाते हैं उनके साथ लगे ता-बा ईदगाह
तोपों के शोर और दोगानों[2] की रस्म-ओ-राह
मियाने, खिलौने, सैर, मज़े, ऐश वाह-वाह
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

रोज़े की सख़्तियों में न होते अगर असीर
तो ऐसी ईद की न ख़ुशी होती दिल-पज़ीर[3]
सब शाद हैं गदा से लगा शाह ता वज़ीर
देखा जो हमने ख़ूब, तो सच है मियां 'नज़ीर'
ऐसी न शब-ए-बरात न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

[1] गले मिलना, गले से लगाना
[2] कृतज्ञता या आभार प्रकट करने के लिए पढ़ी जाने वाली वह नफ़ल नमाज़ जिसमें दो रकात होती है
[3] दिल को लुभाने वाला, दिल पसंद, सुहावना, रुचिकर, सुखद

फूल वालों की सैर

गोपीनाथ अमन देहलवी

(1898-1983)

दिल-फ़ज़ा[1] बरसात का मौसम है और फूलों की सैर
हैं कहीं मुतरिब[2] की तानें और कहीं झूलों की सैर

है कभी धूप और कभी ठण्डी हवा बरसात है
वाह क्या मौसम है कैसा दिन है कैसी रात है

योग माया का है मंदिर, क़ुत्ब की दरगाह है
दोनों फ़िरक़ों की यहाँ देरीना रस्म-ओ-राह[3] है

ये वो दिल्ली है कि है मशहूर जिसकी सर-ज़मीन
ये वो दिल्ली है कि दिल-वालों के दिल लेती है छीन

ये वो दिल्ली है हज़ारों ज़ख़्म जिसमें सिल गए
ये वो दिल्ली है जहाँ पंजाब यूपी मिल गए

---

[1] दिल को अच्छा लगने वाला, दिलकश, सुंदर

[2] गवय्या, गायक

[3] मेल-जोल, मेल-मिलाप, ताल्लुक़ात

सब ज़माने भर के दुखड़े आज के दिन भूलिए
फ़लसफ़ा बाला-ए-ताक़[1], अब गाईए और झूलिए

वाज़[2] के दिन और भी आएँगे हज़रत आईए
झूलिये पींगें[3] बढ़ा कर, बारह-मासे[4] गाईए

क़हक़हों से ही इलाज-ए-दर्द-ओ-ग़म पैदा करें
कड़वे पानी के बग़ैर इक नशा हम पैदा करें

[1] बिलकुल भुला देना

[2] उपदेश, सीख, नसीहत

[3] झूला झूलते समय झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना

[4] बारह छंदों की एक हिंदी कविता जो मौसम के विशिष्ट परिवर्तनों और बारह महीनों के दृश्यों का वर्णन करती है

अजंता

सिकंदर अली वज्द

(1914-1983)

जहाँ ख़ून-ए-जिगर पीते रहे अहल-ए-हुनर बरसों
जहाँ घुलता रहा रंगों में आहों का असर बरसों
जहाँ खिंचता रहा पत्थर पे अक्स-ए-ख़ैर-ओ-शर[1] बरसों
जहाँ क़ायम रहेगी जन्नत-ए-क़ल्ब-ओ-नज़र बरसों
जहाँ नग़मे जनम लेते हैं रंगीनी बरसती है
दक्कन[2] की गोद में आबाद वह ख़्वाबों की बस्ती है

शराब-ओ-शेर की तासीर है ठण्डी हवाओं में
बहार-ए-ज़िंदगी ग़लताँ है सब्ज़े की अदाओं में
नवाए-सरमदी आती है झरनों की सदाओं में
बयाँ मुमकिन नहीं वह लुत्फ़ आता है दुआओं में
यहाँ सदियों से राइज पुर-सुकूँ शीरीं-मक़ाली[3] है
यहाँ का ज़र्रा-ज़र्रा मज़हर-ए-शान-ए-जमाली है

---

[1] भलाई और बुराई, पाप और पुन्य

[2] दक्षिणी भारत

[3] मधुर बात-चीत, बात में मिठास

तजल्ली[1] ज़ार-ए-इरफ़ाँ शाहकार-ए-इब्न-ए-आदम[2] है
सर-ए-फ़ितरत, अमल की बारगाह-ए-हुस्न में ख़म है
तमद्दुन मुनअकिस[3] हो जिस में ऐसा साग़र-ए-जम है
जमाल-ए-ज़िंदगी रहन-ए-जलाल-ए-अज़्म-ए-गौतम है
उम्मीद-ए-जान-ए-ताज़ा फिर दिल-ए-बिस्मिल में आई थी
तलाश-ए-अम्न में तहज़ीब इस मंज़िल पे आई थी

कहीं पैदा है सारी कैफ़ियत सहन-ए-गुलिस्ताँ की
कहीं रौनक़ नज़र आती है बाज़ार-ए-शबिस्ताँ[4] की
कहीं हैरत ज़बान-ए-हाल है हाल-ए-परेशाँ की
लकीरें हैं कि शिरयानें दिल-ए-इंसान-ओ-हैवाँ की
कहीं ज़ुल्मत के पीछे रोशनी महसूस होती है
कहीं तो मौत में भी ज़िंदगी महसूस होती है

हरीफ़-ए-नग़्मा-ए-जाँ बख़्श ये ख़ामोश-ए-गोयाई
कमाल-ए-फ़िक्रो-फ़न, हुस्ने-तनासुब, शान-ए-ज़ेबाई
हक़ीक़त बन गई जज़्बात की सद-रंग-ए-रानाई
लबों पर ज़ौ-फ़िगन[5] है नूर-ए-ऐजाज़-ए-मसीहाई
निगाहों में अजब अंदाज़ है ख़ारा-गुदाज़ी का
दिलों पर नक़्श रह जाता है जिनकी बे-नियाज़ी[6] का

---

[1] चमक, प्रकाश, रौशनी

[2] मनुष्य की अतिउत्तम रचना

[3] ज़ाहिर होना

[4] रात की महफ़िल

[5] रौशनी डालने वाला, प्रकाशित करने वाला

[6] उपेक्षा

करिश्मा है ये अरबाब-ए-हुमम की सई-ए-पैहम[1] का
जिन्हें एहसास भी होता न था कुछ शादी-ओ-ग़म[2] का
दिलों पर अक्स खिंच आया था जिनके हुस्न-ए-आलम का
क़लम को नक़्श-ए-अज़-बर[3] हो गया था इस्म-ए-आज़म
का
चटानों पर शबाब-ओ-हुस्न की मौजें रवाँ कर दीं
फ़ुसूँकारों ने रंगों में मुक़य्यद बिजलियाँ कर दीं

हरीम-ए-काबा-ए-फ़न, माबुद-ए-नाज़ुक ख़्यालाँ है
जहान-ए-नूर-ओ-निकहत, मसकन-ए-आशुफ़्ता हालाँ है
जुनूँ अफ़्शाँ फ़िज़ा में मस्ती-ए-चश्म-ए-ग़ज़ालाँ है
लब-ए-जूए-कुहिस्ताँ जल्वागाह-ए-ख़ुश-जमालाँ है
मिला है ज़िंदगी को बाँकपन इन कज-कुलाहों से
नज़र वालों पे शमशीरें बरसती हैं निगाहों में

जिगर के ख़ून से ख़ींचे गए हैं नक्श-ए-लाफ़ानी
तसद्दुक़ जिनके हर ख़त पर तहय्युर[4] ख़ाना-ए-मानी
मुशक्कल[5] है शबाब-ओ-हुस्न में तख़य्युल-ए-इंसानी
तक़द्दुस[6] के सहारे जी रहा है ज़ौक़-ए-उर्यानी

1 निरंतर संघर्ष, लगातार प्रयास

2 ख़ुशी और ग़म

3 ज़बानी याद, कंठस्थ

4 अचम्भा, विस्मय, हैरत, तअज्जुब

5 ख़ूबसूरत, अच्छी शक्ल का

6 कृपा

हसीनान-ए-ख़ुद-आरा [1] का जुनूँ सरताज है गोया
यहाँ जज़्बात के इज़्हार की मेराज [2] है गोया

हुनरमंदों में तस्वीरों में गोया जान भर दी है
तराज़ू दिल में हो जाती है वह काफ़िर नज़र दी है
अदाओं से अयाँ [3] है लज़्ज़त-ए-दर्द-ए-जिगर दी है
खुलेंगे राज़, इस डर से दहन पर मोहर कर दी है
ये तस्वीरें ब-ज़ाहिर साकित-ओ-ख़ामोश [4] रहती हैं
मगर अहल-ए-नज़र पूछें तो दिल की बात कहती हैं

गुलिस्ताँ से जो गुज़रा क़ाफ़िला फ़स्ल-ए-बहारी [5] का
बहाना मिल गया अहल-ए-जुनूँ को हुस्नकारी [6] का
चटानों पर बनाया नक़्श दिल की बे-क़रारी का
सिखाया गुर इसे जज़्बात की आईनादारी [7] का
अमानत सीना-ए-कोहसार में इक दास्ताँ रख दी
जिगरदारों ने बुनियाद-ए-जहान-ए-जावेदाँ [8] रख दी

जहाँ छोड़ा ख़ुशी से जावेदाँ पैग़ाम की ख़ातिर
सफ़-आरा [9] थे शिस्त-ए-गर्दिश-ए-अईयाम की ख़ातिर

---

[1] ख़ुद को संवारने वाला हुस्न, सिंघार करने वाला सुन्दर शख़्स
[2] सीढ़ी, ऊपर चढ़ने का माध्यम, ऊपर चढ़ने का साधन, श्रेणी
[3] ज़ाहिर
[4] शांत और ख़ामोश
[5] वसंत ऋतु, बसंत का मौसम
[6] श्रृंगार, सज-धज, सौंदर्यीकरण
[7] आज्ञाकारिता, सेवा
[8] हमेशा रहने वाला
[9] जंग के लिए तैयार, जंग में लड़ने वाला, चढ़ाई करने वाला

झुकाया सर न अपना शोहरत-ओ-इनाम की ख़ातिर
जिए भी काम की ख़ातिर मरे भी काम की ख़ातिर
ज़माने की जबीं पर अक्स छोड़े हैं निगाहों के
रहेंगे नक़्श उनके नाम मिट जाएँगे शाहों के

एलोरा

सिकंदर अली वज्द

(1914-1983)

मय-ए-ख़्याल है संगीन आब-गीनों[1] में
दिलों का सोज़-ए-निहाँ[2], पत्थरों के सीनों में
छुपाए नूर-ए-अज़ल बुत हैं आस्तीनों में
हयात जज़्ब है इन बे-शिकन जबीनों में

यहाँ जो सैर को फ़िक्र-ए-रसा[3] निकलती है
वुफ़ूर-ए-शौक़ में परबत की साँस चलती है

अयाँ हैं अरसा-ए-हस्ती के सब नशीबो-फ़राज़[4]
हुई है रूए हक़ीक़त से दूर गर्दे-मजाज़
मिली जो ज़ौक़े-अमल[5] को ख़्याल की परवाज़
निशाते-कार ने कर दी हयात-ए-कार दराज़

कुमुंद-ए-गर्दिशे-अय्याम के असीर नहीं
नुक़ूश-ए-दस्ते-अक़ीदत फ़ना-पज़ीर नहीं

अज़ीम अज़्म थे जाँ-बाज़ नक़्शकारों के
ख़िजाँ की फ़िक्र न अरमान थे बहारों के
दिलों में ख़्वाब थे बेदार कोहसारों के

---

[1] हीरा, रत्न

[2] छुपी हुई जलन, अन्दर की आग

[3] वो सोच जो असल मक़सद तक पहुंच जाये

[4] उतार-चढ़ाव

[5] कार्य की इच्छा, कार्य के लिए तड़प

नज़र उक़ाब[1] की, तेशे[2] थे बर्क़-पारों[3] के
तसव्वुरात के पैकर तराश डाले हैं
दिए वो दिल जो हमेशा धड़कने वाले हैं

बनाई तेशावरों ने ख़्याल की दुनिया
खुली हुई है उरूज-ओ-ज़वाल[4] की दुनिया
जुनूँ-नवाज़, जलाल-ओ-जमाल[5] की दुनिया
रहीन-ए-मिन्नत-ए-माज़ी है हाल की दुनिया
नुजूम डूब गए जल्वा-ए-सहर के लिए
हुआ है ख़ून-ए-दिल इस जन्नत-ए-नज़र के लिए

निगार-ख़ाना-ए-आलम[6] का अक्स ये वादी
हज़ार हश्र-ए-बदामाँ ख़मूश-ए-आबादी
हुनरवरों को थी अर्ज़-ए-हुनर[7] की आज़ादी
यहाँ नहीं है कोई नक़्श, नक़्श-ए-फ़रियादी
ग़ुलाम-ए-मर्ज़ी-ए-हालात हुस्न-ए-कार नहीं
कमाल-ए-फ़िक्र के शहकार इश्तिहार नहीं

सुकून-ए-रूह इस आगोश-ए-कोहसार में है
यह ज़िंदा ख़्वाब किसी चश्मे-इंतिज़ार[8] में है
ज़मामे-शामो-सहर दिल के इख़्तियार में है
ज़माना महुए यहाँ जुस्तजू-ए-यार में है
निगाह ढूँढ़ रही है निशाँ नहीं मिलता
ग़ुबार सामने है कारवाँ नहीं मिलता

---

[1] गरुड़, गिद्ध जाति का एक बड़ा शिकारी पक्षी, बाज़
[2] पत्थर काटने का औज़ार
[3] बिजली की तरह तेज़ रफ़्तार
[4] वृद्धि और गिरावट, ऊँच-नीच
[5] श्रेष्ठता और ख़ूबसूरती
[6] दुनिया के चित्रालय, तस्वीर-घर
[7] कला का प्रदर्शन
[8] इंतिज़ार करने वाली आँखें

जामा मस्जिद देहली

जगन्नाथ आज़ाद

(1918-2005)

ऐ जज़्ब-ए-तहारत की अमीं मस्जिद-ए-जामाँ
रौशन दिल-ओ-ताबिन्दा जबीं मस्जिद-ए-जामाँ
ऐ जल्वा-ए-अन्वार-ए-यक़ीं मस्जिद-ए-जामाँ
ऐ ख़ातिम-ए-देहली की नगीं मस्जिद-ए-जामाँ
है आज भी तस्कीन-ए-नज़र तेरा नज़ारा
तू आज भी है रूह की दुनिया का सहारा

दामन में संभाले हुए सदियों की अमानत
पाकीज़गी-ए-क़ल्ब-ओ-नज़र, रूह की इफ़्फ़त
शाही में फ़क़ीरी की दरख़्शंदा रिवायत
एहसास का इक जज़्बा-ए-सरशार-ए-हक़ीक़त
इस दौर में तू मम्बा-ए-अनवार[1] है अब भी
तारीकी-ए-आलम में ज़ियाबार[2] है अब भी

इक नक़्शे-दिल-आवेज़[3] है तू ख़ून-ए-जिगर का
जल्वा तेरा नज़्ज़ारा है अनवार-ए-सहर[4] का

---

[1] रोशनी का स्रोत

[2] रोशनी फैलाने वाला

[3] दिलकश, दिल लुभाने वाला नक़्श

[4] सुबह की रोशनी

तू फ़न की है तस्वीर नमूना है हुनर का
शहपारा-ए-जावेद है तू ज़ौक़-ए-नज़र[1] का
रक़्साँ तेरी दुनिया में हैं आयात-ए-तजल्ली
अल्लाह रे तेरे ये मक़ामात-ए-तजल्ली

तू फ़क्र की तस्वीर है वह ज़ेरे-समावात
हैं जिस से अयाँ सीना-ए-आदम के कमालात
दुनिया को दिखा आज कोई हुस्ने-करामात
तू चश्मा-ए-हैवाँ है जहाँ आलमे-ज़ुलमात
तू आज है इक सोज़-ए-मोहब्बत का नमूना
ऐ आदम-ए-ख़ाकी की करामत का नमूना

ऐ माबुदे-अनवारे-यक़ीं! हासिल-ए-इदराक
ऐ मंज़िले-अनवारे-कुहन जल्वा गह-ए-पाक
हस्ती-ए-दवामी से इबारत है तेरी ख़ाक
क्या गर्दिश-ए-अय्याम[2] है क्या गर्दिशे-अफ़लाक[3]
दुनिया है तेरी नूर-ए-फ़िज़ा रोज़-ए-अबद[4] तक
है साज़ तेरा नग़्मा-सरा[5] रोज़-ए-अबद तक

---

[1] किसी वास्तु को परखने का क्षमता

[2] कालचक्र, समय का लेखा, मुसीबत और दुःख का ज़माना

[3] आकाश का फेरा, समय का परिवर्तन

[4] अनन्तकाल का दिन

[5] गाने वाला, गायक, गवैया

ताजमहल

सीमाब अकबराबादी

(1882-1951)

आ तुझे मैं अपने फ़िरदौस-ए-वतन[1] में ले चलूँ
जिसमें हूरें बाग़बाँ हैं उस चमन में ले चलूँ
इक मुकम्मल आईना-ख़ाना[2] दिखाऊँ मैं तुझे
इक मुजस्सम रंग-ओ-बू की अंजुमन में ले चलूँ
जल्वागाह-ए-लाला-ओ-गुल की मैं दावत दूँ तुझे
सुब्ह-ज़ार-ए-नस्तरीन-ओ-नस्तरन में ले चलूँ
ज़िन्दगी की जिसके गोशों से उबलती है शराब
जो नई अब भी है उस बज़्म-ए-कुहन[3] में ले चलूँ
ले ये नक़्श-ए-सादा-ए-ख़ाकस्तर-ए-बर्बाद देख
आँख बन कर दुर्रतुत-ताज-ए-ख़राब आबाद देख
पुर-सुकूँ हुस्नो-मोहब्बत का यह इक तूफ़ान देख
जिसके हुस्नो-इश्क़ दो उन्वान हैं वह अरमान देख
यह मुसव्विर का तख़य्युल और ख़्वाब-ए-मरमरीं[4]
रूह में होता है जिसको देख कर हैजान[5] देख
देख इसके फ़र्श पर हैं अर्श कितने जल्वा-गर

[1] देश की जन्नत

[2] शीशमहल, वह मकान जिसमें हर तरफ़ दर्पण लगे हों, वह घर जिसकी दीवारों में आईने जड़े हों

[3] पुरानी महफ़िल

[4] साफ़-सुथरा ख़्वाब

[5] आवेश, जोश, उबाल, उत्तेजना

देख इक अफ़्साना-ए-मुमताज़[1] का उन्वान देख
सब्ज़ा-दर-सब्ज़ा, गुल अंदर गुल, बहार अंदर बहार
कर नज़र माहौल पर इसके, फिर इसकी शान देख
तकमिला सनअत का है इसका हर इक नक़्शो-निगार
आ गया है खिंच के इक नुक़्ते में हिंदुस्तान देख
क्या मताए-दो-जहाँ[2] से ये गिराँ-क़ीमत[3] नहीं
पूछता हूँ कि ये क्या है अगर जन्नत नहीं

काश दुनिया और इक शाहे-जहाँ पैदा करे
काश फिर हो ख़ाक से जिस्म-ए-मोहब्बत जल्वा-गर
दीदा-ए-सय्याह में गर हो बसीरत की चमक
अब भी सूरज देख ले, ज़र्रों के सीने चीर कर
ये बहार-ए-ज़ाहिरी, ये निशात-ए-आशकार
जो बहर-उनवान है हैरत फ़ज़ाए हर नज़र
इसका बातिन है कुछ इससे भी ज़्यादा रूह-कश
किसने देखे हैं अभी वह जलवा-हाए मुस्ततिर
जब मोहब्बत ग़ौर से उस पर करेगी तब्सिरा[4]
रूह के पर्दे नज़र आएँगे ये बाम-और-दर[5]
इश्क़ इस महफ़िल में है सद-नाला, सद-काविश हुनूज़
हुस्न है इन चिलमनों में महव-ए-आराइश[6] हुनूज़[7]

---

[1] मुमताज की कहानी

[2] दोनों जहाँ (दुनिया) से मूल्यवान

[3] बहुमूल्य, मूल्यवान, क़ीमती

[4] आलोचना, समीक्षा

[5] छत और दरवाज़ा

[6] सजावट में मसरूफ़

[7] अभी तक, अब तक

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)
दर्शन सिंह दुग्गल
(1921-1989)

रूह-ए-इंसाँ [1] को हक़ीक़त से मिलाने वाले
मरहबा! नग़मा-ए-तौहीद [2] सुनाने वाले
दौर पर दौर चले, बादा-ए-इख़लास [3] का फिर
मुंतज़िर [4] बैठे हैं सब पीन-पिलाने वाले
कर दे बे-ज़ार ज़रा फिर से ज़मीर-ए-इंसाँ
ख़्वाब-ए-ग़फ़लत [5] से ज़माने को जगाने वाले
अहल-ए-दिल भूल नहीं सकते हैं ऐहसाँ तेरा
ग़म की मारी हुई दुनिया का हँसाने वाले
क्यूँ न दम तेरा भरें अहल-ए-वला[6], अहल-ए-वफ़ा
नक़्श उल्फ़त का हर इक दिल में बिठाने वाले
कश्ती-ए-ज़ीस्त है तूफ़ाँ में बचा ले इसको
डूबती नाव को साहिल पे लगाने वाले
ख़ाक-ए-पा को तेरी ऐ नूर-ए-ख़ुदा के हामिल
सुरमा-ए-चश्म [7] बनाते हैं बनाने वाले

---

[1] इंसान की आत्मा

[2] ख़ुदा को एक मानने का गीत, अद्वैतवाद

[3] निष्ठा, वफ़ा का जाम

[4] इंतिज़ार में

[5] असंवेदनशीलता, अनभिज्ञता, बेख़बरी

[6] प्रबुद्ध लोग

[7] बड़ी इज़्ज़त और मोहब्बत दिखाना

हम फ़क़ीरों पे भी हो जाए तेरा लुत्फ़-ओ-करम
बार हँस-हँस के ग़रीबों का उठाने वाले
लौ लगाए हुए बैठे हैं गुज़रगाहों [1] में
बंदगी तेरी करूँ मुझको यह तौफ़ीक़ तो बख़्श
वादा-ए-रोज़-ए-अज़ल [2] याद दिलाने वाले
बख़्ते-'दर्शन [3]' पे भी इक बार नज़र [4] हो जाए
बिगड़ी तक़दीर ज़माने की बनाने वाले

---

[1] किसी केगुज़रने अर्थात आने-जाने का मार्ग रास्ता

[2] सृजन का दिन, प्रथम दिन, वह दिन जब ईश्वर ने मनुष्यों से प्रतिज्ञा ली थी

[3] दर्शन के भाग्य, क़िस्मत

[4] इनायत, मेहरबानी

राम

अल्लामा इक़्बाल

(1877-1938)

लबरेज़[1] है शराब-ए-हक़ीक़त से जाम-ए-हिंद
सब फ़लसफ़ी हैं ख़ित्ता-ए-मग़रिब के राम-ए-हिंद
ये हिन्दियों की फ़िक्र-ए-फ़लक-रस का है असर
रिफ़अत[2] में आसमाँ से भी ऊँचा है बाम-ए-हिंद
इस देस में हुए हैं हज़ारों मलक-सरिश्त[3]
मशहूर जिन के दम से है दुनिया में नाम-ए-हिंद
है राम के वजूद पे हिन्दोस्ताँ को नाज़
अहल-ए-नज़र[4] समझते हैं इस को इमाम-ए-हिंद
एजाज़ इस चराग़-ए-हिदायत[5] का है यही
रौशन-तर-अज़-सहर है ज़माने में शाम-ए-हिंद
तलवार का धनी था शुजाअत[6] में फ़र्द था
पाकीज़गी[7] में जोश-ए-मोहब्बत में फ़र्द था

[1] भरा हुआ
[2] प्रतिष्ठा
[3] फ़रिश्तों जैसा व्यवहार रखने वाला, नेकदिल
[4] अंतर्दृष्टि वाले, दूरदर्शी
[5] सीधा रास्ता दिखाना
[6] दिलेरी, मर्दानगी, वीरता
[7] पवित्रता, शुद्धता

गौतम बुद्ध

साग़र निज़ामी

(1905-1984)

ऐ मोहब्बत के प्यामी रहम के पैग़ाम्बर
तूने पहुँचाई ज़माने को हक़ीक़त की ख़बर
ज़िंदगी का राज़-ए-असली तुझ पे उरयाँ[1] हो गया
शांति और हक़ का हासिल तुझको इरफ़ाँ हो गया
तेरी ताक़त से हुआ कम इक़्तिदार-ए-बरहमन
टुकड़े-टुकड़े हो गया हिस्न-ए-वक़ार-ए-बरहमन
सल्तनत तेरे लिए इक तोदा-ए-ख़ाशाक थी
मादीयत तेरे नूरानी क़दम की खाक थी
जुज़्वे-आला तेरे दीन-ए-आशिक़ी अफ़रोज़ का
एतिक़ादे-नेक व फ़ेल-ए-नेक व क़ौल-ए-नेक था
तेरे साग़र में शराबे-इश्क़े-आलमगीर थी
तेरे मयख़ाने की अदना ख़ाक भी इकसीर[2] थी
सर-ब-सज्दा हो गई दुनिया हुज़ूर-ए-एशिया
छा गया तारीकी-ए-आलम[3] पे नूर-ए-एशिया[4]

---

[1] ज़ाहिर

[2] वह रस या भस्म जो किसी निम्न कोटि की धातु को सोना या चाँदी के रूप में परिवर्तित कर दे

[3] दुनिया का अँधेरा

[4] एशिया का प्रकाश

ऐ मेरे प्यारे वतन के राहिब-ए-आली-मक़ाम [1]
आज भी कलमा तेरा पढ़ती है दुनिया सुब्ह-ओ-शाम
अम्न, सरनामा तेरे क़ानून-ए-अख़्लाक़ी का है
रहम, इक उन्वाँ तेरी तालीम-ए-रूहानी का है
तेरी तालीमात पर हिंदोस्ताँ को नाज़ है
तिफ़्ले-मग़रिब जहलो-मदहोशी में जब आलूदा था
सारा मशरिक़ तेरी तालीमात से आसूदा था
जाग ख़्वाब-ए-नाज़[2] से और अम्न[3] का इक गीत गा
फिर तेरा मसकन निशाना है सितम और ज़ुल्म का
जिस ज़मीं से तूने आवाज़-ए-वला की थी बुलंद
जिस ज़मीं से तूने इक बाँग-ए-दरा[4] की थी बुलंद
वह ज़मीं अग़्यार[5] के हाथों से फिर बर्बाद है
ज़ुल्मो-बातिल और निफ़ाक़ो-किज़्ब[6] से आबाद है
कोना-कोना, गोशा-गोशा, ज़र्रा-ज़र्रा है ग़ुलाम
ऐ मेरे गौतम! तेरी आज़ाद दुनिया है ग़ुलाम
कर ग़ुलामी से रिहा हमको फिर, अरमाँ है यही
आज हिंदोस्ताँ में मफ़हूम-ए-निरवाँ[7] है यही

---

[1] महान सन्यासी, बैरागी, जोगी

[2] प्रिय के सपने

[3] शांति

[4] क़ाफ़िले में प्रस्थान के समय बजने वाले घण्टों की ध्वनि या आवाज

[5] ग़ैर लोग, अनजान लोग अर्थात दुश्मन

[6] झूठ, कपट, फूट, बिगाड़, शत्रुता

[7] मोक्ष, मुक्ति का अर्थ

भाकड़ा नंगल

जगन्नाथ आज़ाद

(1918-2005)

अदराल के अनवार से ताबाँ है यही ख़ाक
तन्वीर-ए-अज़ाइम से फ़रोज़ाँ है यही ख़ाक
ऐ दर्द-ए-वतन हासिल-ए-अरमाँ है यही ख़ाक
दी इसको हयात अपनी अज़ीज़ान-ए-वतन ने
जाँ इस पे फ़िदा की है मुहिब्बान-ए-वतन ने
पहुँचा है इसे नन्नू से शहीदान-ए-वतन ने
आज़ाद निगाहों में जो है ख़ित्ता-ए-नंगल
कल तक था यह ख़ित्ता कहीं सेहरा कहीं जंगल
हिम्मत के तुफ़ैल आज इसी जंगल में है मंगल
सेहरा कि जो थे किश्ता-ए-अंदोह निहानी
मचली हुई अब इन में है खेतों की जवानी
यूँ इल्म के हाथों में है दरिया की रवानी
कब का था ये अरमान कि इंसाँ ने निकाला
इस तरह चट्टानों को फ़िज़ाओं में उछाला
लर्ज़े में है बुनियाद कोहिस्तान-ए-हिमाला
मिट्टी की चटानें थीं कि पत्थर की चटानें
जब उन पे तराज़ू हुईं हिम्मत की सनानें
कुछ ओर ही नक़्शा था ये मानें कि न मानें
पहले तो किया सीना-ए-दरिया को दो-पारा
दोनों को फिर इस तरह सुरंगों से गुज़ारा

हर दीदा-ए-मुश्ताक़ था कुर्बान-ए-नज़ारा
दरिया का जिगर चीर गई अक़्ल बशर की
तफ़्सील कहे कौन अब इस राह-गुज़र की
ज़ुल्मत पे मुसल्लत[1] हुई तन्वीर सेहर की
सब्ज़ा तेरे माहौल का है मख़मल-ओ-बानात
हीरों से फ़ुज़ूँ-तर तेरे पहलू के हैं ज़र्रात
क़तरे तेरे दाम के दरख़्शंदा-ए-फ़िलिज़्ज़ात[2]
तामीर तेरी काबा-ए-अरबाब-ए-नज़र है
तस्वीर तेरी जल्वा-ए-अनवार-ए-बशर है
तू शब के अंधेरे में तजल्ली-ए-क़मर[3] है
क़ायम है तेरी जज़्बा-ए-इख़्लास पे बुनियाद
सरगर्म-ए-अमल तुझ पे हैं इस दौर के फरहाद
तेरे लिए उट्ठी है दुआ-ए-दिल-ए-आज़ाद
पैदा हो तेरी ख़ाक में ख़ासियत-ए-इक्सीर
किरदार तेरा महर-ए-मुनव्वर की हो तन्वीर
दुनिया में हो इक माया-ए-रहमत[4] तेरी तामीर
इदराक के अनवार से ताबाँ है यही ख़ाक
तन्वीर-ए-अज़ाइम से फ़रोज़ाँ है यही ख़ाक
ऐ दर्द-ए-वतन हासिल-ए-अरमाँ है यही ख़ाक
दी इसको हयात अपनी अज़ीज़ान-ए-वतन ने
जाँ उस पे फ़िदा की है मुहिब्बान-ए-वतन ने
पहुँचा है इसे नन्नू से शहीदान-ए-वतन ने

---

1 हावी
2 चमकदार धातु
3 चाँदनी रोशनी
4 रहमत की पूँजी

महावीर स्वामी

उन्वान चिश्ती

(1937-2004)

बहुत दिन हुए इक थी ज़ात-ए-गिरामी[1]
ज़माने में है जिसकी शोहरत दवामी[2]
जगत का सहारा, अहिंसा प्यामी
वह ख़ल्के-मुजस्सम[3], मोहब्बत का हामी
अभी तक यह दुनिया है जिसकी सलामी
सिद्धार्थ का बेटा, महावीर स्वामी
महावीर स्वामी
इन्हीं की विलादत के फ़ैज़-ओ-असर से
हुआ हुक्म यह क़ुदरत-ए-दाद-गर[4] से
कि अब इस क़दर "हन" ज़माने में बरसे
न हरगिज़ कोई माल-ओ-दौलत को तरसे
लिखा है मौर्रिख़[5] ने भी आब-ए-ज़र[6] से
हुरूफ़-ए-जली[7] में वह इस्म-ए-गिरामी[8]

---

1 कोई बड़ा और महत्वपूर्ण व्यक्ति

2 स्थायी, सदा रहने वाला

3 पूर्ण रूप से उच्छ शिष्टाचार वाले

4 न्याय करने वाला

5 इतिहासकार

6 स्वर्ण पानी

7 मोटे अक्षरों में लिखा हुआ लेख

8 शुभ नाम

महावीर स्वामी
लिखा है कि जब आप तशरीफ़ लाए
ज़मीं हँस पड़ी, आसमाँ जगमगाए
इरादत से हाथी का मरकब[1] उड़ाए
हज़ार आँखें चश्म-ए-तमन्ना बनाए
ज़ियारत[2] को ख़ुद इंद्र भी जिसकी आए
वह था हुस्न में रश्क-ए-माह-ए-तमामी
महावीर स्वामी
महावीर ही के क़दम की बदौलत
चमक उट्ठी गोया ज़माने की क़िस्मत
ज़मीं बनने की आस्माँ को थी हसरत
ब-सद शानो-शौकत, ब-सद जाहो-हशमत[3]
जल्वा में चले जिसके इंद्र-ओ-इरादत
वह पाण्डुकशिला की तरफ़ ख़ुश-ख़िरामी[4]
महावीर स्वामी
सरनद्वीप क़दमों में सर पर हिमाला
जगत में न हो उसका क्यों बोलबाला
अहिंसा को परमोधरम कहने वाला
यही है वह अरिहंत जगत में निराला
जो मशहूर है "ज्ञान दर्शन उजाला"
उसी का है मुमताज़ इस्म-ए-गिरामी
महावीर स्वामी

---

1 वाहन, सवारी

2 किसी पवित्र व्यक्ति या स्थान का दर्शन

3 ठाट-बाट, वैभव, गरिमा

4 सुंदर चाल, दिल को रिझाने वाली चाल

निज़ामुद्दीन औलिया रह.

अल्लामा इक़बाल

(1877-1938)

फ़रिश्ते पढ़ते हैं जिस को वो नाम है तेरा
बड़ी जनाब तेरी फ़ैज़-ए-आम [1] है तेरा
तेरे वजूद से रौशन है राह-ए-मंज़िल-ए-शौक़[2]
दयार-ए-इश्क़ [3] का मुस्हफ़-ए-कलाम तेरा
निहाँ है तेरी मोहब्बत में रंग-ए-महबूबी
बड़ी है शान बड़ा एहतेराम है तेरा
ख़रोश-ए-मयकदा-ए-शौक़ है तेरे दम से
तलब हो फ़क्र[4] की जिसकी वह जाम है तेरा
सितारे इश्क़ के तेरी कशिश से हैं क़ायम
निज़ाम-ए-महर की सूरत निज़ाम है तेरा
अगर सियाह दिलम दाग़-ए-लाला-ज़ार-ए-तवाम
दिगर कुशादा जबीनम गुल-ए-बहार-ए-तवाम

---

[1] ऐसा यश जो आम इंसान के लिए हो

[2] गंतव्य की राह

[3] प्यार की दुनिया

[4] दरिद्रता, कंगाली, साधुता

गुरु-नानक

नज़ीर अकबराबादी

(1740-1830)

हैं कहते नानक शाह जिन्हें वो पूरे हैं आगाह गुरु
वो कामिल-ए-रहबर जग में हैं यूँ रौशन जैसे नाह गुरु
मक़्सूद मुराद उम्मीद सभी बर लाते हैं दिल-ख़्वाह गुरु
नित लुत्फ़-ओ-करम से करते हैं हम लोगों का निरबाह गुरु
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

हर आन दिलों विच याँ अपने जो ध्यान गुरु का धरते हैं
और सेवक हो कर उन के ही हर सूरत बीच कहाते हैं
गिर्द अपनी लुत्फ़ो-इनायत[1] से सुख चैन उन्हें दिखलाते हैं
ख़ुश रखते हैं हर हाल उन्हें सब मन का काज बनाते हैं
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

दिन रात जिन्हों ने याँ दिल विच है याद गुरु से काम लिया
सब मन के मक़्सद भर पाए ख़ुश-वक़्ती का हंगाम लिया
दुख दर्द में अपने ध्यान लगा जिस वक़्त गुरु का नाम लिया

[1] मेहरबानी और उपकार

पल बीच गुरु ने आन उन्हें ख़ुश-हाल किया और थाम लिया
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

जो हर दम उनसे ध्यान लगा उम्मीद करम की धरते हैं
वह उन पर लुत्फ़-ओ-इनायत से हर आन तवज्जा करते हैं
अस्बाब-ए-ख़ुशी और ख़ूबी के घर बीच उन्हों की भरते हैं
आनंद इनायत करते हैं, सब मन की चिंता हरते हैं
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

अल्ताफ़[1] जिन्हों पर हैं उन के सो ख़ूबी हासिल है उन को
हर आन 'नज़ीर' अब याँ तुम भी तो बाबा नानक शाह कहो
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु
इस बख़्शिश के इस अज़्मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

[1] कृपा, दया, करम

तस्वीर-ए-रहमत

तिलोकचंद महरूम

(1887-1966)

तेरी तौक़ीर [1] से तौक़ीर-ए-हस्ती है गुरु-नानक
तेरी तनवीर [2] हर ज़र्रे में बस्ती है गुरु-नानक
तेरी जागीर में इरफ़ाँ [3] की मस्ती है गुरु-नानक
तेरी तहरीर [4] औज-ए-हक़्क़-परस्ती [5] है गुरु-नानक
तेरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु-नानक

ज़ुहूरिस्तान-ए-रहमत [6] है कि ये तस्वीर है तेरी
कोई नक़्श-ए-हक़ीक़त है कि ये तस्वीर है तेरी
अयाँ सुब्ह-ए-सआदत [7] है कि ये तस्वीर है तेरी
दिल-ए-मुज़्तर [8] की राहत है कि ये तस्वीर है तेरी
तेरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु-नानक

---

[1] प्रतिष्ठा, सम्मान, आदर

[2] प्रकाश, रौशनी, चमक

[3] ब्रह्मज्ञान

[4] लिखावट, लेख

[5] सत्यनिष्ठता की उच्चता

[6] रहमत की जगह

[7] अच्छाई की सुबह

[8] बेचैन दिल

ख़मोशी से हुवैदा[1] है अजब अंदाज़-ए-गोयाई[2]
कि है मुँह बोलता पैकर ये नक़्शे-नाज़-ए-यकताई
हर इक उज़्व-ए-बदन[3] से है अयाँ एजाज़-ए-रानाई
ज़मीं पर है, मगर नज़रों में है परवाज़-ए-बालाई[4]
तेरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु-नानक

शबीह-ए-पाक है या इक तिलिस्म-ए-जाँ-फ़ज़ाई है
झलक ख़ुद जल्वा-ए-हुस्न-ए-अज़ल ने या दिखाई है
सफ़ा-ए-क़ल्ब-ए-आरिफ़[5] से सिवा इस में सफ़ाई है
रुख़-ए-अनवर[6] है या महताब-ए-चर्ख़-ए-पारसाई है
तेरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु-नानक

नज़र अफ़रोज़ है ऐसी अदाए जाँ-फ़िज़ा[7] उसमें
गुल-ए-फ़िरदौस[8] का हर रंग गोया भर दिया उसमें
नज़र आता है मजमा सर-ब-सर औसाफ़[9] का उसमें
कि हैं सिद्क़ो-सफ़ा[10], फ़क़्रो-ग़िना[11], लुत्फ़ो-अता उसमें
तेरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु-नानक

---

1 व्यक्त, ज़ाहिर

2 बातचीत का अंदाज़

3 जिस्म का हिस्सा

4 बुलंद उड़ान

5 ब्रह्मज्ञानी के हृदय की शुद्धि

6 रोशन चेहरा, दमकता हुआ चेहरा

7 ख़ुशी देने वाला

8 जन्नत के फूल

9 गुण, ख़ूबियाँ, अच्छाईयाँ

10 सच्चाई और शुद्धता

11 फकीरी और अमीरी, ग़रीबी और अमीरी

आवाज़-ए-हक़

(हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रह.)

दर्शन सिंह दुग्गल

(1921-1989)

मिली थी खाक के पैकर को रूह-ए-इश्क़-ओ-दिलदारी
ज़मीन-ओ-आस्माँ से ज़ीस्त[1] रखती थी शनासाई[2]
सलाम ऐ रूह-ए-दानाई

तेरे दयार में धुल जाती थी गर्द-ए-जिस्म-ए-इंसानी
तेरी निकहत[3] से जाग उठता था अरमाने-दिल-आसाई
सलाम ऐ रूह-ए-दानाई

दयार-ए-हिंद के हर फूल में ख़ुश्बू मिली तेरी
कि ये धरती हर इक ख़ुश्बू को ख़ुद में जज़्ब[4] करती है
इसी बाइस[5] तो है यह सरज़मीं तस्वीर-ए-रानाई[6]
सलाम ऐ रूह-ए-दानाई

---

[1] ज़िंदगी
[2] परिचय
[3] ख़ुशबू
[4] आत्मसात्, एक में समाया हुआ
[5] कारण, हेतु
[6] सुंदरता की तस्वीर, सौंदर्य

यह धरती पाक रूहों की तमन्नाओं का मसकन[1] है
यह धरती गर्म भी है सर्द भी, शोला भी शबनम भी
हज़ारों अहल-ए-दानिश[2] से हैं बढ़कर याँ के सौदाई[3]
सलाम ऐ रूह-ए-दानाई

मुबारक वह ज़मीं जिसमें तेरा जिस्म आरमीदा[4] है
तेरे मदफ़न[5] से है चश्म-ए-रवाँ वहदत-परस्ती[6] का
तेरे ज़र्रों को चूमे, सुब्ह-ए-गर्दूं[7] है तमन्नाई
सलाम ऐ रूह-ए-दानाई

[1] रहने का स्थान, घर, मकान
[2] बुद्धिमान, विद्वान लोग
[3] व्यापारी, सौदा करने वाला
[4] आराम पाया हुआ, विश्राम-प्राप्त
[5] क़ब्रिस्तान, मज़ार, मक़बरा, समाधि
[6] अद्वैतवाद, ईश्वर को एक मानना
[7] सुबह का आसमान

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन : एक नई पहल

भारत अपनी समृद्ध परंपरा को आत्मसात करते हुए धार्मिक, भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद 'अनेकता में एकता' के मूलमंत्र का अनुगामी रहा है। इस महान देश का इतिहास मानव-प्रेम के दृष्टान्तों से भरा पड़ा है। यह शक्ति, शांति और भक्ति के गीतों का ही प्रतिफल है कि 'धरती के बासियों की मुक्ती प्रीत में है'। लेकिन यह भी एक दुखद सत्य है कि वर्तमान में भारत कठिन समय से गुज़र रहा है। ऐसे समय में शक्ति के साथ शान्ति और सद्भाव की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश को किसी की बुरी नज़र लग गई। सामाजिक निकटता दूरियों में परिवर्तित हो रही है और देशवासियों में एक दूसरे के प्रति अंजाना और अदृश्य खिंचाव का बोध हो रहा है। वास्तविकता यह भी है कि देश की अधिकांश जनसंख्या अभी भी इस अलगाव तथा विभाजन का हिस्सा बनने के लिए तत्पर नहीं है, परन्तु बहुसंख्यक जनता यदि मौन रहती है तो उसका अस्तित्व गहन अन्धकार के गर्त में समा जाता है। वर्तमान में अधिकांश लोग समाज एवं मानवता के दुखों के निवारण के बजाय केवल और केवल 'स्व' की परिक्रमा में व्यस्त हैं। वे स्वयं की पीड़ा से ग्रस्त हैं। वह मनुष्य जो कभी जनसाधारण की आकांक्षा का स्वर हुआ करता था आज अपने आप तक सीमित होकर रह गया है। घृणा, शत्रुता, आघात-प्रतिघात एवं आतंकवाद के व्यापार भारतीय समाज को पूर्णतः छिन्न-भिन्न करने में लगे हुए हैं। इन परिस्थितियों में असहाय एवं निष्क्रिय होकर बैठे रहना संभव नहीं है बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि उन सभी प्रतीकों को पुनर्जीवित किया जाए जिन्होंने ''प्रेम गाथाओं'' और ''प्रेम के ढाई अक्षर'' द्वारा मानव समाज को एक-दूसरे से जोड़ रखा था। जिनका मानना था कि देशवासियों, यहाँ पर जन्म लेने वालों, यहाँ पर निवास करने वालों, यहाँ की नदियों का पानी पीने वालों, यहाँ की मिट्टी में उपजे अन्न से अपना पेट भरने वालों को इस बात का आभास कराया जाए कि उनका धर्म, उनकी भाषा और क्षेत्र भिन्न हो सकते हैं परन्तु माता और मातृभूमि से उनका संबंध इस संसार के सृजनहार और पालनहार की इच्छा का परिणाम है। इसी

क्रम में यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि जिस बात से ईश्वर प्रसन्न हो, उसे स्वीकार कर लेने और अपना लेने में ही मानव हित है।

भारत में एक दूसरे को जोड़ने वालों का यदि उल्लेख किया जाए तो उनके नाम एवं कार्यों को संग्रहित करने में देर नहीं लगेगी, परन्तु यदि किसी व्यक्ति से मानव समाज को विभाजित करने वालों के नाम पूछे जाएँ तो उसे उनके नाम स्मरण करने में और बताने में बड़ी कठिनाई होगी।

इन सबके बावजूद आज मनुष्यों के बीच दूरी, टकराव, हिंसा तथा उपद्रव बार-बार दृष्टिगोचर को क्यों हो रहा है? इसका साधारण सा उत्तर यही है कि हम भूल गए हैं कि हमें क्या याद रखना चाहिए। इस समय हमें ईशदूतों, सूफ़ी-संतों और ऋषि-मुनियों के त्याग, तपस्या, समर्पण और सेवाभाव को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। उनकी शिक्षाओं तथा उनके उपदेशों को एक बार फिर लोगों तक पहुँचाया जाना चाहिए।

इसी चिंतन और विचारधारा के आलोक में **'ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन'** की स्थापना की गई है। हज़रत अमीर ख़ुसरो मध्यकालीन भारत के एक ऐसे लोकप्रिय, मनमोहक एवं सार्वलौकिक व्यक्तित्व हैं, जिन्हें शताब्दियों के पश्चात भी याद रखा गया है और सदैव याद रखा जाएगा। वह सूफ़ी भी थे और सिपाही भी, कवि भी थे और संगीतकार भी, इतिहासकार भी थे और इतिहास बनाने वाले भी। उनके व्यक्तित्व की सार्वभौमिकता और विशिष्टता ने उन्हें न केवल विभिन्न गुणों का वाहक बनाया था अपितु बहुआयामी विशेषताओं से परिपूर्ण किया था। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के बड़े बड़े नामियों के निशान मिट गए परन्तु हज़रत अमीर ख़ुसरो आज भी न केवल हमारे इतिहास का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत के ध्वजवाहक भी हैं। वे लोगों के हृदय में इस प्रकार रचे-बसे हैं कि हर्षोल्लास हो अथवा दुःख एवं पीड़ा के क्षण, हज़रत अमीर ख़ुसरो का नाम तथा उनकी रचनाएँ सदैव अपनी प्रासंगिकता के साथ उपस्थित रहती हैं।

इस गुत्थी को तो मनोवैज्ञानिक ही सुलझा सकते हैं कि हज़रत अमीर ख़ुसरो ने अपनी विभिन्न दरबारी एवं ख़ानक़ाही गतिविधियों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया। यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ख़ुसरो ने यह संतुलन अपने

व्यक्तित्व के खरेपन के साथ स्थापित किया था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सहभागिता और भूमिका खुली पुस्तक की भांति सब पर स्पष्ट थी। सत्यवादिता से परिपूर्ण चिंतन हज़रत अमीर ख़ुसरो के व्यक्तित्व को हमारे समक्ष आदर्श के रूप में उपस्थित करता है।

इस भारतीय तुर्क का देश-प्रेम न केवल आदर्श है, बल्कि स्पृहणीय भी है। ख़ुसरो की दृष्टि में भारत की धरती अदन का स्वर्ग है। यहाँ के लोग प्रत्येक रंग व रूप में उन्हें प्रिय हैं। यहाँ के दरबारों के समक्ष ईरान, तूरान और ख़ुरासान के दरबार फीके दिखाई देते हैं। यहाँ के लोग कृषि, उद्योग, व्यापार के साथ साथ विज्ञान एवं साहित्य की प्रत्येक शाखा, कला के प्रत्येक क्षेत्र और सैन्य प्रशिक्षण के प्रत्येक रूप में अद्भुत एवं अनूठे हैं। एक कट्टर एवं परम्परावादी मुसलमान होने के बावजूद भी उन्हें भारतवासियों का एकेश्वरवादी संप्रदाय एवं विचारधारा प्रिय है। वे कहते हैं कि ''यद्यपि भारतवासी हमारे जैसा धर्म नहीं रखते, परन्तु उनकी अधिकतर मान्यताएं हमारे जैसी हैं।''

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम भारतवासी, भारत की प्रत्येक परंपरा को, चाहे वह धार्मिक हो अथवा सांस्कृतिक, सभ्यतागत हो अथवा भाषायी, अकादमिक एवं शास्त्रीय हो अथवा साहित्यिक, उसे हज़रत अमीर ख़ुसरो की तरह देखें, अपनाएं और उसके लिए अपने आप को समर्पित कर दें। हज़रत अमीर ख़ुसरो, जिनकी माता भारतीय थीं और पिता तुर्क, एक ऐसे भारतीय हैं जो न केवल भारत की महानता के तराने गाते हैं बल्कि अपने आप को इस मिट्टी का इस प्रकार अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं जैसे यह मिट्टी ही सब कुछ हो। देश की मिट्टी से इस लगाव और प्रेम को अल्ताफ़ हुसैन हाली ने इस प्रकार वर्णित किया है:

तेरी इक मुश्त-ए-ख़ाक के बदले
लूँ न हर्गिज़ अगर बहिश्त मिले

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन सभी प्रकार के भेदभाव और वैमनस्य से ऊपर उठकर देशभक्ति, मानव प्रेम तथा प्रकृति से निकटता को अंगीकार करके सर्वधर्म सहिष्णु

और प्रगति की ओर उन्मुख समाज के निर्माण के लिए प्रयासरत है। शैख़ इब्राहीम ज़ौक़ के अनुसार:

गुल्हाए-रंगा-रंग से है ज़ीनत-ए-चमन
ऐ 'ज़ौक़' इस जहाँ को है ज़ेब इख़्तेलाफ़ से

सदस्य, बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स

प्रो. अख़्तरुल वासे
रोहित खेड़ा

सिराजुद्दीन क़ुरैशी
रंजन मुखर्जी

ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की प्रकाशित पुस्तकें: एक संक्षिप्त परिचय

हिंदुस्तान की शरई हैसियत

हिंदुस्तान और इस्लाम का रिश्ता उतना ही पुराना है जितना हज़रत आदम (अ.स.) का स्वर्ग से धरती पर आगमन। क्योंकि हज़रत आदम (अ.स.) पहले इंसान भी थे और पैग़म्बर भी। मुसलमानों की मान्यता के अनुसार वह हिंदुस्तान में ही उतारे गये थे, इसलिए हिंदुस्तान के मुसलमानों का यह मादर-ए-वतन (मातृभूमि) ही नहीं बल्कि पिदरी वतन (पैतृक भूमि) भी है। यही वह भूमि है जहाँ से पैगंबर मुहम्मद (सल्ल.) को ठंडी हवाएँ आती थीं। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की पहल पर लिखी गई पुस्तक "हिंदुस्तान की शरई हैसियत" में डॉ ज़फ़र दारिक क़ासमी ने जिन बहसों और मुद्दों पर चर्चा की है, वह निश्चित रूप से आज की ज़रूरत हैं।

उर्दू की तरवीज-ओ-इशाअत में ग़ैर-मुस्लिमों की ख़िद्मात

(उर्दू के प्रचार व प्रसार में गैर-मुस्लिमों की सेवाएं)

यह बात जग-ज़ाहिर है कि भाषाओं का कोई धर्म नहीं होता लेकिन हर धर्म को भाषाओं की ज़रूरत होती है। इस किताब की विशेषता यह है कि इसमें प्रारम्भ से लेकर वर्तमान काल तक के उर्दू के अधिकांश गैर-मुस्लिम लेखकों और कवियों का उल्लेख किया गया है। पुस्तक के लेखक तालीफ़ हैदर ने इस बात का पूरा प्रयास किया है कि उन लेखकों का उल्लेख भी कर लिया जाए जिन्हें इतिहास में या तो भुला दिया गया है या जिनकी विद्वतापूर्ण सेवाओं के बारे में हम बहुत कम जानते हैं।

आत्मवृत्तांत

यह पुस्तक शेखुल-इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी की प्रसिद्ध आत्मकथा "नक़्श-ए-हयात" का हिंदी अनुवाद है। यह सिर्फ़ एक किताब नहीं बल्कि हिंदुस्तान के स्वतंत्रता आंदोलन में दारुल उलूम देवबंद के विद्वानों के

संघर्ष का एक प्रामाणिक और विश्वसनीय दस्तावेज़ है। हज़रत शेख़ुल-इस्लाम ने जमीयत उलेमा-ए-हिंद और स्वाधीनता संग्राम के राष्ट्रीय नेताओं की स्थितियों और उपलब्धियों को अपनी क़लम से रोशन कर दिया है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन के लिए इस बहुमूल्य पुस्तक का आसान एवं सरल हिंदी अनुवाद इंडो-अरब मल्टीलिंगुअल प्राइवेट लिमिटेड के जनाब अनवर क़ासमी द्वारा किया गया है।

हिंदी साहित्य में मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान

हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में मुस्लिम लेखकों और कवियों का योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। यह पुस्तक जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हिंदी विभाग में असिस्टैंट प्रोफ़ेसर डॉ आसिफ़ उमर द्वारा लिखी गई है। जिससे यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आता है कि हिन्दी और उर्दू हमारी साझी सभ्यता के प्रतीक हैं जिनमें धर्म और आस्था का कोई भेद नहीं है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित उनकी हिंदी पुस्तक का उर्दू में अनुवाद प्रसिद्ध लेखक और अनुवादक जनाब फ़ारुक़ अर्गली साहब ने किया है।

मेरे वतन की ख़ुशबू

यह पुस्तक उर्दू शायरात (कवयित्रियों) के अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। अज़रा नक़वी की यह पुस्तक महिलाओं के संबंध में अपने विषय की विशिष्टता के मामले में एक नया आयाम है और ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की नई पहल भी है।

हिंदुस्तान उर्दू शायरी के हवाले से

भारतीय समाज भाईचारे और एकता और व्यापकता के उज्ज्वल इतिहास का एक चमकदार सूचकांक है। प्रेम और एकता की यह भावना जब उर्दू कविता में ढ़लती है तो देशभक्ति की व्यापक अवधारणा को आकार देती है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन की यह पुस्तक जिसे डा. उमैर मंज़र ने सम्पादित किया है, इस मायने में क़ाबिले-तारीफ़ है कि इसने उस भावना और दृष्टिकोण को इतिहास

की गोद से निकालकर आज फिर से सामने ला दिया है, जिसकी आज अत्यंत आवश्यकता है।

मुहम्मद दाराशिकोह

दारा शिकोह मुग़लकाल के एक सदाबहार और बेमिसाल व्यक्तित्व का नाम है। वह एक महान विद्वान, विचारक और बुद्धिजीवी भी थे। उन्होंने सरकार और साम्राज्य के साथ एक विद्वान, एक सूफ़ी, एक लेखक और एक विचारक का जीवन व्यतीत किया। रवादारी की अपनी परंपरा में उन्होंने हिंदुस्तान के भीतर सामाजिक सद्भाव के लिए नई नींव तलाश कीं। दारा शिकोह के राजनीतिक और सामाजिक विचार अब सिर्फ़ इतिहास का हिस्सा मात्र रह गए हैं, लेकिन डॉ मुफ़्ती मुहम्मद मुश्ताक तिजारवी द्वारा लिखित यह पुस्तक देश के वर्तमान परिदृश्य में देश की अधिकांश सामाजिक समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है।

मुस्लिम उल्मा का मुताला-ए-हिंदू धर्म

(मुस्लिम उल्मा (विद्वानों) का हिंदू धर्म का अध्ययन)

मुस्लिम उल्मा का मुताला-ए-हिंदू धर्म नामी इस पुस्तक के लेखक डॉ ज़फ़र दारिक क़ासमी ने इस पुस्तक में जिन बातों को प्रस्तुत किया है वो निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह पुस्तक मौजूदा दौर में विभिन्न धर्मों के अध्ययन की आवश्यकता के फ़ायदों की व्याख्या करती है। पुस्तक इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि धर्मों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना क्यों महत्वपूर्ण है। ख़ुसरो फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में इस बात को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि समाज में सद्भाव और भाईचारे का प्रचार व प्रसार तभी संभव है जब हम विभिन्न धर्मों के अध्ययन और समझ को पूरी तरह से आगे बढ़ाएंगे।